कर्मभूमि

वर्ष ९ अंक २०
मई २०१६

हिन्दी यू.एस.ए.
भारत यात्रा वृतांत

पन्द्रहवें हिन्दी महोत्सव के अवसर पर

हिन्दी USA ®

१५वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष में

हिन्दी यू.एस.ए. को हार्दिक बधाई

खुशी के लिए नहीं, खुशी से जीओ!

हमारे संकल्प में, विकल्प नहीं होना चाहिए!

देव नहीं मानव बनो, भगवान नहीं इंसान बनो!

हम समझते कम, समझाते ज़्यादा हैं, इसलिए सुलझते कम, उलझते ज़्यादा हैं!

RAYANSH, RICHA, DR. RAHUL BHARGAVA, HONG KONG
RUCHI, MEENAKSHI & RAKESH BHARGAVA, ROSLYN HTS. NY

www.hindiusa.org

1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) - 856-625-4335

रचिता सिंह (शिक्षण तथा प्रशिक्षण संयोजिका) - 609-248-5966

राज मित्तल (धनराशि संयोजक) - 732-423-4619

माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) - 718-414-5429

सुशील अग्रवाल (पत्रिका 'कर्मभूमि' संयोजक) - 908-361-0220

शिक्षण समिति

नैना रैना - कनिष्ठा १ स्तर

जयश्री कलवचवाला - कनिष्ठा २ स्तर

मोनिका गुप्ता, भाविका चुग - प्रथमा १ स्तर

कविता प्रसाद, सन्जोत ताटके - प्रथमा २ स्तर

अनुभा अग्रवाल, चेतना मालारप्पू - मध्यमा १ स्तर

रचिता सिंह - मध्यमा २ स्तर

सुशील अग्रवाल - उच्च स्तर १, मध्यमा ३ स्तर

अनुजा काबरा - उच्च स्तर २

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडिसन: माणक काबरा (718-414-5429)
सुनील दुबे (732-570-3258)
साऊथ ब्रंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733)
मॉन्टगोमरी: अद्वैत/अरुणधति तारे (609-651-8775)
पिस्कैटवे: सौरभ उदेशी (848-205-1535)
ईस्ट ब्रंस्विक: मायनो मुर्मु (732-698-0118)
वुडब्रिज: शिव आर्य (908-812-1253)
जर्सी सिटी: मनोज सिंह (201-233-5835)
प्लेंसबोरो: गुलशन मिर्ग (609-451-0126)
लॉरेंसविल: योगिता मोदी (609-785-1604)
ब्रिजवॉटर: सुरुचि नायर (908-393-5259)
चैरी हिल: देवेंद्र सिंह (609-248-5966)
चैस्टरफील्ड: शिप्रा सूद (609-920-0177)
होमडेल: निनिता पटेल (732-365-2874)
मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)
विल्टन: अमित अग्रवाल (630-401-0690)
चेतना मालारप्पू (475-999-8705)
नॉर्थ ब्रंस्विक: गीता टंडन (732-789-8036)
स्टैमफर्ड: पंकज झा (732-930-3162)
एलिकोट सिटी: मुरली तुल्शियान (201-892-7898)

अन्य समितियाँ

अमित खरे – वेब साइट

अद्वैत तारे – वीडियो

सुनीता गुलाटी – पुस्तक वितरण

हम को सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

संपादकीय

हिंदी यू.एस.ए. इस वर्ष अपनी स्थापना की पन्द्रहवीं वर्षगाँठ मना रहा है। वर्ष २००१ में इसकी स्थापना से अब तक का यह मार्ग इतना सुलभ नहीं था। इसके रास्ते में कई उतार चढ़ाव, बाधाएं तथा रुकावटें आती रहीं और उन्हें चुनौती समझ कर उनका मुकाबला करते हुए हम आगे बढ़ते रहे। परिणाम स्वरूप, ४ छात्रों की एक छोटी पाठशाला से यह संस्था अब विस्तृत होकर ४००० छात्रों की एक विश्व-विख्यात संस्था बन चुकी है जिसके अंतर्गत न्यू-जर्सी, मेरीलैंड, तथा कनेक्टिकट राज्यों में १८ हिंदी पाठशालाएं चल रही हैं। इस सफलता के पीछे सबसे बड़ा हाथ हमारे स्वयं-सेवकों एवं अध्यापकों का संकल्प एवं समर्पण ही है।

अत्यंत हर्ष के साथ कर्मभूमि का यह वर्ष २०१६ का 'पन्द्रहवीं वर्षगांठ विशेषांक' आप सभी को समर्पित है। इस शैक्षणिक सत्र के दौरान हिंदी यू.एस.ए. ने बहुत सी उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। अन्य वर्षों की तुलना में इस वर्ष हिंदी पढ़ने आने वाले छात्रों की संख्या में ८% वृद्धि हुई है जो इस संस्था की बहुमुखी लोकप्रियता को दर्शाती है। मेरीलैंड राज्य के एलिकोट सिटी में संस्था द्वारा एक नयी हिंदी पाठशाला आरंभ की गयी जिसमें पहले वर्ष में ही आशा से अधिक छात्रों ने पंजीकरण करवाया। इसी सत्र के दौरान, १२ छात्रों का एक दल दो अध्यापकों के संरक्षण में भारत यात्रा पर गया। १५ दिन की इस यात्रा के दौरान इन्होंने भारत के ५ राज्यों का भ्रमण किया तथा वहां के प्रमुख स्थानों का भ्रमण कर भारत की संस्कृति, इतिहास एवं संस्कारों का अवलोकन किया। इस यात्रा से हिंदी यू.एस.ए. को भारत में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त हुई तथा संस्था के छात्रों ने अपने व्यवहार, संस्कारों, एवं संस्कृति का प्रदर्शन कर सभी का हृदय जीतकर इस संस्था को अत्यंत गरिमा प्रदान की। भारत भ्रमण में गए सभी छात्रों ने अपने व्यक्तिगत संस्मरण इस अंक में अपनी रोचक भाषा में लिखें हैं। कृपया उन्हें पढ़ें तथा भारत के प्रति अपना सामान्य ज्ञान बच्चों की दृष्टि से कैसा हैं, इसका आंकलन करें।

कर्मभूमि का यह अंक अपने आप में एक विशेष अंक है। इसमें प्रकाशित अधिकांश रचनाएँ हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं युवा स्वयंसेवकों द्वारा ही लिखे गई हैं। जिस देश की भाषा, भोजन और पहनावा स्वदेशी नहीं होता है, वहाँ स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करना कठिन ही नहीं, असंभव है, इसलिए हिंदी भाषा को उसके शुद्ध में बचाना बहुत ही आवश्यक है, 'हमारे प्रतीक' लेख में आप इसे विस्तार से पढ़ें। भारतीय संस्कृति किस तरह सुदृढ़ आधारों, परम्पराओं, मान्यताओं, और दर्शन के स्तंभों पर खड़ी है, एक अत्यंत प्रेरणादायक लेख सुश्री अगमा चौहान द्वारा लिखा इस अंक में अवश्य पढ़ें। भारत यात्रा के संस्मरण सभी छात्रों ने अपने अनुभव के अधर पर अपनी कलम से अपने शब्दों में उतारा है। सभी के संस्मरण पढ़ते समय मन में उत्कंठा एवं जिज्ञासा बनी रहती है। कृपया सभी बच्चों के भारत भ्रमण के संस्मरण अवश्य पढ़ें। इनमें आपको सम्पूर्ण भारत के दर्शन अकस्मात् ही हो जायेंगे। 'हमारे सपने' और 'हमारे व्यवसाय' लेखों में नन्हे-नन्हे बच्चों ने भविष्य में वे क्या बनना चाहते हैं, अपनी अभिलाषाएं, इस लेख में उन्हीं की हस्त लिखित लिपि में संकलित की गयी हैं।

'मेरे आदर्श', बच्चों का एक बहुत ही रोचक संकलन है जिसमें ये बच्चे अपने जीवन में किसी न किसी से प्रभावित हुए और वह व्यक्ति या घटना उनके जीवन का एक आदर्श बन गयी। हिंदी यू.एस.ए. की इस पन्द्रहवीं वर्षगांठ पर पत्रिका के अधिकांश लेख हमारे नन्हे मुन्ने छात्रों के द्वारा ही लिखे गए हैं और उन्हें ही पत्रिका में विशिष्ट स्थान दिया गया है ताकि इस सभी छात्रों का उत्साहवर्धन होता रहे और भविष्य में उन्हें सतत लिखने की प्रेरणा मिलती रहें।

पत्रिका की मुद्रित प्रतियों पर आये खर्च का एक बड़ा हिस्सा हमारे समर्थकों द्वारा पत्रिका में अपना विज्ञापन देकर पूरा किया गया है। उनकी इस वित्तीय सहायता हेतु हिंदी यू.एस.ए. सभी का आभारी है। सभी पाठकों से अनुरोध है की पत्रिका पढ़ने के बाद अपनी प्रतिक्रियाएं, आलोचना, समालोचना अवश्य भेजें। इनकी हमें प्रतीक्षा रहेगी। आपके सुझाव बच्चों एवं बड़ों के लिए अत्यंत प्रेरक सिद्ध होंगे तथा उन्हीं से ही हम भविष्य में पत्रिका में सुधार कर पाएंगे। जो अभिभावक या पाठक इस संस्था में स्वयंसेवक अथवा शिक्षक/शिक्षिका के रूप में अपना सहयोग देना चाहते हैं, कृपया इसके सहभागी बने तथा अपनी क्षमतानुसार भाषा, संस्कृति और समाज के उत्थान को समर्पित अथक प्रयासों के दैवीय कार्य में अपना योगदान अवश्य दें। इस यज्ञ की सम्पूर्णता में आपका सहयोग अतुलनीय तथा सराहनीय होगा।

धन्यवाद !!

हिन्दी USA
HINDI USA
वयंसेवक अभिनंदन मारोह

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। निरंतर १५ वर्षों से हिन्दी के प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने मोती समान स्वयंसेवियों को एक धागे में पिरोकर अति सुंदर माला का रूप दिया है। इस चित्र में आप हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं, जो संस्था के मजबूत स्तम्भ हैं, को देख सकते हैं। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावलियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। न्यूजर्सी में हिन्दी यू.एस.ए. की १८ पाठशालाएँ चलती हैं। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। विभिन्न ९ स्तरों में हिन्दी की कक्षाएँ चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है।

न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। यदि आप उत्तरी अमेरिका के किसी राज्य में हिन्दी पाठशाला खोलना चाहते हैं तो आप हमें सम्पर्क कीजिए। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को संजोय रखने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का सदस्य बनें।

कर्मभूमि

०९ - हमारे प्रतीक
१० - हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम
१६ - मधुर स्मृति
१७ - गुरुकुल एकेडमी शिक्षक-शिक्षिकाएँ
१८ - मेरी कविताएँ
२० - हिंदी यू.एस.ए. में अब तक...
२२ - भारतीय संस्कृति
२४ - जीवन - एक चेष्टा!
२५ - हिंदी नव-वर्ष
२६ - स्टर्लिंग हिन्दी पाठशाला
२७ - हिन्दी यू.एस.ए. के साथ का सफर, दिल चाहता है
२८ - माँ जब मैं माँ बनी
२९ - छात्र-छात्राएँ, मेरा प्रिय त्योहार – होली
३० - हिंदी यू.एस.ए. भारत-यात्रा
५४ - लेकिन
५५ - गरीबी कैसे मिटाई जाए?
५६ - मैं और मेरी बहन
५७ - हिंदी का ज्ञान
५८ - अध्यापक-अध्यापिकाओं...
५९ - मेरी भारत यात्रा
६१ - तिल के लड्डू, क्रैबी ...
६२ - हिन्दी यू.एस.ए. में मेरा अनुभव
६२ - हिन्दी सीखने के लाभ, महात्मा गाँधी
६३ - अक्षरों से वाक्य तक मेरा सफर, मांझी
६४ - Boys Scout - एक स्मरणीय यात्रा
६५ - हिन्दी का अनुभव, मेरा हिन्दी का अनुभव और विचार
६६ - मेरी भारत यात्रा, भाषा, देश और संस्कृति
६७ - हिंदी और मैं, समय, मेरी पसंद
६८ - विद्यार्थियों के विचार
७० - मेरे लेख
७१ - मेरी हिंदी यू.एस.ए. की यात्रा
७२ - रूबिक्स क्यूब
७३ - लेह लद्दाख - स्वर्ग से भी सुन्दर
७४ - मेरे आदर्श
७६ - भारत का राष्ट्रीय खेल
७७ - एक स्मरण...
७८ - भारत के विभिन्न प्रांतों में...

संरक्षक

देवेंद्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

रचिता सिंह

माणक काबरा

राज मित्तल

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

Hindi USA
70 Homestead Drive
Pemberton, NJ 08068

८१ - मधुबनी चित्रकला
८२ - कनिष्ठ १ में मनाये गए त्योहार
८३ - खेल-खेल में अभ्यास
८४ - स्वामी विवेकानंद कौन थे?
८५ - हिन्दी स्कूल क्यों जरूरी है
८६ - उत्तरजीविता
८८ - एडिसन पाठशाला उच्च स्तर-१
९३ - पेंगुइन रिपोर्ट
९४ - पिस्कैटवे पाठशाला उच्च स्तर-२
९६-१२२ पाठशालाओं के लेख

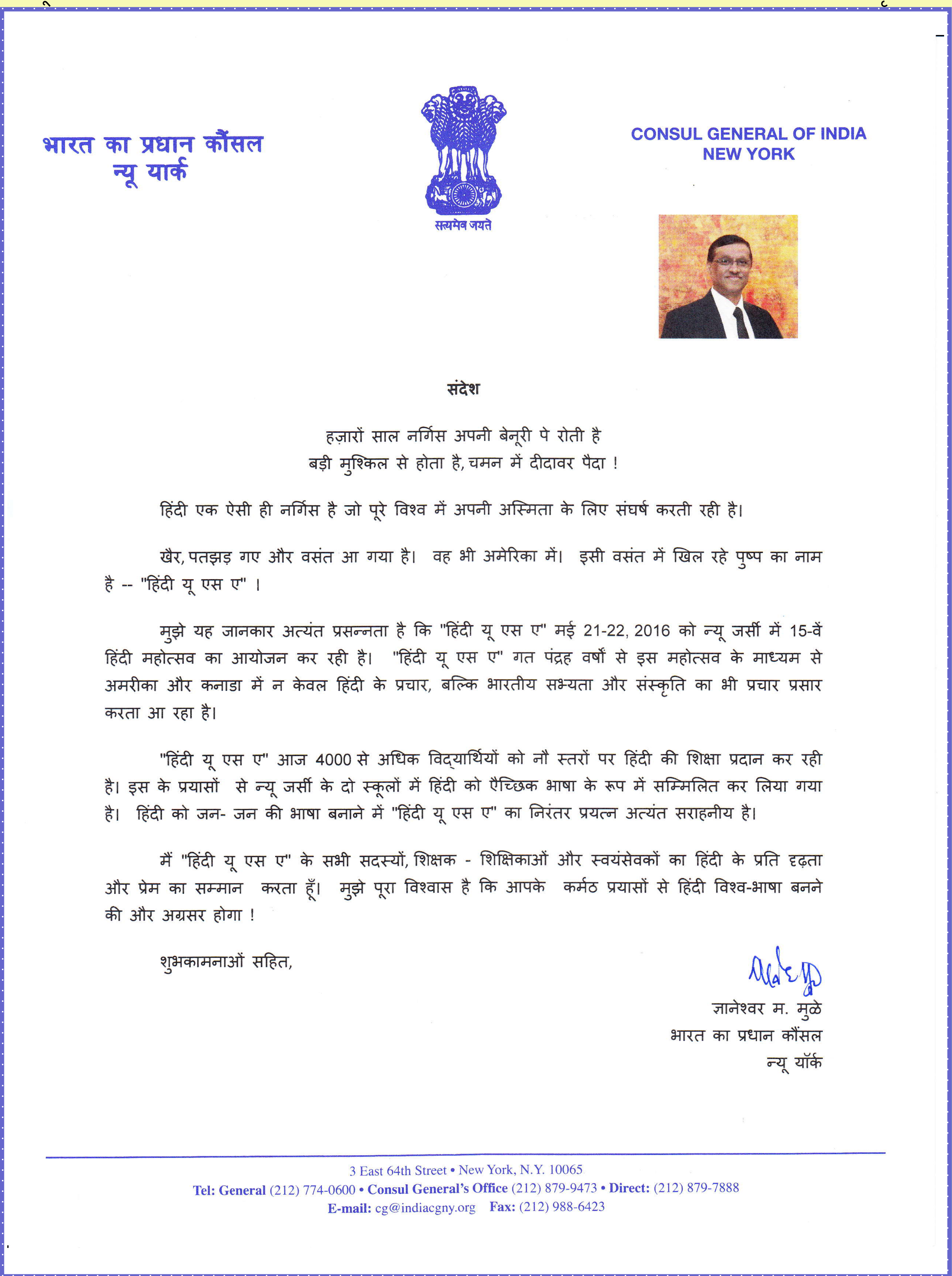

भारत का प्रधान कौंसल
न्यू यार्क

सत्यमेव जयते

CONSUL GENERAL OF INDIA
NEW YORK

संदेश

हज़ारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है, चमन में दीदावर पैदा !

हिंदी एक ऐसी ही नर्गिस है जो पूरे विश्व में अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करती रही है।

खैर, पतझड़ गए और वसंत आ गया है। वह भी अमेरिका में। इसी वसंत में खिल रहे पुष्प का नाम है -- "हिंदी यू एस ए" ।

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता है कि "हिंदी यू एस ए" मई 21-22, 2016 को न्यू जर्सी में 15-वें हिंदी महोत्सव का आयोजन कर रही है। "हिंदी यू एस ए" गत पंद्रह वर्षों से इस महोत्सव के माध्यम से अमरीका और कनाडा में न केवल हिंदी के प्रचार, बल्कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति का भी प्रचार प्रसार करता आ रहा है।

"हिंदी यू एस ए" आज 4000 से अधिक विद्यार्थियों को नौ स्तरों पर हिंदी की शिक्षा प्रदान कर रही है। इस के प्रयासों से न्यू जर्सी के दो स्कूलों में हिंदी को ऐच्छिक भाषा के रूप में सम्मिलित कर लिया गया है। हिंदी को जन- जन की भाषा बनाने में "हिंदी यू एस ए" का निरंतर प्रयत्न अत्यंत सराहनीय है।

मैं "हिंदी यू एस ए" के सभी सदस्यों, शिक्षक - शिक्षिकाओं और स्वयंसेवकों का हिंदी के प्रति दृढ़ता और प्रेम का सम्मान करता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके कर्मठ प्रयासों से हिंदी विश्व-भाषा बनने की और अग्रसर होगा !

शुभकामनाओं सहित,

ज्ञानेश्वर म. मुळे
भारत का प्रधान कौंसल
न्यू यॉर्क

3 East 64th Street • New York, N.Y. 10065
Tel: General (212) 774-0600 • **Consul General's Office** (212) 879-9473 • **Direct:** (212) 879-7888
E-mail: cg@indiacgny.org **Fax:** (212) 988-6423

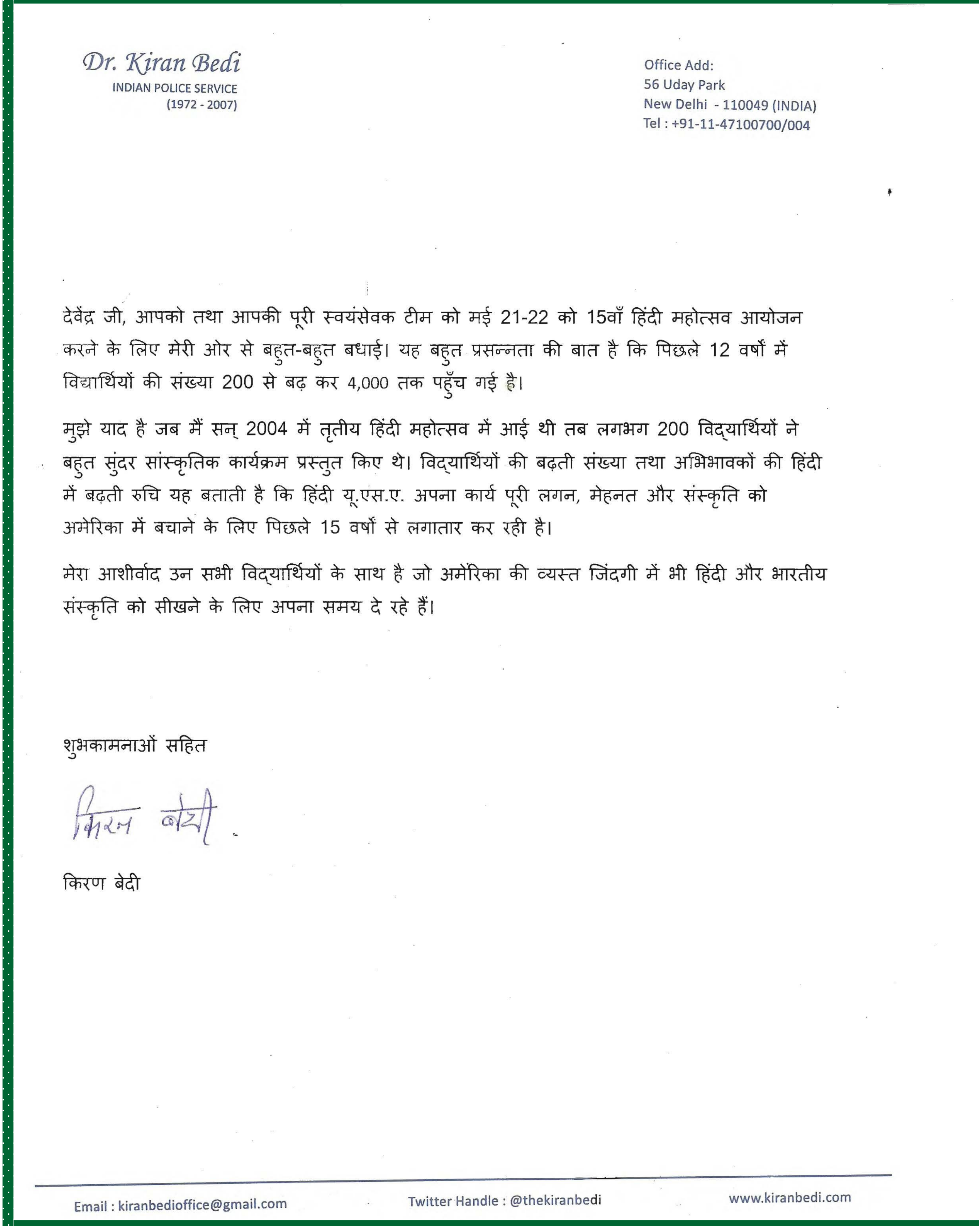

Dr. Kiran Bedi
INDIAN POLICE SERVICE
(1972 - 2007)

Office Add:
56 Uday Park
New Delhi - 110049 (INDIA)
Tel : +91-11-47100700/004

देवेंद्र जी, आपको तथा आपकी पूरी स्वयंसेवक टीम को मई 21-22 को 15वाँ हिंदी महोत्सव आयोजन करने के लिए मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई। यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि पिछले 12 वर्षों में विद्यार्थियों की संख्या 200 से बढ़ कर 4,000 तक पहुँच गई है।

मुझे याद है जब मैं सन् 2004 में तृतीय हिंदी महोत्सव में आई थी तब लगभग 200 विद्यार्थियों ने बहुत सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए थे। विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या तथा अभिभावकों की हिंदी में बढ़ती रुचि यह बताती है कि हिंदी यू.एस.ए. अपना कार्य पूरी लगन, मेहनत और संस्कृति को अमेरिका में बचाने के लिए पिछले 15 वर्षों से लगातार कर रही है।

मेरा आशीर्वाद उन सभी विद्यार्थियों के साथ है जो अमेरिका की व्यस्त जिंदगी में भी हिंदी और भारतीय संस्कृति को सीखने के लिए अपना समय दे रहे हैं।

शुभकामनाओं सहित

किरन बेदी

किरण बेदी

Email : kiranbedioffice@gmail.com Twitter Handle : @thekiranbedi www.kiranbedi.com

हमारे प्रतीक

देवेंद्र सिंह

हम भारतीय लोग अपने चिन्हों या प्रतीकों की यथाउचित रक्षा और सम्मान के प्रति सजग नहीं हैं। केवल दिखावटी प्रेम करने या मौसमी उत्सव का आनंद लेने से परम्पराएँ नहीं बचा करतीं। उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी तक अभंजित और प्रासंगिक रखने के लिए उनके वैज्ञानिक और सांस्कृतिक गुणों को पहचान कर उन्हें अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना आवश्यक है। इस संसार में उत्तम और योग्यतम वस्तु या विचार अवश्य जीवित रहेंगे, परंतु यदि हम उन्हें बचाने का सकारात्मक प्रयास नहीं करेंगे, तो वे शायद उस अवस्था या सिद्धांत में उपस्थित नहीं रहेंगे जिनमें हम चाहते हैं। 'योग' एक व्यायाम, 'आयुर्वेद' एक over the counter औषधि और हमारी भाषा classical अथवा dead (प्राचीनकाल सम्बंधी) की श्रेणी में सम्मिलित हो जाएँगे।

हिंदी भाषा हमारी संस्कृति का एक सुदृढ़ एवं उपयोगी प्रतीक है। इसमें हमारी संस्कृति की छवियाँ प्रतिबिम्बित होती हैं। हमारी लोक कथाएँ, त्योहार, संगीत, परम्पराएँ और यहाँ तक प्रेम अभिव्यक्ति भी भाषा से प्रेरित होती है। अंग्रेजों की गुलामी के काल में हमारी भाषा और शिक्षा पद्धति को सुनियोजित षड्यंत्र से बदलने का सफल प्रयास किया गया और उसके परिणाम हमारे सामने हैं। अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने स्वदेशी मानसिकता को पूरी तरह से उखाड़ दिया। भारत की वर्तमान राजनैतिक, शैक्षिक और आर्थिक व्यवस्था इस दशा को पूर्णतया इंगित करते हैं।

जिस देश की भाषा, भोजन और पहनावा स्वदेशी नहीं होता, वहाँ स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करना कठिन ही नहीं, नामुमकिन है। इसलिए हिंदी भाषा को उसके शुद्ध रूप में बचाना बहुत आवश्यक है। मैं कुछ शब्द दे रहा हूँ जिनका अंग्रेजी भाषा में कोई पर्याय नहीं है। इसलिए इन शब्दों का अंग्रेजी में कभी भी अनुवाद न करें:

- छौंक लगाना - इसे fry करना न कहें
- रोटी, परांठा - इसे bread या tortilla न कहें
- योगाभ्यास - इसे physical exercise या gymnastic न कहें
- चूड़ीदार पाजामा - इसे pant न कहें
- लंहगा - इसे skirt न कहें

इसी तरह सैकड़ों शब्द हैं जिनका अंग्रेजी में अनुवाद करने से वस्तु या प्रक्रिया की सही पहचान नहीं होगी और साथ ही हमारे स्वदेशी शब्द लुप्त होते जाएँगे। यदि हम अपनी भाषा के शब्दों का अनुवाद दूसरी भाषा में नहीं होने देंगे तो दूसरी भाषा को हमारे शब्द अपने शब्दकोष में मौलिक रूप में ही लेने पड़ेंगे। हमारे पूर्वजों ने अपनी संस्कृति, सभ्यता, भाषा और जीवन शैली को बचाने के लिए यथासंभव संघर्ष किया। यदि वे ऐसा नहीं करते तो कदापि हम हिंदू संस्कृति के परिवेश में बड़े नहीं हुए होते। अब यह हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम युवा पीढ़ी को हमारी भाषा और संस्कृति हस्तांतरित करने में अपने कर्तव्य का पालन करें। हिंदी यू.एस.ए. पिछले १५ वर्षों से हिंदी भाषा को युवा पीढ़ी में बढ़ावा देने के लिए कार्यरत है। इस वर्ष १५वें हिंदी महोत्सव के अवसर पर उन सभी लोगों का धन्यवाद जिनके अथक और हार्दिक प्रयासों के फलस्वरूप हिंदी भाषा अमेरिका में जीवित है।

सत्र २०१५-१६

हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम

हिंदी यू.एस.ए. का प्रत्येक सत्र वर्ष के सितम्बर माह से आरम्भ होकर जून माह तक चलता है। वर्ष के इन दस माहों में हिंदी यू.एस.ए. के विभिन्न कार्यक्रम चलते रहते हैं और सभी कार्यकर्ता अत्यधिक व्यस्त रहते हैं।

मासिक सभाएँ - सभी पाठशालाओं को एक दूसरे के सम्पर्क में रखने तथा कार्य में आने वाली कठिनाइयों के समाधान और हिंदी यू.एस.ए. के कार्यक्रमों को और आकर्षक बनाने के लिए हिंदी यू.एस.ए. समय-समय पर मासिक सभाओं का आयोजन करता है। इन सभाओं में संस्था की विभिन्न नीतियों, भविष्य में होने वाले कार्यक्रमों तथा पथ में आने वाली कठिनाइयों के समाधान ढूँढे जाते हैं। इस वर्ष हिंदी यू.एस.ए. ने ८ मासिक सभाओं का आयोजन किया। आइए, सितम्बर माह से जून तक के विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी लेते हैं।

सितम्बर माह - इस वर्ष सितम्बर का महीना हर वर्ष की तरह अत्यधिक व्यस्त रहा, क्योंकि इसी माह सभी पाठशालाओं का नया सत्र आरम्भ होता है। सभी पाठशाला संचालक विद्यार्थियों के पंजीकरण, अभिभावकों को विभिन्न जानकारी देने, पुस्तकों के वितरण, शिक्षक सामग्री के वितरण आदि में अत्यधिक व्यस्त रहे। इसी माह के तीसरे सप्ताह में हमने शिक्षक प्रशिक्षण भी आरम्भ कर दिया था, जिससे कुछ शिक्षक-शिक्षिकाएँ और स्तर संचालिकाएँ साप्ताहांत में भी शिक्षक प्रशिक्षण शिविर में व्यस्त रहे।

अक्टूबर माह - इस माह में मुख्य रूप से प्रारंभिक स्तरों के प्रशिक्षण का आयोजन होता है। हिंदी यू.एस.ए. का मानना है कि विद्यार्थी की बुनियादी शिक्षा उसकी माध्यमिक और उच्च शिक्षा से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है। प्रारंभिक स्तरों में अधिकांशतः नए शिक्षक-शिक्षिकाओं का हिंदी यू.एस.ए. में प्रवेश होता है, अतः इन स्तरों का प्रशिक्षण भी अधिक विस्तारपूर्वक किया जाता है। इसी माह में हिंदी यू.एस.ए. न्यू जर्सी के दशहरा उत्सव के मेले में हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी तथा स्टॉल का आयोजन भी करता है। इस स्टॉल का प्रयोजन समाज में हिंदी भाषा के प्रति गर्व की भावना तथा जागरूकता जागृत करना है।

नवम्बर माह - नवम्बर माह में शिक्षण कार्य पर्याप्त तेजी पकड़ चुका होता है और विद्यार्थियों का नवीन पंजीकरण भी पूर्ण रूप से रोक दिया जाता है। इसी माह में प्रत्येक पाठशाला के विद्यार्थी अलग-अलग तरीकों से अपनी-अपनी हिंदी पाठशालाओं में दिवाली के उत्सव का भव्य आयोजन करते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के दिवाली शिल्प सिखाते हैं। दिवाली कब, क्यों और कैसे मनाते हैं? इस पर कहानियाँ सुनाकर, प्रोजेक्ट प्रदर्शन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों के स्तरानुसार क्रिया-कलाप कराए जाते हैं। इस वर्ष कुछ पाठशालाओं में अभिभावकों के सहयोग से प्रीति-भोज आयोजन भी किया गया। सभी पाठशालाओं में दीपावली की मिठाई बाँटी गई।

नवम्बर माह के अंत में सभी स्तर संचालक/ संचालिकाओं ने अपने-अपने स्तर की दूरभाष सभा का भी आयोजन किया जिसमें शिक्षण कार्य की कठिनाइयों तथा जनवरी माह में आने वाली अर्ध-वार्षिक परीक्षा, कविता पाठ आदि की तैयारी पर प्रश्नोत्तर तथा जानकारी प्रदान की गई।

दिसम्बर माह - इस वर्ष ६ दिसम्बर को संस्था ने “शिक्षक अभिनंदन समारोह” का भव्य आयोजन किया। इस आयोजन का उद्देश्य उन सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं को सम्मानित करना तथा उनका आभार प्रकट करना होता है जो अपना अमूल्य समय देकर विद्यार्थियों को हिंदी भाषा तथा भारतीय संस्कृति का ज्ञान प्रदान कर रहे हैं।

यंसेवक अभिनंदन समारोह

इस कार्यक्रम में सभी पाठशाला संचालकों तथा विभिन्न समितियों के अध्यक्षों को सम्मानित किया गया। कुछ को उनकी विशेष सेवाओं के लिए पुरुस्कृत भी किया गया। इसके अतिरिक्त सभी पाठशाला संचालकों द्वारा अपनी-अपनी पाठशालाओं के स्वयंसेवक तथा स्वयंसेविकाओं को मंच पर आमंत्रित कर हिंदी यू.एस.ए. द्वारा उपहार प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम के उत्तरार्ध में शिक्षक-शिक्षिकाओं ने अपनी-अपनी पाठशालाओं की ओर से सामूहिक तथा एकल कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस रंगारंग कार्यक्रम के बाद सभी ने स्वादिष्ट भारतीय भोजन का आनंद उठाया। इस कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षक-शिक्षिकाओं की अतिरिक्त प्रतिभाओं का तो पता चलता ही है, इसके अलावा यह कार्यक्रम सब को पहचानने तथा एकता और मैत्री भाव को बढ़ाने में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस कार्यक्रम

के आयोजन में राज मित्तल जी की विशेष भूमिका रही।

अमरीका की संस्था हिन्दी यू एस ए की
भारत यात्रा
19 दिसम्बर 2015 से 2 जनवरी 2016 तक

इस वर्ष दिसम्बर माह में हिंदी यू.एस.ए. ने अपनी संस्था के चुने हुए १२ विद्यार्थियों को "भारत भ्रमण" के लिए दो स्वयंसेवकों राज मित्तल तथा योगिता मोदी जी के संरक्षण में १५ दिन की यात्रा के लिए भारत भेजा। (इस अंक में अनेक लेख हैं जो भारत यात्रा के विस्तृत वृतांत को आप तक पहुँचाएंगे)। इन सभी विद्यार्थियों ने अपनी हिंदी प्रतिभा, संस्कारों और भारतीय सभ्यता का डंका बजाकर हिंदी यू.एस.ए. को गौरवांवित किया।

जनवरी माह - इस माह के प्रारम्भ में सभी पाठशालाओं में लिखित तथा मौखिक अर्धवार्षिक परीक्षाओं का आयोजन हुआ तथा परिणामों द्वारा यह ज्ञात हुआ कि शिक्षक और विद्यार्थी सीखने और सिखाने में कितने सफल हुए हैं। इसी माह के अंत में सभी पाठशालाओं ने अपनी-अपनी पाठशालाओं में कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें कनिष्ठ-१ स्तर से लेकर उच्च स्तर-२ तक के लगभग २,१०० प्रतियोगियों ने पूरे उत्साह से भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं में विजयी विभिन्न पाठशालाओं के लगभग ४०० विद्यार्थी कविता पाठ प्रतियोगिता के सेमीफाइनल में पहुँचे।

फरवरी माह - यह पूरा माह सेमीफाइनल कविता प्रतियोगिता की शानदार तैयारी में व्यतीत हुआ। इस वर्ष २० फरवरी को न्यू जर्सी के बॉर्डनटाउन शहर में इसका आयोजन किया गया जिसमें कनिष्ठ-१ और २, प्रथमा-१ और २, मध्यमा-१, २ और ३ के ३६० विद्यार्थियों ने पूरी तैयारी और जोश से भाग लिया। यह प्रतियोगिता प्रात: ९:३० से रात्रि ९:३० तक अनवरत चलती रही। इस प्रतियोगिता में २२ निर्णायकों को आमंत्रित किया गया जिनमें से अधिकांशत: पैंसिलवेनिया, डेलावेयर, बॉस्टन, न्यू यॉर्क तथा न्यू जर्सी से इस प्रतियोगिता का हिस्सा बनने आए। सभी निर्णायक गण विद्यार्थियों की कविताएँ सुनकर अत्यधिक आश्चर्यचकित थे। कुछ तो अपना निर्णायक समय समाप्त होने के बाद भी घंटों कविता पाठ का आनंद लेते रहे। इस प्रतियोगिता में प्रत्येक स्तर से १० विजेता तथा १० सांत्वना पुरस्कार विजेता चुने गए। प्रथम १० विजेता आज इस महोत्सव में पुन: अंतिम प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। उच्च स्तर-१ और २ की काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन फरवरी २७ को पिस्कैटवे पुस्तकालय में किया गया जिसके लिए ५ निर्णायकों को आमंत्रित किया गया। इसमें ४२ विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस प्रकार सेमीफाइनल कविता पाठ प्रतियोगिता अत्यधिक सफल रही। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में यूँ तो ६० स्वयंसेवकों और २० युवा स्वयंसेवकों का सहयोग रहा, परंतु मुख्य भूमिका सुशील अग्रवाल जी की रही।

मार्च माह - इस माह में सभी शिक्षक-शिक्षिकाएँ तथा

विद्यार्थी कर्मभूमि के लिए सामग्री एकत्रित करने में व्यस्त रहे। इसी माह में स्तर संचालकों ने दूसरी दूरभाष सभा के माध्यम से महोत्सव की तैयारी प्रारम्भ कर दी। इसी माह में हिंदी यू.एस.ए. की ओर से युवा कार्यकर्ताओं के सम्मान में एक बड़ा समारोह किया गया। इस वर्ष हिंदी यू.एस.ए. में 86 युवा स्वयंसेवक विभिन्न पाठशालाओं में प्रत्येक शुक्रवार को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। इन सभी को धन्यवाद देने के लिए संस्था पिछले ५ वर्षों से "युवा स्वयंसेवक सम्मान" का आयोजन कर रही है। इस वर्ष लगभग ६० स्वयंसेवकों ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर अपने अनुभव सबके साथ साझा किए। कुछ स्वयंसेवकों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। पाठशाला संचालकों तथा निदेशक मंडल के सभी सदस्यों द्वारा सभी स्वयंसेवकों को जीवन में सफल होने तथा स्वयं को एक अच्छा नागरिक बनाने के कुछ नुस्खे दिए गए। स्वादिष्ट भोजन के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में माणक काबरा जी की प्रमुख भूमिका रही।

अप्रैल माह - इस माह में नूतन वर्ष के आगमन के साथ हिंदी यू.एस.ए. ने भी अपने नए सत्र के लिए ऑन लाइन पंजीकरण आरम्भ कर दिए। (अभी तक ५०% पुराने विद्यार्थी पंजीकरण करवा चुके हैं)। इस माह में अधिकांश पाठशालाओं ने पाठ्यक्रम के दोहराव, महोत्सव के अभ्यास और मौखिक परीक्षा के आयोजन में अपना समय लगाया।

मई माह - मई का महीना हिंदी यू.एस.ए. के लिए सदा से ही व्यस्ततम महीनों में आता है, क्योंकि पिछले १५ वर्षों से संस्था इसी माह में अपना सबसे बड़ा कार्यक्रम हिंदी महोत्सव करती आ रही है। इस महोत्सव में संस्था अपने १५ वर्ष पूर्ण कर १६वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। इन १५ वर्षों में विद्यार्थियों की संख्या १०० से बढ़कर ४,००० तक पहुँच गई है और यह संस्था सारे स्वयंसेवकों की ईमानदार सेवा और

मेहनत का परिणाम है। इस वर्ष हिंदी महोत्सव में हिंदी यू.एस.ए. विभिन्न स्तरों की १० प्रतियोगिताओं का आयोजन कर रहा है जिनमें से महोत्सव के प्रथम दिवस में ६ तथा द्रितीय दिवस में ४ प्रतियोगिताएँ होंगी। संस्था के सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने में सक्रिय अभिभावकों की बहुत बड़ी भूमिका है। हिंदी यू.एस.ए. १५वें महोत्सव के शानदार आयोजन में सभी का अभिनंदन करता है।

जून माह - यह सत्र का अंतिम माह रहता है। इसमें सबसे बड़ा कार्य होता है विद्यार्थियों के लिए वार्षिक परीक्षा का आयोजन करना तथा परिणाम घोषित करना। यह केवल विद्यार्थियों की ही नहीं अपितु सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं और अभिभावकों की भी परीक्षा होती है। यह हिंदी यू.एस.ए. की भी बहुत बड़ी परीक्षा होती है कि वह अपने उद्देश्य में कितना सफल हो पाया। इस माह के अंत में संस्था सभी कार्यकर्ताओं के लिए पिकनिक का आयोजन करती है।

जुलाई और अगस्त माह - इस समय संस्था नए सत्र की तैयारी और प्रचार में व्यस्त रहती है।

हिंदी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्यों को देखकर आपको यह अंदाज हो गया होगा कि यह संस्था उन गिनी-चुनी संस्थाओं में से एक है जो हिंदी के उत्थान और प्रसार के लिए वर्ष भर क्रियाशील रहती है। आइए आप भी इसका हिस्सा बनिए।

हिन्दी काव्यपाठ
प्रतियोगिता
हिन्दी यू. एस. ए. का आयोजन

कविता पाठ प्रतियोगिता सेमी फाइनल–२०१६

डा. नैनेश देसाई, उनके परिवार और कर्मचारियों की ओर से १५वें हिंदी महोत्सव के पर्व पर हिंदी यू.एस.ए. को हार्दिक शुभकामनाएँ

Central New Jersey Prosthodontics, L.L.C.

Nainesh A. Desai, DDS, FICOI
Esthetics, Implants & Reconstructive Dentistry
NJ Specialty Permit 5771
Office Hours by Appointment

Medical Arts Center at Colonial Oaks
C-2 Cornwall Drive
East Brunswick, NJ 08816

Phone: 732-254-2550
Fax: 732-254-3243

centralnjprosthodontics.com
desainainesh@gmail.com

मधुर स्मृति

सुनील कुमार व्यास, प्रधानाचार्य राजकीय नारायण उच्च माध्यमिक विद्यालय बिजयनगर, जिला अजमेर (राजस्थान), भारत, के द्वारा हिन्दी यू.एस.ए. संस्थान, न्यू जर्सी के शिक्षक छात्र दल के भारत भ्रमण के संस्मरण।

"मंगलमय जीवन हो सब का मंगलमय जीवन हो

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् सबका जीवन हो

कोई नहीं पराया सारी धरती को अपनाएँ

नहीं सताये कभी किसी को, सब को गले लगाए"

भारतीय सांस्कृतिक की उपरोक्त भावनाओं से ओतप्रोत हमारे विद्यालय में हिन्दी यू.एस.ए. संस्थान के श्री राज मित्तल व अपने विद्यार्थियों के दल के साथ भारत भ्रमण के दौरान दिनांक १२-२१-२०१५को हमारे विद्यालय को भ्रमण का हिस्सा बनाया यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है।

श्री मित्तल सन् १९७१ में हमारे विद्यालय के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी रह चुके है। श्री मित्तल व दल के सभी सदस्यों का हिन्दी के प्रति सम्मान व रुचि देख कर शाला के समस्त साथी प्रभावित हुए। श्री मित्तल ने अपने विद्यालय की पुरानी यादों को अपने छात्रों के साथ संवाद करके पूरे विद्यालय के बारे में बताया, सभी छात्रों ने अपने शिक्षक के विद्यालय की जानकारी रुचि पूर्वक सुनी साथ ही दल के विद्यार्थियों ने स्थानीय विद्यालय के छात्रों से वार्तालाप कर विद्यालय की गतिविधियों और पढ़ाई के बारे मे चर्चा की। विद्यालय में अवलोकन के दौरान माँ सरस्वती के मंदिर के सामने पूर्णतया भारतीय संस्कृति के अनुसार आस्था में परिपूर्ण होकर हाथ जोड़कर दर्शन किए।

हजारों किलोमीटर दूर से आकर श्री मित्तल ने भ्रमण के दौरान हमारे विद्यालय को देखने में जो समय निकाला जिसके लिये मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ, साथ ही हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के सभी सदस्यों को मई २०१६ में होने वाले १५वे हिन्दी महोत्सव के आयोजन के लिए बधाई व शुभकामना प्रेषित करता हू। यह संस्थान फूले-फले ताकि सम्पूर्ण विश्व मे हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार हो जिससे सम्पूर्ण विश्व भारतीय संस्कृति से परिचित हो सके।

गुरुकुल एकेडमी शिक्षक-शिक्षिकाएँ

गुरुकुल एकेडमी ने भारतीय संस्कृति को अमेरिका में स्थापित करने के लिए और बच्चों में आत्म-विश्वास जागृत करने के लिये सितंबर २०१४ में हिंदी सिखाना शुरु किया था। गुरुकुल एकेडमी २६ छात्रों से प्रारंभ होकर अब ५८ छात्रों को हिंदी सिखा रही है। हिंदी, तेलुगू और गुजराती भाषाओं के साथ हम एक घंटा संस्कृति भी सिखाते हैं। पहले साल के बाद हमें एहसास हुआ कि भाषा सिखाने के लिये सही पुस्तकों का होना आवश्यक है। कई पाठ्य पुस्तकों को देखने के बाद हमें हिन्दी यू.एस.ए. की पुस्तकें बहुत अच्छी लगीं। हमारे छात्रों के लिए ये पुस्तकें विशेष रूप से फ्लैश कार्ड के साथ हिन्दी सीखने के लिए बहुत उपयोगी हैं। इन पुस्तकों ने हमारे शिक्षकों के लिए भी एक उच्च पाठ्यक्रम प्रदान किया है। हिन्दी यू.एस.ए. को गुरुकुल एकेडमी का बहुत बहुत धन्यवाद।

Respect
Caring
Kindness
Fairness
Responsibility
Trustworthiness

मेरी कविताएँ

मैं प्रियंक दीप हिंदी यू.एस.ए. की वुडब्रिज पाठशाला में प्रथमा-१ कक्षा को पढ़ाती हूँ। मैंने भारत से माइक्रोबायोलॉजी में एम.एस.सी. किया है और यहाँ मिडिल स्कूल में विज्ञान की शिक्षिका हूँ। इसके साथ ही मैं कविताओं और कुकिंग के ब्लाग भी लिखती हूँ। भारतीय नृत्य और गाने में मेरी विशेष रुचि है।

अब न विलाप करें

मुठ्ठी भर रेत की, कहानी बड़ी पुरानी है,
बाँध नहीं सकते जिसे हम, दुनिया आनी जानी है।
संताप क्यों करें उसका, जो न यहाँ हमारा है,
निर्बाध करें स्वयं को इससे, ठहरें जहाँ किनारा है।
आत्मग्लानि के बोध से, न तुम पश्चाताप करो,
कर्तव्य पथ पर अडिग रहो, जीवन पर विश्वास करो।
अस्त हो गया जो सूरज, लालिमा उसमें भी है,
हर अनुभव एक संदेस है, प्रतिष्ठा उसकी भी है।
द्वेष एवं घृणा से, खुद का न संहार करो,
अश्रुओं की वर्षा से, बार-बार न प्रहार करो।
उदित हुए सूरज में, अपनी छवि का पान करें,
अभियुक्त विचार कर, स्वयं का न अपमान करें।
अंगीकार जिसे न कर पायें, क्यों हम उसका रोष करें,
संतुष्ट अपनी संपत्ति पर, केवल उसका मोल करें।

पुष्प वाटिका

आज माली ने मुझे प्यार से सींचा है,
स्नेह की वर्षा से हृदय मेरा जीता है।
सूर्य की ज्योति व परिश्रम जन्म देगा,
पसीने की हर बूंद से तन मेरा महकेगा।
कल जब खुलेंगी आँखें मेरी,
बिखरेगी खुशबू से क्यारी-क्यारी।
अधरों पर मुस्कान है,
चारों ओर यश गान है।
प्रकृति का सृजन, शौर्य से कम नहीं,
न कोई संवाद, न विवाद है कहीं।
किन्तु हाय! कितना निष्ठुर है मानव,
निर्जीव कर दिया, लेकर प्राण अब।
बसंत का पतझड़ में, ये कैसा परिवर्तन?
इस पर्यावरण पर हो रहा है चिन्तन।
शोभा न मेरी मंदिर में है,
सौन्दर्य न मेरा आभूषण में है,
सुगन्ध न मेरी गुलदस्ते में है,
अस्तित्व न मेरा अलंकार में है,
इस वाटिका मे हैं प्राण पनपते,
ये संदेसा तू सबको पहुँचा दे।
मृदु पुष्पों पर प्रहार मत कर,
सुरक्षित रहने दे, जीवन का ये सुन्दर स्वर।

WE COULDN'T BE MORE EXCITED ABOUT THIS MESSAGE

Yes, WE ARE GROWING

Yes, WE ARE HIRING

Even in this economy

For a career opportunity as Financial Advisor or Manager

Thevan Theivakumar, CLF®

Sr. PARTNER, New Jersey Sales Office

(732) 319-8758

ntheivakuma@ft.newyorklife.com

EOE.M/F/D/V

454352 CV 6/18/17

WE STAND STRONG

JOIN OUR TEAM

NEW YORK LIFE

The Company You Keep®

New York Life Insurance Company 379 Thornall Street, 8th Floor Edison, NJ 08837

हिंदी यू.एस.ए. में अब तक का सफर

मायनो मुर्मु

जीवन का प्रत्येक पल कितना आनंद दायक और स्फूर्तिवान होता है जब हम सदैव सकारात्मक लोगों से मिलते हैं। हमारा हिंदी यू.एस.ए. ऐसा ही है जहाँ मैंने सीखा कि जीवन में संतुलन कितना आवश्यक है। यहाँ मैंने एक संचालिका, शिक्षिका, अभिभावक, और कार्यकर्ता होने की भूमिका निभाना और कर्तव्य निभाना - यह सब करते हुए बहुत कुछ सीखा। हर शुक्रवार को प्यारे बच्चों, अभिभावकों, कार्यकर्ताओं, और शिक्षिकाओं को नमस्ते और फिर शुभरात्री कहना कितना अच्छा लगता है।

हिंदी के इस महासंग्राम में जुड़ने के पहले अमेरिका के रहन-सहन और चकाचौंध वाले जीवन ने कभी मेरे मन के अंदर की भारतीयता को नहीं बदला। क्योंकि मुझे मेरी माँ से ऐसे संस्कार और परवरिश मिली जो कभी भी इस देश की रंग-बिरंगियों से नहीं बदल सकता था। लेकिन मेरे अंदर एक भय था कि हमारे बच्चों को अच्छी परवरिश कैसे मिले। भारत देश की परंपरा, संस्कृति, संस्कार को इनमें कैसे लाया जाए, जिस पर हम सभी को नाज हो। यह तभी हो सकता था जब हम अपनी मातृ भाषा पढ़, लिख, और बोल सकें और इससे सम्बंधित हर तरह के कार्यक्रमों में हिस्सा ले सकें। मेरी बेटी और बेटे, दोनों ने ही हिंदी यू.एस.ए. से स्नातक किया है। बचपन में बेटी भरतनाट्यम और कुचिपुड़ी सीखती थी और अब भी इस तरह के कार्यक्रमों में हिस्सा लेती है और बेटा हिंदुस्तानी क्लासिकल संगीत सीख रहा है। लेकिन उस में हमें कही न कहीं कुछ कमी या अधूरापन सा लगता था। शिक्षक और गुरु सब बहुत अच्छे थे। बच्चे रटने लगे, लेकिन समझ नहीं पा रहे थे। वे कुछ भी सीखने के लिए मन में संकोच करते थे। लेकिन जब से हिंदी यू.एस.ए. में आए तब अचानक सब बदल गया।

मुझे चार साल पहले की बात याद आई जब मेरे पति और बेटा भारत गए तब सब यह देख कर आश्चर्यचकित हो गए कि मेरा बेटा हिंदी बोलने के साथ-साथ दुकानों में लगे पोस्टरों को भी पढ़ लेता था। इससे हमारे रिश्तेदारों के साथ उसकी नजदीकी बढ़ गई। वहाँ कुछ बच्चे हिंदी बोल सकते थे लेकिन हिंदी पढ़ लिख नहीं सकते थे। लोगों पर इसका काफी असर पड़ा और उनके मन में भी हिंदी सीखने की इच्छा जागृत हुई।

हमारे ईस्ट ब्रंसविक स्कूल के बच्चों को पढ़ाते -पढ़ाते मुझे बहुत प्रेरणा मिली। जनवरी का समय था, हमारे स्कूल का यह चौथा साल था। शाम के साड़े सात बजे होंगे, एक अभिभावक अपने दो बच्चों के साथ - एक को कंधे पर डाले और दूसरे को हाथ में पकड़े कक्षा में आई। मैंने कहा आपकी बेटी तो सो रही है, हम कविता प्रतियोगिता की तैयारी बाद में कर लेंगे, तो उनका उत्तर था काश मेरे बच्चे मान जाते। उनका कहना था कि बच्चे रो रहे थे जब उन्होंने कहा कि आज हिंदी कक्षा नहीं जायेंगे। बच्चे हर दिन हिंदी स्कूल जाना चाहते हैं। कंधे में सोई बच्ची उठ गई और पढ़ने के लिए तैयार हो गयी। मैं उस बच्चे की हिंदी सीखने की इस इच्छा को देख हैरतअंगेज हो गयी। वह छोटी सी बच्ची, जाने अनजाने में मुझे कुछ सन्देश दे गई। मैंने भी निश्चय किया कि मै भी सभी कक्षाओं मे उपस्थित रहूँगी। वैसे ही एक प्यारा सा बच्चा जो ठीक से कुर्सी पर

बैठ नहीं सकता था, अपनी माँ को बोलता है कि हिंदी की कक्षा हर दिन क्यों नहीं होती है। यह सुनकर मुझे लगा कि यहाँ के बच्चे हिंदी इतना पसंद करते हैं, तो हिंदी सीखना बच्चों का हक है। उनको सिखाने में और हिंदी को आगे बढ़ाने में हम सब को किसी न किसी रूप में योगदान देना चाहिए। आज वह बच्चा इस साल स्नातक करने वाला है। जहाँ तक मुझे याद है वह हमेशा स्कूल आता है। यह बात भी कहीं न कहीं मुझे एक प्रकार की हिम्मत देती रहती है - मुझे हिंदी से जुड़े रहने में और हिंदी को आगे बढ़ाने में।

हमारी शिक्षिकाएँ मेहनती तो हैं ही, उसके साथ-साथ अपना वादा निभाना भी खूब जानती हैं। इन सभी की खासियत यह है कि जो भी काम कहा जाए कर देती हैं। मदद करती हैं लेकिन उसके लिए शाबाशी लेना नहीं चाहतीं। ये सभी शिक्षिकाएँ, जिसको मैं जानती तक नहीं थी, जरूरत पड़ने पर मदद करती हैं। शायद मैं जीवन मे उनका कर्ज न चुका सकूँ। मैंने उनसे यह सीखा कि, "मदद करो और आशा मत करो, काम पर ध्यान दो" । उनको मैं दिल से धन्यवाद देती हूँ।

एक साल पहले से युवा कार्यकर्ताओं के कारण कार्य में काफी योगदान मिल रहा है। क्योंकि हमारे युवा वर्ग सबसे ज्यादा जीवंत, आदर्शवादी और ऊर्जावान हैं। इनमें अधिकतर शिक्षिकाओं के बच्चे हैं। ये हर काम को इतने निपुण ढंग से करते हैं कि मन गद गद हो जाता है। इससे मुझे नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की बात याद आती है जिन्होंने कहा था कि "जिस दिन राष्ट्र का युवा अपनी संस्कृति को भूल जाएगा उस दिन राष्ट्र नहीं रहेगा", अतः राष्ट्र की संस्कृति को जीवित रखना हम सब का कर्तव्य है। यह बहुत ही गर्व की बात है कि हिंदी यू.एस.ए. यह काम को बखूबी निभा रहा है। हाल में संपन्न हुए १२ बच्चों के भारत भ्रमण को जितनी तारीफ और वाह वाही मिली, यह सब हमारे कार्यकर्ताओं, स्वयंसेवकों, अभिभावकों, शिक्षिकाओं और छात्रों के योगदान से हुआ।

अंत में मैं देवेन्द्र जी, रचिता जी तथा अन्य कार्यकर्ताओं और संचालकों/संचालिकाओं, स्तर संचालिकाओं एवं सभी स्वंयसेवकों को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने मेरी कहीं न कहीं मदद की है और मेरा उत्साह बढ़ाया है। मैं अपने पति को भी धन्यवाद देती हूँ जो कदम-कदम पर मेरा साथ देते रहते हैं। इस सब के लिए मै हिंदी यू.एस.ए. की आभारी हूँ।

हिंदी यू.एस.ए. अमर रहे!

हम अपने जीवन और अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यों की प्राथमिकताएँ निर्धारित करें और वे प्राथमिकताएँ हमारे जीवन मूल्यों पर आधारित हों यही समय प्रबंधन का मूल मन्त्र है। सर्वप्रथम हमें उन कार्यों के लिये समय निकलना चाहिए जो अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

भारतीय संस्कृति

अगमा चौहान

__शिक्षा एवं प्रेरणा:__ अगमा जी ने मास्टर्स इन कंप्यूटर ऍप्लिकेशन्स (एम.सी.ए) की शिक्षा प्राप्त की है। इन्हें साहित्य और लेखन की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन इनकी माता जी, श्रीमती राधा रानी चौहान जी से मिली, जो स्वयं भी निरंतर साहित्य की सेवा में जुड़ीं रहीं और अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित हुईं।

__रुचियाँ:__ स्कूल व कॉलेज की साहित्यिक गतिविधियों से जुड़ी रहीं। प्रारंभ में स्कूल, कॉलेज पत्रिका में आलेख प्रकाशित हुए हैं। विभिन्न साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहभागिता। कई परिचर्चाओं में हिस्सेदारी, कविता एवं वार्ताओं का आकाशवाणी भोपाल से प्रसारण। भोपाल आकाशवाणी और दूरदर्शन में कई साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहभागिता। poetry.com में कविता का चयन। नृत्य में भी अनेक पुरस्कार प्राप्त। हिंदी यू.एस.ए. में भी स्वैच्छिक रूप से अध्यापन कार्य में रत। वर्तमान में आई. टी. प्रोफेशनल और पारिवारिक उत्तरदायित्वों का वहन करते हुए भी लेखन की ओर अग्रसर।

भारत की संस्कृति हज़ारों वर्षों से शाश्वत बनी हुई है। हज़ारों वर्षों की परतंत्रता, सैकड़ों जातियों का, आक्रमणकारियों का आक्रमण हमारी भारतीय संस्कृति को भ्रष्ट नहीं कर पाया है। जिसने भी भारत की धरती पर कदम रखे वे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। इकबाल की ये पंक्तियाँ भारत के सांस्कृतिक गौरव की कहानी स्वयं कहती हैं,

"यूनान, मिस्र औ रोमा
सब मिट गए जहाँ से
लेकिन बात कुछ ऐसी है,
कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
बचा है नमो निशा हमारा"

विश्व का कोई भी देश ऐसा नहीं है जहाँ हिन्दू -मुस्लिम और पाश्चात्य संस्कृति का इतना सहज और आत्मीय समन्वय देखने को मिलता हो। भारतवर्ष में अधिकांशतः हिन्दू होते हुए भी इस्लाम, पारसी, जैन, बौद्ध, ईसाई, सिख धर्म का गढ़ रहा है। धार्मिक, सामाजिक और पारिवारिक सिद्धांतों को एकमत होने में युग बीत जाते हैं। भारतीय संस्कृति का वैभवशाली महल हज़ारों वर्षों के संस्कारों, परम्पराओं, मान्यताओं और जीवन मूल्यों से निर्मित हुआ है।

भारत की संस्कृति हिंदुत्व शैली में ही समाहित है। हिंदुत्व किसी धर्म का द्योतक नहीं है। सत्य तो ये है कि हिंदुत्व इक जीवन-शैली है, धर्म नहीं। हिन्दू धर्म की गिनती विश्व के श्रेठ धर्मों में होती है। भारतीय संस्कृति के पर्याय शांतिपूर्ण, सह-अस्तित्व, अंतर-राष्ट्रीय भाई चारे और एकता की भावना है।

“वसुदैव कुटुम्बकम" अर्थात "संसार एक परिवार है"

ये परम्पराएँ भारत देश में सदियों से चली आ रही है, जो कि श्रेष्ठतम धर्मों का सार है। यह सर्व विदित है कि भारत में वेदों के अनुसार वैदिक युग से ही सारी सृष्टि, समस्त मानव जाति के कल्याण की कामना की गयी है। जैसा कि इस श्लोक में कहा गया है;

* * *

"सर्वे भवन्तु सुखनिः,

सर्वे सन्तु निरामयाः

सर्वे भद्राणि पश्च्यन्तु,

मा कश्चित् दुःख भाग भवेत्"

भौगोलिक और सामाजिक भिन्नताएँ हमें कमज़ोर नहीं शक्तिशाली बनती हैं। हमारे खानपान, भाषा, पहनावे और रीति-रिवाजों के साथ-साथ उपासना पद्धतियाँ और धार्मिक क्रियाएँ भी विभिन्नताओं से भरी पड़ी है, फिर भी हमारे यहाँ के लोग एकता के अटूट बंधन में बंधे हुए हैं। तुलसीदास, मीरा, कबीर, सूरदास, जैसे महान कवि, स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, रवीन्द्रनाथ टैगोर, गांधी, पटेल, मदर टेरेसा, ए.पी.जे. अब्दुलकलाम जैसे महान दार्शनिक और वैज्ञानिकों को क्षेत्रों, धर्मों, जातियों और भाषाओं के बंधन में नहीं बाँटा जा सकता। ये सभी भारतवर्ष के गौरव है। इनके विचारों, आदर्शों, ने भारत को एक दृष्टि से देखा है।

हमारे पर्व-त्यौहार सांस्कृतिक एकता को मजबूती देते हैं। होली, धार्मिक भिन्नता, जात-पात और छोटा बड़ा नहीं देखती। दीपावली सारे भारत को रोशन करती है, ईद सभी के हृदयों में उल्लास और हर्ष का संचार करती है। मंदिर, मस्जिद, गुरद्वारे, चर्च के द्वार सभी धर्मों और जातियों के लोगों को आमंत्रित करते हैं।

प्रकृति की उपासना का हमारे देश में वैदिक युग से ही बहुत महत्व है। पीपल, तुलसी जैसे अनेक पेड़-पौधों, सूर्य, चन्द्रमा, तारे, और ग्रहों की पूजा होती आ रही है। नदियों को देवी तुल्य माना गया है। जल, अग्नि, वायु को देवता माना गया है। इन सभी का वैज्ञानिक आधार भी सर्व विदित है। इन पद्धतियों का पालन करने वाले ऋषि मुनियों के आदर्श और सिद्धांत शासकों का मार्ग दर्शन करते आये हैं।

संयम, संतोष, अहिंसा, तथा शांति का पाठ जनमानस और शासकों को पढ़ाया जाता रहा है। भारतीय संस्कृति सुदृढ़ आधारो, परम्पराओं, मान्यताओं, और दर्शन के स्तंभों पर खड़ी है। उदारता की गहरी सोच रखते हुए सभी को अपना लेने वाली इस संस्कृति का आक्रमणकारी कुछ न बिगड़ पाए। भारतीय संस्कृति हमें संयम, धैर्य, सत्य, अहिंसा, विश्व शांति जैसे परम जीवन मूल्यों से अवगत कराती है।

"अतिथि देवो भवः" हमारी संस्कृति की पहचान है। भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक पक्ष बहुत मजबूत है और यही मूल कारण है कि भारतीय संस्कृति का अस्तित्व आज भी जीवित है।

अंततः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भारतीयों की जीवनशैली, दर्शन, मान्यताएँ, स्वभाव, व्यक्तित्व और अनेकता में एकता की भावना सदियों से इसके अस्तित्व को न केवल बचाये हुए है बल्कि विश्व पटल में पहचानी जाती है। विभिन्न आस्थाओं, विभिन्न भाषा-भाषियों और सामाजिक भौगोलिक भिन्नताओं के होते हुए भी भारतीय संस्कृति आज भी विश्व में मानवता का गौरव है।

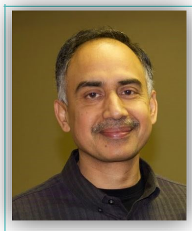

जीवन - एक चेष्टा!

पंकज सोगानी

मैं वेस्ट विंड्सर-प्लेंसबोरो हिन्दी पाठशाला में पिछले पाँच वर्षों से अध्यापन कार्य कर रहा हूँ। मेरा मानना है कि किसी भी राष्ट्र और उसके साहित्य, समाज, और संस्कृति को पूर्णरूपेण जानने के लिए उसकी भाषा का ज्ञान आवश्यक है। हमारी अगली पीढ़ी अपनी धरती और अपनी जड़ों को कम से कम पहचान सके, समझ सके, उसके लिए अपनी क्षेत्रीय भाषा के साथ-साथ हिन्दी के ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है। हिन्दी न केवल हम सब को एक कड़ी में जोड़ने की भूमिका निभाती है, वह यह कार्य हमसे हमारी क्षेत्रीय और राष्ट्रीय पहचान की आहुति माँगे बिना करती है| यह लेख अपने कुछ बिखरे विचारों को समेट कर एक कड़ी में पिरोने मेरा का एक प्रयास है।

"मैं... कौन हूँ? क्या हूँ? उद्गम हूँ या उत्थान हूँ? मेरा उद्देश्य क्या है? कर्म या फिर मैं बस एक निमित्त मात्र हूँ?" ये प्रश्न: मूलत: मेरे हैं ऐसी भ्रांति मुझे कदापि नहीं, और हो भी नहीं सकती। ये तो कहीं से पढ़े हुए, सुने हुए, प्रश्न हैं जो कब, कहाँ, और कैसे मेरे भी हो गये शायद जागृत मन को पता ही न चला। लेकिन प्रश्नों का उत्तर ढूँढने के लिए, प्रश्न मूल हों यह आवश्यक तो नहीं! और वह भी तब, जब की प्रश्न आप स्वयं से ही कर रहे हों?

और फिर, यह भी तो नहीं कि मैं इन प्रश्नों से हर समय घिरा बैठा हूँ, ये विचार तो बस कभी-कभी यूँ ही चले आते हैं... कि जैसे किसी पुरानी टंकी की दरारों से रिस्ता हुआ पानी। बल्कि यूँ समझिए कि जैसे बिना समय की वर्षा के उपरांत पृथ्वी से कोंपलें निकलती हैं, एक नन्ही सी ज़िंदगी लिए... जिन्हें सच्चाई की धूप क्षण भर में फिर पृथ्विरत कर देती है।

सोचता हूँ, कि आज मैं जो हूँ, जैसा हूँ, जिनके बीच हूँ, जिनके साथ हूँ, जिन से मिला, जिन से बिछड़ गया (सम्भवत: फिर कभी मिलने के लिए), जो बन पाया, जो न बन पाया, जो कर पाया, जो न कर पाया... क्या यह सिर्फ़ एक नियती है? या फिर इस होने-न-होने में, किंचित मात्र ही सही, मेरा भी सक्रिय योगदान रहा है?

अपना मन टटोलता हूँ तो सोचता हूँ कि न जाने कितनों का हृदय मेरे कारण दुखा होगा, आज भी दुखता होगा! कितने ही प्रतिदिन मुझसे क्षोभित होते होंगे! किंतु फिर विचार आता है, कि यह भी तो होगा, कि कोई कभी मेरी वजह से मुस्कराया हो... आज भी मुस्कराता हो! जाने-अनजाने ही सही, मेरे होने का कोई क्षण, किसी के जीवन की खुशियों का निमित्त बना हो! सोचता हूँ, कि क्या यह किसी और की रचित कहानी है जिसका मैं सिर्फ़ एक मूक पात्र हूँ या फ़िर यह मेरी अपनी कहानी है? जिसका लेखक भी मैं, और पात्र भी मैं ही! इस कहानी में, न जाने कितने पात्र अपने लिए मैंने लिख डाले हैं... मैं पिता, मैं पति, मैं बेटा, मैं मित्र, समाज का अंग - कभी उपयोगी तो कभी भोगी... और भी न जाने क्या-क्या... मगर क्या इनमें से कोई भी पात्र मैं पूर्ण रूप से बन पाया? निभा पाया? या फिर... इस अपूर्णता से पूर्णता की ओर अग्रसर होते रहने का जीवनपर्यंत प्रयास ही इस कहानी के पात्रों की सफलता है!

ज़्यादा ढूंडे बिना ही पाता हूँ कि मुझमें ही कहीं छुपी हैं परछाईयाँ कन्स के गुरूर की, शकुनी की कुटिलता की, कैकयी के स्वार्थ की, और छुपा हो संभवत: कहीं दुस्शासन भी... किंतु यह

शेष अगले पृष्ठ पर...

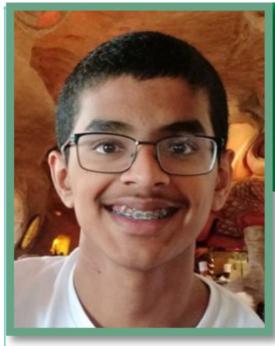

हिंदी नव-वर्ष

मेरा नाम प्रणव रेड्डी है। मैं नवीं कक्षा में पढ़ता हूँ और सात सालों से हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला में हिंदी भाषा सीख रहा हूँ।

जैसे कि पश्चिम में लोग ग्रेगोरियन कैलेंडर का प्रयोग करते हैं, भारत का भी एक अपना कैलेंडर है। उसे "सका कैलेण्डर" के नाम से जाना जाता है। सका के एक साल में बारह महीने होते हैं। पहला महीना चैत्र है। चैत्र की शुरुआत लगभग मार्च में होती है। हिन्दू धर्म के अनुसार भगवान ब्रह्मा ने चैत्र के पहले दिन इस विश्व की शुरुआत की। ग्रेगोरियन कैलेंडर सूर्य की गति के आधार पर और सका कैलेंडर चन्द्रमा और तारों के संचालन के अनुसार बनाया गया है। भारतीय राष्ट्रीय कैलेंडर, "सका कैलेंडर", पारम्परिक हिन्दू कैलेंडर के आधार पर १९५७ में पेश किया गया था। लेकिन इस पारम्परिक कैलेंडर का भारतीय युवाओं ने प्रयोग करना छोड़ दिया है। उन्हें विभिन्न त्योहारों का महत्व पता नहीं है और उन्हें यह भी पता नहीं है कि एक ही ग्रेगोरियन दिन पर हर साल त्यौहार क्यों नहीं आते। बुज़ुर्गों को अगली पीढ़ी को भारत का इतिहास सिखाना चाहिए। कुछ घटनाओं के पीछे के कारणों की जानकारी देनी चाहिए तभी तो नई पीढ़ी अपनी संस्कृति से अवगत हो पाएगी। पूरे भारत में विभिन्न संस्कृतियों के लोग अलग-अलग तरीकों से नए साल को मनाते हैं। होली के दिन लोग नए कार्यों को प्रारम्भ करते हैं। लोग एक दूसरे पर रंग फेंक कर बसंत की शुरुआत करते हैं। एक कहानी के अनुसार इस दिन हिरण्यकश्यप का अंत भगवान विष्णु के द्वारा हुआ और धरती को उसके बुरे कर्मों से मुक्ति मिली। एक और कहानी है कि होली कृष्ण और राधा के प्रेम का त्यौहार है। चैत्र मॉस का पहला दिन लोग गुड़ी पड़वा, उगादि या युगादि के त्यौहार के रूप में भी मनाते हैं। उगादि एक नए युग की शुरुआत के रूप में मनाई जाती है। हिन्दू नया साल दुनिया भर में मनाया जाता है और भविष्य में भी मनाया जाना चाहिए। हम सब को इस महत्वपूर्ण परंपरा को जारी रखना चाहिए।

◆ ◆ ◆

चेतना भी तो है, कि वहीं मुझे प्राप्त है धरोहर अर्जुन-कर्ण और भीम की, भीष्म और कृष्ण की, महावीर और बुद्‌ध की... क्योंकि मैं मनुष्य हूँ। ईश्वर् की वह कृति, जिसे पृथ्वी पर ही उप्लब्ध हैं सर्व गुण एवम् अवगुण... और एक विवेकशील मस्तिष्क। मेरे नर्क के निर्माता भी मेरे कर्म और मेरे विचार, और मेरे स्वर्ग के निर्माता भी मेरे ही कर्म और मेरे ही विचार!

अपने अंतर्मन के कोलाहल से विचलित हो जैसे अचानक से निद्रा भंग हो जाती है, पाता हूँ कि खड़ा हूँ मेले में एक दर्पण के परोक्ष... और देख रहा हूँ न केवल अपने प्रतिबिंब का सत्य, बल्कि हर किसी के प्रतिबिंब की झलक! पाता हूँ कि एक ही समय में, एक ही जैसी धूप और उन्ही बादलों के नीचे सबके प्रतिबिंब भिन्न् हैं, क्योंकि प्रतिबिंब सिर्फ़ चेहरों के नहीं हैं, हमारे जीवन मूल्यों के भी हैं, हमारे विचारों के भी हैं, और हैं हमारे अब तक तक के कर्मों के। और पाता हूँ कि इस दर्पण में हमारे प्रतिबिंब अलग-अलग भी नहीं हैं... जुड़े हैं हम सब कहीं न कहीं एक दूसरे से... न केवल अपनी बल्कि एक दूसरे की भी अपूर्णता को पूर्ण करते हुए!

स्टर्लिंग हिन्दी पाठशाला

हमारी पाठशाला का नाम स्टर्लिंग हिंदी पाठशाला है। हम दो शिक्षिकाएं श्रुति पांडे और पद्मश्री चिने ३ वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. की संलग्न पाठशाला वर्जीनिया प्रांत के स्टर्लिंग शहर में पढ़ा रही हैं। पाठशाला में प्रथमा स्तर १, २, मध्यमा स्तर १ और 3 तथा उच्च स्तर १ के विद्यार्थी पढ़ने आते हैं। पाठशाला में सभी विद्यार्थी हिन्दी भाषा सीखने का भरसक प्रयास करते हैं और यह प्रशंसनीय है। पाठशाला में हम त्योहारों को मनाते हैं। हम वर्ष के अंत में एक वार्षिक कार्यक्रम का आयोजन करते हैं। कुल १४ विद्यार्थी इस पाठशाला का लाभ उठाते हैं। इन तीन वर्षों में हमें अभिभावकों की हमेशा प्रेरणा और सहायता मिली है। – **श्रुति पांडे**

TEAM SPIRIT
Best Competitor
READY
AIM
MINECRAFT

शिक्षादान से बड़ा कोई महादान नहीं

हिन्दी यू.एस.ए. के साथ का सफर

नमस्ते, मेरा नाम श्वेता कालरा है। मैं पिछले छः वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हूँ। मेरा बड़ा बेटा हिन्दी यू.एस.ए. का छात्र था। उसने मध्यमा-२ कक्षा तक हिंदी का अध्ययन किया। अब मेरा छोटा बेटा हिंदी स्कूल में कनिष्ठ-२ कक्षा में है। २०१० में कविता प्रतियोगिता के दौरान मेरी भेंट राज मित्तल जी से हुई। उन्होंने मुझे बच्चों के लिए कहानी और कविता लिखने के लिए कहा। कहीं न कहीं मेरे अंदर लिखने का जज़्बा था जिसके बारे में मुझे भी नहीं पता था। जैसे ही राज जी ने लिखने की बात कही, वह जज़्बा निकल कर मेरी लेखनी पर आ गया और मुझे नहीं पता कि मैंने कैसे कुछ कहानियाँ लिख डालीं।

मैं बहुत भाग्यशाली हूँ की मुझे हिन्दी यू.एस.ए. जैसी संस्था के बारे में पता चला। जहाँ मेरे बच्चे अपने संस्कार इस संस्था से सीख रहे हैं वहीं मैं भी इस संस्था से बहुत कुछ सीख रही हूँ। इस संस्था के कारण मैंने अपने अंदर छुपी हुई लेखिका को पाया। बहुत बार ऐसा होता है की आप कुछ करना चाहते हैं लेकिन आपको सही दिशा दिखाने वाला कोई नहीं होता। हिन्दी यू.एस.ए. ने मुझे वह दिशा दिखाई है और मैं आशा करती हूँ कि आने वाले समय में मैं और समय निकाल कर इस संस्था के लिए कुछ कर सकूँ।

मैं सबसे अनुरोध करना चाहूँगी कि जैसे भी हो थोड़ा समय अपने देश, अपने संस्कार और अपनी हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के लिए निकालिये। जिस तरह मुझे अपने लेख कर्मभूमि में देख कर ख़ुशी होती है, मुझे विश्वास है आपको भी ऐसी ही ख़ुशी होगी जब आप भी इस संस्था के लिए अपना थोड़ा वक़्त समर्पित करेंगे।

दिल चाहता है

मेरा नाम अमित अग्रवाल है। मैं विल्टन कनेक्टिकट में अपनी पत्नी गरिमा और २ प्यारे बच्चों के साथ रहता हूँ। हम हिंदी यू. एस. ए. से पिछले ६ वर्षों से जुड़े हुए हैं और अपना योगदान दे रहे हैं। हिंदी यू. एस. ए. को १५वीं वर्षगांठ पर बहुत बहुत बधाई। इस अवसर पर मैं अपनी स्वरचित कविता भेज रहा हूँ। आशा हैं आप सब को पसंद आएगी।

फिर से जीने को आज दिल चाहता है,
खुशियाँ ढूंढने को आज दिल चाहता है,
होती रहें तमन्नाएँ यूँ ही पूरी,
कि फिर से मुश्किलों का सामना करने को आज दिल चाहता है।
बरसने का आज दिल बहुत करता है,
किसी पे छा जाने को आज दिल बहुत करता है,
वजूद मिटता रहे यूँ ही मेरा,
कि किसी में समा जाने को आज दिल बहुत करता है।
दिल की दूरियाँ मिटाने को दिल चाहता है,
एक पल साथ रोने को दिल चाहता है,
दिल की यह ख़्वाहिशें बढ़ती रहे यूँ ही मेरी,
कि इन खुशियों से गले मिलने को दिल चाहता है॥

माँ जब मैं माँ बनी

शमा अरोड़ा

शमा अरोड़ा जी भारत के हरियाणा प्रान्त की रहने वाली हैं। ये बैंक की रिटायर्ड कर्मचारी रह चुकी हैं। इन्हें बच्चों से बहुत लगाव हैं और १६ वर्ष बाल उद्यान में शिक्षिका के रूप मे भी कार्य किया है। इन्हें कला तथा कविताएँ लिखने में बहुत रुचि है। पिछले चार वर्षो से कर्मभूमि के लिए कविता लिखती आ रही हैं। नीचे लिखी कविता में शब्दों के द्वारा इन्होंने माँ और बेटी के सुन्दर रिश्ते का वर्णन किया है।

दूर रहकर भी तुम पास लगी, इसी लिए तुम खास लगी
जब मैं बिलकुल छोटी थी, जोर जोर से रोती थी
और पूरी रात न सोती थी
मैं रात जगी तू साथ जगी, इसी लिए तू ख़ास लगी
दूर रहकर भी पास लगी
जब बड़ी हुई और हुई जवां, तेरी नींद भी हुई हवा
जब तक मैं घर न आती थी, आँगन मैं तू चक्कर लगाती थी
मुझे देख कर ही तेरी आँख लगी, इसी लिए तू ख़ास लगी
दूर रहकर भी पास लगी
आज जब घर से मेरी डोली उठी, तू हक्की-बक्की रही खड़ी
आँखों मैं थी सावन की झड़ी, तेर दिल ने फिर यही कहाँ
सदा सुखी रह लाड़ो से पली, अब अपने घर जा मेरी परी
इसी लिए तू ख़ास लगी, दूर रहकर भी पास लगी
आज प्रसव इस पीड़ा में, जब तूने मुझको सहलाया
तेरी आँखों में जब मैंने झाँका, मुझे दुगना दर्द नजर आया
तू हाथ जोड़कर ईश्वर से बोली, सदा भरी रहे इस की झोली
इसी लिए तू ख़ास लगी, दूर रह कर भी पास लगी

मध्यमा-२
लॉरेंसविल

छात्र-छात्राएँ

अगर पढ़ना एक शौक है
तो बात ही कुछ और है
अगर लिखना एक शौक है
तो मज़ा ही कुछ और है
पढ़ते लिखते ही पूरे करेंगे ख्वाब... हम||
अगर खाना एक शौक है
तो मज़ा ही कुछ और है
अगर व्यायाम एक शौक है
तो बात ही कुछ और है
खाते पीते व्यायाम करते रहेंगे निरोग... हम||
अगर पाठशाला जाना एक शौक है
तो बात ही कुछ और है
अगर पाठशाला में दोस्त बनाना एक शौक है
तो मज़ा ही कुछ और है
दोस्तों के साथ हँसते खेलते आसमां छू लेंगे... हम||
अगर खुशियों में भारत जाना एक शौक है
तो बात ही कुछ और है
अगर रिश्तों में मिल बैठना एक शौक है
तो मज़ा ही कुछ और है
भारत जाकर रिश्तों को और मजबूत करते रहेंगे... हम||
जय भारत...

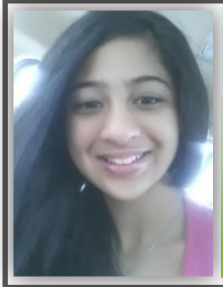

मेरा प्रिय त्योहार – होली

मेरा नाम सिया गर्ग है। मैं ११ साल की हूँ। मैं हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-३ की छात्रा हूँ। मुझे हिन्दी सीखना अच्छा लगता है। मैं हिन्दी स्कूल में ६ साल से हिन्दी सीख रही हूँ।

होली मेरा सबसे प्रिय त्योहार है। इस दिन हमारा परिवार बहुत खुश रहता है। होली के एक दिन पहले हम लोग रंग, पिचकारी और उपहारों की खरीददारी करते हैं। हम सब मिलकर पकवान और नमकीन बनाते हैं। होली वाले दिन मौसम गर्म होने लगता है। हम चार-पाँच रंग थाली में रखते हैं। हम हल्के रंगों के थोड़े पुराने कपड़े पहनकर होली खेलते हैं, एक दूसरे को गुलाल लगाते हैं और गले मिलते हैं। भारत में हमारे दोस्त पानी वाले रंगो का भी उपयोग करते हैं। होली वाले दिन सभी अपनी लड़ाई भूलकर एक दूसरे के साथ गले मिलते हैं। हम होली के गीत सुनते हैं और नृत्य करते हैं। होली खेलने के बाद हम घर आकर नहाते हैं और सारे रंग को साफ करते हैं। भारत में कुछ जगह होली का पर्व १ माह पहले ही शुरू हो जाता है। राधा कृष्ण की होली व्रज में बहुत प्रसिद्ध है।

यह पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाता है। यह मस्ती भरा दिन बार बार आना चाहिए।

योगिता मोदी

हिंदी यू.एस.ए. भारत-यात्रा

भारत की विशाल सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर से बच्चों का प्रत्यक्ष परिचय

मैं, योगिता मोदी, हिंदी यू.एस.ए. की एक स्वयंसेविका एवं लॉरेंसविल चेप्टर की संचालिका हूँ। यस मेरा परम सौभाग्य था कि मुझे हिंदी यू.एस.ए. के बेहद प्रतिभावान १२ छात्र-छात्राओं की भारत यात्रा **(१८ दिसम्बर, २०१५ - १ जनवरी, २०१६)** के साथ संरक्षिका के तौर पर जाने का सुअवसर मिला। इस यात्रा में हमारे मार्गदर्शन के लिए **श्री राज मित्तल जी** भी संरक्षक के रूप में हमारे साथ थे। मैं इस रोचक, शिक्षाप्रद एवं अत्यंत प्रभावकारी भारत-भ्रमण का समूचा विवरण संक्षिप्त रूप में आपसे बाँटना चाहती हूँ।

हल्दीघाटी संग्रहालय

राजस्थान यात्रा

भारत में पहुँचने के बाद भारत यात्रा के प्रथम चरण की शुरुआत **२० दिसम्बर** को **जयपुर**, राजस्थान से शुरू हुई। सभी छात्र-छात्राओं ने राजस्थान यात्रा के विभिन्न पड़ावों के अन्तर्गत **जयपुर, उदयपुर, नाथद्वारा, चित्तौड़गढ़** में भव्य हिन्दू शैली के विभिन्न किले, महल, मंदिर एवं **हल्दीघाटी** के संग्रहालय में देश भक्ति से ओतप्रोत **महाराणा प्रताप** के जीवन और मातृभूमि के उनके संघर्ष के बारे में विस्तार से जाना और प्रभावित हुए। राजस्थान यात्रा की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी रही - **राज जी के हाई स्कूल में जाना**, जहाँ से उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की थी। वहाँ हमारे छात्र-छात्राओं ने करीब से जाना कि इतनी कम सुविधाओं एवं साधनों के बिना भी अच्छी शिक्षा प्राप्त की जा सकती है और यह प्रेरणा प्राप्त की कि कैसे अपनी मेहनत एवं लगन से एक सम्माननीय और सफल व्यक्ति बनकर जीवन में आगे बढ़ा जा सकता है। राजस्थान यात्रा के अंतिम पड़ाव में **रणथम्बौर राष्ट्रीय पार्क सफारी** की खुली हवा में बिना रोकटोक घूमते हुए बहुत से पशु पक्षी देखे, जिसमें अति सुखद और रोमांचक रहा - खुली हुई जीप में बैठकर चीते को बिल्कुल पास से निकलते हुए देखना और उस दृश्य को अपने कैमरे में कैद करना। सभी बच्चे इस पांच दिवसीय राजस्थान यात्रा के दौरान अत्यन्त उत्साहित, प्रेरित एवं खुश थे।

उत्तरप्रदेश यात्रा

भारत यात्रा के अगले चरण में हमारा समूह **२४ दिसम्बर** रात्रि को **आगरा** पहुँचा। **२५ तारीख** की सुबह हमने आगरा और **फतेहपुर सीकरी** के मुगलकालीन किलों एवं **ताज महल** का अवलोकन किया। बहुत से छात्र-छात्राओं ने पहली बार इन स्थलों का भ्रमण किया

और इसलिए वे बेहद प्रसन्न थे। लगभग सभी ने वहाँ से ताजमहल की छोटी प्रतिकृतियां भी खरीदीं।

वात्सल्य ग्राम - वृन्दावन

यात्रा की अगली कड़ी में हमारा समूह **२६ दिसम्बर** को पवित्र धाम **मथुरा-वृन्दावन** पहुँचा। वहाँ हमारे समूह ने मथुरा के श्री **कृष्ण जन्मभूमि** मंदिर में दर्शन के साथ ही वृंदावन स्थित **वात्सल्य ग्राम** में साध्वी **ऋतम्भरा जी** के सानिध्य में कुछ समय बिताया जो इस यात्रा की अमूल्य धरोहर है। वात्सल्य ग्राम में छात्र - छात्राओं को निःस्वार्थ सेवा भाव का जीता जागता उदाहरण देखने को मिला, साथ ही वहाँ स्थित शहीदी संग्रहालय में अमर शहीदों के सजीव चित्रों को देखने के साथ ही उनके बारे में पढ़ने और जानने को मिला। संक्षेप में वात्सल्य ग्राम की यात्रा बहुत प्रेरणादायक रही।

मध्यप्रदेश यात्रा

सूर्य मंदिर, ग्वालियर

भारत यात्रा के तृतीय पड़ाव में हमारा समूह मध्य प्रदेश स्थित प्राचीन नगरी **ग्वालियर** पहुँचा, जहाँ रात्रि विश्राम के बाद सुबह **२७ तारीख** को हमने भारत के दूसरे सबसे बड़े एवं भव्य किले का अवलोकन किया। इसके साथ ही ग्वालियर स्थित **सूर्य मंदिर** एवं जयविलास महल के संग्रहालय और अंत में झाँसी की **महारानी लक्ष्मी बाई की समाधि स्थल** को देखा और जाना कि कैसे स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने अपने अदम्य शौर्य और वीरता से अंग्रेजों के दांत खट्टे किए और लड़ते-लड़ते अपने प्राणों का बलिदान किया। यात्रा का यह पड़ाव भी शिक्षा, मनोरंजन एवं प्रेरणा से ओतप्रोत था।

दिल्ली यात्रा

भारत की राजधानी **दिल्ली**, हमारी भारत यात्रा का अंतिम सोपान थी और जो कई कारणों से अति महवपूर्ण और उल्लेखनीय रही। **२८ तारीख** को हम लगभग दिन भर यात्रा और एक संक्षिप्त आगरा पड़ाव के बाद अंततः रात्रि में नई दिल्ली पहुँचे।

चार दिवसीय दिल्ली दर्शन **२९ दिसम्बर** को प्रारम्भ हुआ। प्रथम क्रम में हमारा समूह **अक्षरधाम मंदिर** पहुँचा। छात्र-छात्राओं ने यहाँ अत्यन्त मनोरम और भव्य निर्माण एवं शिल्प कला देखी। इसके साथ ही संगीतमय फव्वारे का रात्रि शो भी देखा जो बहुत मनोरंजक और सुन्दर था।

दिसम्बर ३० की सुबह हमारे समूह को **अखिल भारतीय आकाशवाणी** ने आमंत्रित किया था। हमारे विद्यार्थियों ने आकाशवाणी प्रसारण के बारे में वहाँ के अधिकारियों से जानकारी हासिल की। साथ ही आकाशवाणी विभाग के अधिकारियों ने हमारे विद्यार्थियों से उनकी भारत यात्रा के उद्देश्य और उनके अनुभवों का बहुत उत्साह और रुचि से जायजा लिया। वे सभी बच्चों से बातचीत करके अत्यन्त प्रभावित हुए। परस्पर मेल मिलाप के इस क्रम में बच्चे भी बहुत खुश हुए।

भारतीय संसद भवन, दिल्ली

इसी दिन दोपहर में हमारे समूह को एक साक्षात्कार के लिए भारत के राष्ट्रीय टीवी चैनल में से एक - **लोकसभा टीवी** ने आमंत्रित किया था। यह हमारे समूचे हिंदी यू.एस.ए. के लिए बहुत ही गरिमापूर्ण एवं महत्वपूर्ण था। **"है प्रीत जहाँ की रीत सदा"** गीत की पंक्तियाँ गुनगुनाने के साथ ही शुरू हुआ यहाँ हमारे समूह से प्रश्न-उत्तर का सिलसिला। सभी बच्चों के सटीक जवाबों और सुंदर प्रस्तुतियों - संस्कृत में श्लोक से लेकर हिंदी कविता तक समस्त साक्षात्कार बहुत प्रभावशाली रहा। हिंदी यू.एस.ए. के हिंदी पठन-पाठन के बारे में पूछे गए प्रश्नों के सन्दर्भ में मेरे और राज मित्तल जी द्वारा दिए गए जबाव भी इस साक्षात्कार का हिस्सा थे। यह साक्षात्कार भारत में कई बार प्रसारित किया गया जिसे लोगों ने बहुत सराहा।

वर्ष का आखिरी दिन, **३१ दिसम्बर** भी हमारे लिए एक और यादगार दिन बना जब हमें **एन.सी. जिंदल पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग़, दिल्ली** ने आमंत्रित किया। यहाँ हमारे समूह का **अभिनन्दन समारोह** आयोजित किया गया था। समूह के सभी **१२ छात्र-छात्राओं** ने एक बार फिर अपनी बहुत ही सुंदर प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया और वाहवाही लूटी। सभी यह देखकर बहुत अचम्भित हुए कि अमेरिका से आये ये बच्चे न केवल हिंदी कविता एवं बातचीत बल्कि संस्कृत में श्लोक बोलने से लेकर शास्त्रीय नृत्य कला में भी पारंगत हैं। इसके लिए सभी ने हिंदी यू.एस.ए. के अमेरिका में हिंदी एवं भारतीय संस्कृति को पल्लवित-पोषित करने के लिए दिए जा रहे योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की और साधुवाद दिया।

इसी दिन दिल्ली दर्शन क्रम में बच्चों को **गुड़गांव स्थित किंग्डम ऑफ ड्रीम्स** दिखाया जहाँ उन्होंने भारत के विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक झलकियों एवं स्वादिष्ट खान पान का मजा लिया। इसके साथ ही शाम को हमारा समूह दिल्ली के एक महवपूर्ण **शहीदी स्मारक, इंडिया गेट** भी गया जहाँ अमर जवान ज्योति के बारे में बच्चों को बताया गया, जिसे सुनकर एवं देखकर सभी को बहुत प्रेरणा मिली।

इंडिया गेट, दिल्ली

नए साल - २०१६ का प्रथम दिन, १ जनवरी बहुत ही मनोरंजक रहा, जिसके तहत भारत यात्रा के हमारे समूह ने महरौली स्थित प्रसिद्ध **कुतुबमीनार** देखी और उसके बाद हम **चांदनी चौक** गए। यहाँ सभी ने जायकेदार विभिन्न व्यंजनों, अत्यन्त व्यस्त बाज़ार, भीड़-भाड़, रिक्शा सवारी और मोल-भाव कर छोटी-मोटी खरीददारी का भरपूर आनंद उठाया।

इस तरह **हिंदी यू.एस.ए. की भारत यात्रा के ये १४ दिन** हम सभी के लिए अविस्मरणीय बन गए। दिनांक २ जनवरी को प्रातः १:३० हमारी अमेरिका वापसी की उड़ान थी, लेकिन किसी का भी मन भारत यात्रा से नहीं भरा था, और सभी बच्चे वहाँ कुछ दिन और रुक कर अन्य जगह भी जाना चाहते थे। उन्हें

जो इस यात्रा से इतना कुछ भारत के बारे में विस्तार से जानने और सीखने को मिला, जगह-जगह जो उनका स्वागत-सत्कार हुआ, अपनी कला, अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला, इतनी प्रसिद्धि मिली, यह उनकी कल्पना से परे था।

मैं सभी प्रतिभागी बच्चों की बहुत सराहना करती हूँ कि उन्होंने इस यात्रा में आपसी स्नेह और सहयोग से बहुत कुछ सीखने के साथ ही इस यात्रा का भरपूर आनंद उठाया।

मैं अपनी तरफ से इस सम्पूर्ण यात्रा के सफल एवं उद्देश्यपूर्ण प्रारूप को मूर्तरूप देने वाले सभी गुणीजनों का हृदय से साधुवाद करती हूँ और हिंदी यू.स.ए द्वारा मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए सभी को अनेकों धन्यवाद देती हूँ।

भारत भ्रमण - चोखी ढाणी

मेरा नाम अंकुर पोद्दार है और मैं रटगर्स यूनिवर्सिटी में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. से करीब आठ साल से जुड़ा हूँ। इस साल मुझे हिंदी यू.एस.ए. के ग्रुप के साथ भारत जाने का मौका मिला। इस यात्रा में मुझे दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, और उत्तर प्रदेश की कई जगहों को देखने का मौका मिला। अब तक जब भी मैं पहले भारत गया था, तो केवल कोलकता गया था और अपने रिश्तेदारों से मिल कर लौट आया था। इस यात्रा में मुझे अपने साथियों के साथ भारत देखने का मौका मिला।

सबसे ज्यादा जो जगह मुझे पसंद आई वह थी जयपुर की चोखी ढाणी। मैंने यह जगह पहले नहीं देखी थी। यहाँ मुझे भारत की संस्कृति, यहाँ के लोगों के कपड़े, रहने का तरीका, खाना-पीना, और वहाँ के नाच और गाने के बारे में जानकारी मिली। मैंने देखा कि एक औरत राजस्थानी गाना बजा रही थी और उसका छोटा सा बेटा नाच रहा था। यह देख कर मुझे बहुत मजा आया। हम सब भी उसके साथ राजस्थानी धुन पर नाचने लगे। इसके अलावा चोखी ढाणी का खाना बहुत मजेदार था। अमेरिका में तो मैं जो आर्डर करता हूँ वही मुझे खाना मिलता है। परंतु वहाँ पर लोग हमें बिना माँगे और बड़े प्यार से खाना खिला रहे थे। हमारे मना करने पर भी वे हमें खिला रहे थे। मजा तो तब आया जब योगिता आंटी के मना करने पर भी उन्होंने उनकी थाली में घी और चीनी डाल दी ताकि वे खाने का भरपूर आनंद ले सकें। ये मेरे लिये एक अलग सा और बहुत अच्छा अनुभव था। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझता हूँ कि मैं इतनी अच्छी भारत यात्रा पर जा सका और उन सब का धन्यवाद करता हूँ जिनकी वजह से यह यात्रा सुखद रही। अगर मौका मिला तो भविष्य में ऐसी यात्रा में जरूर करना चाहूंगा।

भारत यात्रा - यादगार अनुभव

सुधीश देवाडिगा

मेरा नाम सुधीश देवाडिगा है। मैं १३ वर्ष का हूँ और वूरहीस मिड्ल पाठशाला में आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं २०१४ में चैरीहिल हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला से स्नातक हुआ था। अब मैं स्वयंसेवक बनकर दूसरे बच्चों को हिंदी सीखने में मदद करता हूँ। मेरा प्रिय विषय गणित और विज्ञान है और मुझे बड़े होकर डॉक्टर बनना है। मुझे दूसरों की सहायता करना अच्छा लगता है।

यह भारत यात्रा मेरी जिंदगी का सबसे यादगार अनुभव है। दक्षिण भारतीय होने के कारण मुझे किसी भी उत्तर भारत के राज्य में जाने का मौका नहीं मिला। इस भारत यात्रा के दौरान मुझे कुछ उत्तर के राज्यों में जाने का अवसर मिला, जैसे राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और दिल्ली। जब से हम जॉन. एफ. कैनेडी हवाई अड्डे से निकले, तब से यहाँ फिर से वापिस आने तक भारत के बारे में मेरा ज्ञान बहुत बढ़ा। पहले मुझे भारत के इतिहास के बारे में दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन जब मैंने ताज महल, महाराणा उदय सिंह का महल, फतेहपुर सीकरी, चित्तौड़गढ़ किला, महाराणा प्रताप संग्रहालय और आगरे का किला जैसी जगहों पर जाकर वहाँ का इतिहास सुना तो मुझे भारत के इतिहास के बारे में और अधिक जानने की जिज्ञासा हुई है।

इन ऐतिहासिक स्थलों में जाकर मुझे पता चला कि भारत का इतिहास अमेरिका के इतिहास से कहीं अधिक विशाल है। ऐतिहासिक ज्ञान के अतिरिक्त मुझे आध्यात्मिक ज्ञान भी प्राप्त हुआ है। हमने कृष्ण भगवान की जन्मभूमि के दर्शन किए और ग्वालियर में सूर्य मंदिर गए। इन दोनों जगह जाने पर मेरा मन अतिप्रसन्न हुआ। इस यात्रा में मैंने जीवन के आवश्यक पाठ भी सीखे, जैसे कपड़े तह करना, अपने आप खरीददारी करना और अपने आप का ख्याल रखना। इस भारत यात्रा में मैंने और अधिक जिम्मेदार बनना सीखा और मैंने यह भी सीखा कि हम खेल और मज़ा कर सकते हैं परन्तु कई बार हमें ध्यान से काम भी करना पड़ता है।

सूर्य मंदिर, ग्वालियर

मुझे सबसे ज़्यादा मजा खरीददारी करते समय सौदा पटाने में आया। हम देखते थे कि किसको एक चीज़ सबसे कम कीमत में मिलेगी। इस यात्रा में मैंने ११ मित्र बनाये जो जीवन भर मुझे याद रहेंगे। सभी बहुत अच्छे थे और हमने ये १५ दिन एक परिवार की तरह बिताए। योगिता आँटी और राज अंकल ने हमारा बहुत अच्छा ख्याल रखा। इस अवसर के लिए मैं हिंदी यू. एस. ए. का हमेशा आभारी रहूँगा।

सरकारी पाठशाला का भ्रमण

अभिसार मुर्मू

अब तक के सभी अनुभवों में से भारत की यह यात्रा मेरे सबसे अच्छे अनुभवों में से एक है। पाँच साल पहले की बात है जब मैं पिछली बार भारत गया था, उस हिसाब से यह यात्रा तो शुरू से ही और भी ज्यादा रोमांचक थी। सच बोला जाए तो मेरे साथ जा रहे अन्य ग्यारह बच्चों में से मैं शायद ही किसी जानता था, और इस वजह से इस यात्रा के आनंद और अनुभव को लेकर मैं थोड़ा आशंकित था। हालांकि सर्दियों की छुट्टियों के दौरान वे पंद्रह दिन बहुत शानदार थे। सुंदर पर्यटकों के आकर्षण, व्यंजनों की सुगंध, और अद्‌वितीय भारतीय संस्कृति, इन सभी पहलुओं ने इस यात्रा को शानदार बनाया।

एक बात माननी पड़ेगी कि भले ही भारत में व्यवस्थाओं को चलाने के लिए बेहतरीन उपकरण नहीं हैं, लेकिन आतिथ्य के मामले में अमेरिका से कहीं आगे है और अगर यह कहा जाए कि अतुलनीय है तो गलत नहीं होगा। इस यात्रा के दौरान हम जहाँ भी गए, जिन लोगों के घर में गए, हमारा स्वागत अच्छी तरह से किया गया। सभी अवसरों पर मेजबान, वह भी चौदह यात्रियों के लिए, जलपान और पूर्ण भोजन की व्यवस्था करने में नहीं हिचकिचाते थे, और तो और हमें उपहार देना भी नहीं भूलते थे। एक उत्कृष्ट उदाहरण राज मित्तल जी के हाई स्कूल का था, जिसे नारायण माध्यमिक विद्‌यालय कहा जाता है, जो विजयनगर, राजस्थान में है। योजना के अनुसार हमें ६ घंटे की यात्रा पर जाना था, लेकिन जब बताया कि हम स्कूल के पास से गुजर रहे हैं तो हमने स्कूल में रुकने का फैसला किया। मैं यह बताना चाहूँगा कि किसी पूर्व सूचना के बिना हम जब स्कूल पहुँचे तो स्कूल के प्रिंसिपल ने हमारा स्वागत किया और हमें रसायन विज्ञान प्रयोगशाला, कंप्यूटर लैब, बास्केटबॉल कोर्ट और अन्य सुविधाओं को भी दिखाया। जहाँ अमेरिका के स्कूल के कंप्यूटर लैब में चारों ओर कई Chromebooks पड़ी रहती हैं, यहाँ उसकी तुलना में कंप्यूटर लैब में डेस्कटॉप का केवल एक जोड़ा था, पर बाकी की सामग्री पर्याप्त लग रही थी। स्कूल के दौरे के बाद छात्रों से हमारी मुलाकात हुई और हम सभी एक दूसरे से परिचित हुए। यह भी एक अनुभव था कि किस तरह सभी एक सामूहिक परिचय का आनंद ले रहे थे। फिर जब हमारे जाने का समय हुआ तो प्रिंसिपल ने कुछ जलपान के लिए अपने कार्यालय में हमें आमंत्रित किया। मेजबान टीम की इस उदारता ने मेरा मन जीत लिया। देश में प्रौद्‌योगिकी के क्षेत्र में कमी के बावजूद जितना हो सके एक अतिथि की हर जरूरत को पूरा करते हैं। कुल मिलकर भारत की हिन्दी यू.एस.ए. यात्रा एक बहुत ही ज्ञानवर्धक, शानदार, यादगार और मनोरंजक अनुभव था।

राजकीयनाराय
विधालय बिजयनगर(अज
।उत्ति
न्निबोधत।

भारत भ्रमण: भारतीय पाठशाला की यात्रा

ईशान आर्य

हम भारत में बहुत सारी जगह गए थे। हमने लगभग दस शहर पन्द्रह दिन में घूमे। इन शहरों में हमने प्रसिद्ध स्मारक (जैसे ताज महल और चित्तौड़गढ़ किला) देखे। इन स्मारकों के बावजूद राज अंकल (हमारे संरक्षक) की पाठशाला मेरी प्रिय जगह थी। उनका हाईस्कूल एक छोटे शहर विजयनगर, राजस्थान में था और हम वहाँ जा पाए क्योंकि बस ने एक गलत मोड़ ले लिया था। अंत में यह गलत मोड़ एक यादगार अनुभव बन गया।

हम उदयपुर जा रहे थे जब बस ने एक गलत मोड़ ले लिया। हम गुस्सा हो गए क्योंकि अब एक या दो घंटे और लगते उदयपुर पहुँचने में। लेकिन राज अंकल बहुत खुश दिख रहे थे। वे बोले उनका गृहनगर पास में था। वे अपने बचपन के बारे में हमको बता रहे थे। मैंने पूछा कि क्या हम वहाँ जा सकते हैं। दूसरे बच्चे भी सहमत हो गए। हम एक पाठशाला के सामने रुके। राज अंकल बोले कि ये उनका उच्च विद्यालय था जिसमें वे बचपन में पढ़े थे। हम हिचहिचाकर अन्दर गए क्योंकि हमने बताया नहीं था कि हम आने वाले थे।

पाठशाला के प्रधान अध्यापक जी हमसे मिलने आये। मैं उनका चेहरा कभी नहीं भूलूंगा। जब राज अंकल ने हमारा परिचय कराया तो वे अचानक अमेरिका से आये ऐसे छात्र-छात्राओं के समूह को देखकर आश्चर्यचकित हो गए। राज अंकल ने उनको बताया कि वे स्वयं इस पाठशाला के पूर्व छात्र थे और कैसे हमारी बस के एक गलत मोड़ ले लेने के कारण

जब हम पाठशाला के पास से निकल रहे तो हम सब बहुत उत्सुक थे इस पाठशाला को देखने के लिए, इसलिए हम यहाँ आये।

राज अंकल के साथ बात करने के बाद वे हमको रसायन विज्ञान प्रयोगशाला ले गए। वह एकदम अमेरिका की प्रयोगशाला की तरह नहीं थी। उनके पास इतने कम साधन थे लेकिन जब मैंने कुछ छात्रों के साथ बात की तो पाया कि वे बहुत कुछ जानते थे। मैं हैरान हो गया कि वे इतना सीख पाते हैं इतने कम साधन के साथ।

फिर घंटी बजी (जो इलेक्ट्रॉनिक नहीं थी लेकिन एक आदमी जो एक लकड़ी से एक लोहे पर मार रहा था) और सब बच्चे बाहर आये। हमको पता चला कि वे परीक्षा दे रहे थे। हम कुछ शिक्षकों से भी मिले। मैं उनके सत्कार से आश्चर्यचकित हो गया। प्रधान अध्यापक जी ने हमारे लिए समोसे और गुलाब जामुन मंगवाए और हमने उनके कार्यालय में नाश्ता किया। जब हम खा रहे थे तो कुछ बच्चे हमको देख रहे थे। मैं और अदिति उनके साथ “सेल्फी” लेने बाहर

हाईस्कूल- विजयनगर, राजस्थान

आए। हम हँसे जब वे “सेल्फी ले ले रे” गाने लगे। खाने के बाद हम उनके साथ जीव विज्ञान प्रयोगशाला गए। मैं फिर से आश्चर्यचकित हो गया कि वे कितना कर पाते हैं कम साधन के साथ। क्योंकि उनके पास जलनिकास नहीं था, जमीन में एक नाली थी जिसमें से पानी को निकाला जाता था।

इसके बाद हम उनके कंप्यूटर विज्ञान प्रयोगशाला गए। यह मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि मुझे कंप्यूटर विज्ञान बहुत अच्छा लगता है। अध्यापक छात्रों को “HTML” सिखा थे हैं, तो मैंने एक प्रोग्राम के बारे में बताया जो उनकी मदद कर सकता है। उन्होंने मुझे धन्यवाद दिया।

जाने के पहले बहुत सारे छात्रों ने पाठशाला के सामने आना शुरू किया हमसे मिलने के लिए। यह बहुत बड़ा पल था: दो संस्कृतियों के मिलन का। अध्यापकों ने उन से कहा अपना परिचय कराने के लिये, लेकिन सब शर्मीले थे। अंत में एक वरिष्ठ छात्र, जिसका नाम आशीष गोस्वामी था, ने अपना परिचय कराया और हमारे साथ हाथ मिलाया। सब लोग फिर दोस्त बन गए। हम अपने जिंदगी और शौक के बारे में बात करने लगे।

जाते समय मैंने आशीष गोस्वामी को “फेसबुक” पर “फ्रेंड” बनाया। अमेरिका में भी हम बात करते हैं (वह मेरे जन्म दिन पर “हैप्पी बर्थडे” बोला)।

यह यात्रा मेरी एक प्रिय यात्रा थी। मैं बहुत ख़ुशी से बोलता हूँ कि इस यात्रा ने मेरी उम्मीदों को पार कर दिया। हम बहुत घूमें। बहुत सारी स्मृतियों को और अनुभव जो हमने पाए वे अमूल्य थे। अगर फिर से जाने का मौका मिले तो मैं जरूर जाऊंगा। हिंदी यू.एस.ए. का धन्यवाद।

SN TRAVEL & Visa Services
SN Travel & Visa Services
SN TRAVEL & Visa Services
OCI, Passport and Visa Services
(Door to Door Service with minimum charges)
BLOCKBUSTER SALE
BLOCKBUSTER SALE
To Delhi $750 (R/T) + TAX
Some restrictions apply
Visa Services
Travel & Tour Packages
Toll free : 1-866-639-9700
Or
Visit : www.avisanyc.com
Toll Dial : 718-639-9700 or 732-238-0566
Or
Visit : www.sntravel.net
We offer services to meet all your travel needs with easily
accessible offices in Queens, NY and Oak Tree Road, NJ.
via email at sharad@sntravel.net

आगरा और मथुरा के अनुभव

मेरा नाम ध्रुव अग्रवाल है। मैं बारहवीं कक्षा मैं पढ़ता हूँ। मैं पिछले ८-९ वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ा हुआ हूँ। पहले मैंने यहाँ पढ़ाई पूरी की, फिर अब मैं ३ वर्षों से स्वयंसेवक का कार्य कर रहा हूँ। मुझे इस संस्था के साथ जुड़ने में बहुत गर्व महसूस होता है क्योंकि यह संस्था हम सब को अपने देश और अपनी संस्कृति से जोड़ती है। मैं हिन्दी यू.एस.ए. के १५ वर्ष पूरे करने के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह संस्था इसी तरह से हमेशा कार्यरत रहेगी।

यह भारत भ्रमण मेरी ज़िन्दगी में एक यादगार लम्हा है, जिसमें से मैं आपको आगरा और मथुरा के अनुभव के बारे में बताना चाहता हूँ। वीरवार को रणथंभौर से देर रात हम आगरा पहुँचे। रास्ता लम्बा होने की वजह से हम सब बस में काफी देर तक सोए तो जब हम आगरा होटल पहुँचे तब हमें नींद नहीं आ रही थी। आगरा में हमने एक रात बिताई थी और उस रात हम पिज़्ज़ा हट गए थे। वहाँ हमने बहुत अच्छे से खाना खाया। हमने रात को बहुत देर तक पत्ते खेले। आगरा का होटल अच्छा था। हम अगले दिन आगरा के पर्यटक स्थलों का भ्रमण करने गए।

सबसे पहले हम आगरा किला देखने गए। यह किला भारत का बहुत महत्वपूर्ण किला है। इस किले में बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहांगीर, शाहजहाँ, और औरंगज़ेब रहते थे और यहाँ से देश नियंत्रित किया जाता था। भारत के मध्यकालीन इतिहास के दौरान यहाँ पर विदेशी राजदूतों, यात्रियों और उच्चतम गणमान्य व्यक्तियों का आना जाना लगा रहता था। आगरा का किला बहुत बड़ा है परन्तु आजकल आधे से ज्यादा हिस्सा सरकारी काम में लिया जाता है और दूसरा हिस्सा पर्यटकों के देखने के लिए है। शाहजहां के बेटे औरंगजेब ने अपने पिता को पद से हटाकर आगरा किले में बंदी बना लिया था। जब हम आगरा किला देख कर बाहर निकले तो वहाँ पटरी पर स्मृति चिन्ह बिक रहे थे। एक बच्चे ने सौदेबाजी कर के स्नो ग्लोब को आधे से कम दाम में ख़रीदा और उसी दाम में और बच्चों ने भी खरीद लिया, मगर मैंने और भी सौदेबाजी कर के और कम दाम में ख़रीदा। हमने भारत जा कर सौदेबाजी करना सीखा। यह एक यादगार अनुभव था।

फिर उसके बाद हम फतेहपुर सीकरी देखने गए जो आगरा से ४० कि०मि० दूर है। फतेहपुर सीकरी का निर्माण मुगल सम्राट अकबर ने कराया था। एक सफल राजा होने के साथ-साथ वह कलाप्रेमी भी थे। फ़तेहपुर सीकरी में अकबर के समय के अनेक भवनों, प्रासादों तथा राजसभा के भव्य अवशेष आज भी वर्तमान हैं। यहाँ की सर्वोच्च इमारत बुलंद दरवाज़ा है, जिसकी ऊंचाई भूमि से 280 फुट है। 52 सीढ़ियों के पश्चात दर्शक दरवाजे के अंदर पहुंचते हैं। दरवाजे में पुराने जमाने के विशाल किवाड़ ज्यों के त्यों लगे हुए हैं। फतेहपुर सीकरी हिंदू और मुस्लिम वास्तुशिल्प के मिश्रण का सबसे अच्छा उदाहरण है। बुलंद दरवाजे के बाईं ओर जामा मस्जिद है और सामने शेख सलीम चिश्ती की दरगाह है। श्रद्धालु अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए शेख सलीम चिश्ती से आशीर्वाद माँगते हैं। यह माना जाता है कि मुख्य मकबरे में लगी

संगमरमर की स्क्रीन पर एक धागा बांधने से उनकी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं। हम में से कुछ लोगों ने वहाँ पर धागा बाँधा था और हम देखेंगे कि हमारी इच्छाएँ कब पूरी होती हैं।

उस दिन शुक्रवार होने की वजह से हम ताज महल नही देख पाये थे और हम मथुरा के लिए रवाना हो गए। हमने मथुरा में भगवान कृष्ण की जन्मभूमि देखी। वहाँ पर हम सब को लम्बी कतार में खड़े होने का अच्छा अनुभव हुआ। अंदर जाने के लिए हम जब कतार में खड़े हुए थे तब हमारे पीछे खड़े समूह में से किसी ने हमारी पॉकेट मारने की कोशिश की। लेकिन हमे पता चल गया और हमने उसे रोक दिया था। राज अंकल कतार में खड़े हुए हमे कृष्ण भगवान की कहानी सुना रहे थे। उन्होंने बताया कि भगवान कृष्ण का जन्म एक जेल में हुआ था। हमने वह जेल देखी और हम सब लोग अचंभित रह गए। वहाँ हमने आसपास में अन्य मंदिर भी देखे जो बहुत सुन्दर थे। हमने मथुरा से पेड़े ख़रीदे।

अगली जगह जाने से पहले हमने भोजनालय में अच्छा खाना खाया। हमने मथुरा में एक अद्‌वितीय जगह देखी। हमने ऋतंभरा देवी का वात्सल्यग्राम देखा। यह हम सब के लिए एक अनोखा तजुर्बा रहा क्योंकि हमने कभी ऐसी जगह नही देखी थी और हमको उनके द्‌वारा किये जाने वाले कार्यों के बारे में कुछ पता नही था। उन को सब दीदी माँ के नाम से पुकारते हैं। वे एक हिंदू राजनीतिक कार्यकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ता और धार्मिक उपदेशक हैं। साध्वी ऋतंभरा देवी का आश्रम वृंदावन की भूमि में 54 एकड़ जगह में स्थित है। आश्रम महिलाओं, बच्चों और बूढ़े लोगों को आश्रय प्रदान करता है जिन्हें उनके परिवारों ने छोड़ दिया है। आश्रम के बाईं ओर एक पालना रखा हुआ है। कोई भी कभी भी इस पालने में एक अवांछित बच्चा छोड़ कर जा सकता है। जैसे ही बच्चा पालने में रखा जाता है, सेंसर के माध्यम से आश्रम प्रबंधकों को पता चल जाता है कि पालने में बच्चा है। जैसे ही बच्चा आश्रम में प्रवेश करता है, वह वात्सल्य ग्राम का सदस्य बन जाता है। अब वह अनाथ नही रहता। हमने वहां पर बहुत कुछ देखा जैसी कि गुरुकुलम, गोशाला, अतिथि गृह, हॉस्पिटल, भोजनालय और पार्क। गुरुकुलम में बच्चों को पढ़ाया जाता है। हमने भोजनालय में प्रसादम खाया था और थोड़ी देर के लिए हमने अतिथि गृह में विश्राम किया। अंत में हमने साध्वी ऋतंभरा देवी से बातचीत की और उन्होंने हमें विस्तार से अपनी गतिविधियों के बारे में बताया। उनसे आशीर्वाद के रूप में प्रसाद लेकर हम अपनी अगली यात्रा के लिए निकल गए।

दो दिन हम ग्वालियर में रुके और सोमवार को हम बहुत सुबह दिल्ली के लिए निकले। दिल्ली जाने से पहले हम एक और महत्वपूर्ण जगह जाना चाहते थे, वह था ताज महल। राज अंकल और योगिता आंटी ने हमसे पूछा था कि हम ताज महल जाना चाहते हैं या दिल्ली पहुंच कर घूमना चाहते हैं। हम सब ने निर्णय लिया कि हम ताज महल देखना चाहते हैं क्योंकि हम सब में से कुछ बच्चों ने ताज महल कभी नहीं देखा था। ग्वालियर से ताज महल की यात्रा ५-६ घंटे की थी। क्योंकि हम जल्दी उठ गए थे तो हमने बस में अपनी नींद पूरी की। जब हम ताज महल पहुँचे तो हमने सबसे पहले एक टूर गाइड किया था। ताज महल का प्रवेश शुल्क १५ वर्ष से कम बच्चों का मुफ्त था परन्तु हम में से कुछ बच्चे १५ वर्ष से कम होने के बावजूद भी नही लग रहे थे इसीलिए उनकी टिकट ख़रीदनी पड़ी। हमें कतार में खड़े नही रहना पड़ा क्योंकि हमने विदेशी शुल्क का टिकट ख़रीदा था। ताज महल वास्तव में में एक अनूठी ईमारत है। अंदर जाकर इतने सारे लोग थे कि हम सब अलग-अलग हो गए। एक जगह जाकर फिर हमने सबका इंतज़ार

किया और हम सब ने बाकी का ताज महल एक साथ देखा। हमने वहाँ पर बहुत सारे बंदर देखे। हमने यमुना नदी के किनारे बहुत सारी सेल्फ़िज़ खींची। टूर गाइड ने हमको ताज महल के इतिहास के बारे में बताया जैसे कि शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताज़ महल के लिए यह महल बनवाया था और शाहजहाँ ने महल पूरा होने के बाद अपने कर्मचारियों के हाथ कटवा दिए ताकि कोई ताज महल जैसी दूसरी ईमारत ना बना सके। हमने वहाँ पर शाहजहाँ और मुमताज़ महल का मक़बरा भी देखा।

यह तो सिर्फ एक झलक थी। पूरी यात्रा का मज़ा ही अलग था। मेरे ज़हन में इस यात्रा की अनगिनत यादें हैं जैसे कि बस से होटलों का सफर , बीच रास्ते में बस का ख़राब होना, विभिन्न होटलों में खाना खाना, और होटल में रात देर तक जाग कर गपशप और मस्ती करना। इस यात्रा के दौरान हमने जो दोस्त बनाये हैं, उनसे दोस्ती जीवन भर कायम रहेगी। हमने इतनी सारी तस्वीरें खींची थीं और जब हम बीस वर्षों के बाद इन तस्वीरों को देखेंगे तो बिताए उन हसीन लम्हों को याद कर के हसेंगे। इस यात्रा की सुखद यादें मेरे मस्तिष्क पर हमेशा अंकित रहेंगी।

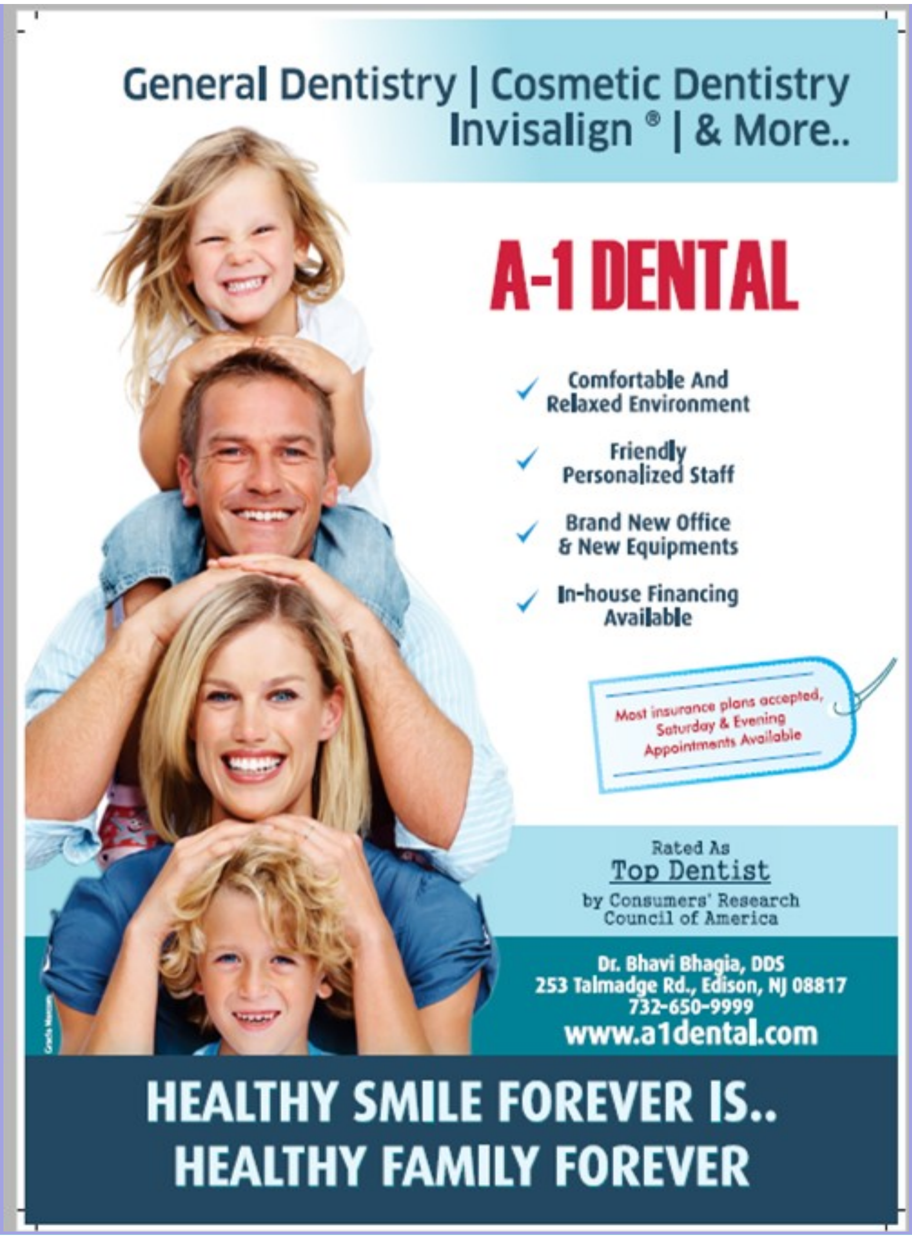
General Dentistry | Cosmetic Dentistry
Invisalign ® | & More..

A-1 DENTAL

✓ Comfortable And Relaxed Environment
✓ Friendly Personalized Staff
✓ Brand New Office & New Equipments
✓ In-house Financing Available

Most insurance plans accepted, Saturday & Evening Appointments Available

Rated As
Top Dentist
by Consumers' Research Council of America

Dr. Bhavi Bhagia, DDS
253 Talmadge Rd., Edison, NJ 08817
732-650-9999
www.a1dental.com

HEALTHY SMILE FOREVER IS..
HEALTHY FAMILY FOREVER

जयपुर-चोखी ढाणी

एक यादगार यात्रा

उज्जवल राठौड़

दिसंबर, २०१५ में मुझे भारत जाने का मौका मिला। हम १२ विद्यार्थी इस यात्रा के लिए चुने गए थे। वैसे तो मैं हर दूसरे साल भारत जाता हूँ, लेकिन इस बार मैं अपने परिवार के साथ नहीं बल्कि अपने सहपाठियों के साथ जा रहा था, तो बहुत उत्साहित था। बल्कि मेरा यह कहना ज्यादा उचित होगा कि हम सभी विद्यार्थी बहुत उत्साहित थे। हवाई जहाज में बैठने के बाद लगा कि हम जल्दी से भारत पहुँच जाएँ। भारत जाना मुझे हमेशा से ही अच्छा लगता है। भारत के हवाई अड्डे पर उतरते ही कुछ अलग सा अहसास हुआ, लगा कि जैसे अपने घर आ गए हों। वहाँ की मिट्टी की खुशबू की बात ही अलग थी। वहाँ हमारे लिए निजी बस का इंतजाम था। उस बस से ही हम ने सारी यात्रा तय की।

हम दिल्ली, जयपुर, उदयपुर, नाथद्वारा, आगरा, हल्दी घाटी, रणथम्बोर और ग्वालियर घूमें। सभी जगह एक दूसरे से अलग थीं। पहली बार हमें भारत में एक साथ इतनी जगह घूमने को मिलीं। मेरा मतलब आप समझ ही गए होंगे। जैसा कि आप जानते ही हैं कि जब हम अपने रिश्तेदारों से मिलते हैं तो ज्यादा घूमने फिरने का समय नहीं होता। भारत को जानने का मौका नहीं मिलता। पर इस यात्रा में यह संभव हो सका। सभी जगह बहुत अच्छी थीं। हम ने खूब खरीददारी की, मोल भाव किया जो अलग ही अनुभव था।

जयपुर मे हम चोखी ढाणी गए। वह मेरी सबसे मनपसंद जगह थी। वहाँ जा कर ऐसा लगा जैसे हम राजस्थान के किसी छोटे से गाँव मे आ गए हों। वहाँ हमारा स्वागत बहुत अच्छे से किया गया। लोग ऊँट और हाथी की सवारी कर रहे थे। छोटी-छोटी दुकानें थीं। एक तरफ कठपुतलियों का खेल दिखाया जा रहा था तो दूसरी तरफ जादू का खेल चल रहा था। वहाँ की सबसे मुख्य बात तो बताना मैं भूल ही गया, वह है वहाँ का शुद्ध देसी घी मे बना हुआ खाना, जो बहुत ही स्वादिष्ट था जो उन्होंने बड़े प्यार से हमें खिलाया।

यह भारत यात्रा मेरी जीवन की बहुत यादगार यात्रा रही जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। इस यात्रा के दौरान हम सभी विद्यार्थियों की मित्रता भी घनिष्ठ हो गयी। हम सभी ने इस यात्रा में बहुत मस्ती की और आनंद उठाया। हमारे साथ योगिता मोदी आंटी और राज मित्तल अंकल भी गए थे जिन्होंने हमारा बहुत ध्यान रखा और हमें कोई परेशानी नहीं होने दी। मैं तहे दिल से उनका धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं रचिता आंटी और देवेन्द्र सिंह अंकल का भी आभारी हूँ जिन्होंने इस यात्रा को सम्भव बनाया।

मैं अभी चेस्टरफ़ील्ड की पाठशाला में हिंदी उच्चस्तर-एक में पढ़ रहा हूँ। अगला साल मेरा आखिरी साल होगा। उसके बाद मैं भी दूसरे बच्चों को हिंदी पढ़ाऊँगा और हिंदी यू.एस.ए संस्था से जुड़ा रहूँगा।

भारत यात्रा - दिल्ली शहर

नमस्ते, मेरा नाम रिदम पुरिल है। मैं हिंदी यू.एस.ए. में कम्युनिटी मिडिल प्लेंसबोरो स्कूल में पढ़ता हूँ। मैं प्लेंसबोरो हिंदी स्कूल में उच्चस्तर-२ कक्षा का छात्र हूँ। मुझे गाना सुनना और गाना गाना बहुत अच्छा लगता है।

आज मैं आपको अपनी भारत यात्रा के बारे में बताना चाहता हूँ। मुझे गर्व है कि मुझे हिंदी यू.एस.ए. की भारत यात्रा के लिए चुना गया। इस यात्रा के दौरान हमारा समूह जिसमें १२ बच्चे और २ शिक्षक थे, भारत के बहुत सारे स्थानों पर घूमने गया।

मुझे भारत यात्रा में दिल्ली शहर घूमने में बहुत मजा आया। इस यात्रा के आखिरी चार दिनों में हम दिल्ली में रहे। दिल्ली में रहने का अनुभव मुझे बहुत यादगार लगा क्योंकि दिल्ली एक बहुत बड़ा और व्यस्त शहर है और दिल्ली की सबसे अच्छी बात यह है कि सभी लोग बहुत मिलनसार हैं। शायद इसीलिए इसे दिल वालों की दिल्ली भी कहा जाता है।

हम पहले दिन आगरा से दिल्ली पहुंचे जहाँ हम ताज महल देखकर आये थे और हम सब लोग बहुत थके हुए थे, इसलिए उस दिन तो हम बस होटल में ही रहे जहाँ हमने आपस में बहुत सारी बातें की और दूरदर्शन देखा। इसके बाद हम सब थके होने के कारण जल्दी ही सो गए।

दूसरे दिन हम सब दिल्ली दर्शन के लिए पूरे तैयार थे। आज का कार्यक्रम अक्षरधाम देखने का था। यही वह दिन था जब हम श्री बाबा मौर्य जी से मिले। बाबा जी से मिलकर हम सब को और मुझे भी बहुत अच्छा लगा। वे हमारे साथ एक बहुत अच्छे दोस्त की तरह रहे और हमको उन्होंने बहुत सारा ज्ञान भी दिया, और साथ ही साथ हम सब ने उनके साथ बहुत मजा भी किया। बस में हमारे साथ उन्होंने अंताक्षरी भी खेली और हमने उनके साथ बस से उतर कर कबड्डी भी सीखी और खेली। हमने अक्षरधाम में बहुत सारे मंदिर देखे और मंदिर में मूर्तियां भी देखीं। मुझे अक्षरधाम में सबसे अच्छा कार्यक्रम जल और प्रकाश का प्रदर्शन लगा। संगीत के साथ पानी का चलना बहुत मजेदार था। यह सब देखकर मजा आ गया।

हमारी दिल्ली यात्रा के तीसरे दिन हमारा एक साक्षात्कार था। सबसे पहले हम आकाशवाणी भवन गए, जहाँ हमने रेडियो पर कई प्रश्नों के उत्तर दिए और कई सारे श्लोक भी बोले। सारे बच्चे बहुत खुश थे। हिंदी में साक्षात्कार बहुत अच्छा रहा और हम सबको बहुत गर्व हुआ। इसके बाद हमें एक और साक्षात्कार पर जाने का मौका मिला। हम सब मिलकर दूरदर्शन के लोकसभा टीवी के स्टूडियो में गए। वहाँ पर हम श्री राम देव श्रेष्ठ जी से मिले, जिन्होंने हमारा साक्षात्कार लिया। हमने यहाँ पर हिंदी में गाने गाये और कई प्रश्नों के उत्तर भी दिए। कई बच्चों ने श्लोक सुनाये और कई बच्चों ने हिंदी में कविताएँ भी सुनायीं। मुझसे पूछा गया कि मैं हिंदी का प्रयोग कैसे करता हूँ तो मैंने कहा कि मैं भारत में अपने रिश्तेदारों से बात करने के लिए हिंदी का प्रयोग करता हूँ और कभी-कभी हिंदी में पत्र भी लिखता हूँ। यह बहुत अच्छा दिन रहा क्योंकि इसके बाद सब इंडिया गेट भी घूमने गए और फिर अपने होटल वापस आ गए।

चौथा दिन भी बहुत ही अच्छा और सुखमय था क्योंकि इस दिन हमको स्टेज पर जाकर अपनी प्रतिभाएं दिखाने का मौका मिला। इस दिन हम सब मिलकर एन.सी. जिंदल पाठशाला गए जहाँ पर हमने अपनी कविताएँ, भजन और श्लोक वहाँ के छात्रों और शिक्षकों को सुनाए। मैंने तुलसीदास रचित भजन "ठुमक चलत राम चन्द्र" गाया और सब लोगों ने मिलकर इसका आनंद भी उठाया। मैं बहुत खुश था क्योंकि भजन सभी को पसंद आया। इस दिन हम सभी एक और जगह गए जिसका नाम किंगडम ऑफ ड्रीम्स था। वहाँ पर हम सब ने भारत की कई सारी जगह देखीं और बहुत सारी ख़रीददारी की। हमने वहाँ रात का खाना भी खाया। मैंने हैदराबाद की बिरयानी खायी जो बहुत ही स्वादिष्ट थी। इस दिन शाम को नव वर्ष मनाने के लिए हम सब बच्चे बहुत देर तक जागते रहे और बहुत सारी मिठाइयां खाकर खूब मजा किया।

चांदनी चौक

दिल्ली में पाँचवाँ दिन भी बहुत मजेदार रहा। इस दिन हम सब दिल्ली के सबसे बड़े और व्यस्त बाजार "चांदनी चौक" गए। हम रिक्शे में बैठकर हल्दी राम पहुंचे, जहाँ जाकर हमने भोजन किया। हल्दी राम का खाना बहुत ही स्वादिष्ट था। हमने पेट भर कर खाया और बहुत मजा आया और फिर बाहर आकर मैंने माता-पिताजी के लिए कुछ खरीददारी भी की। इस दिन हम सब वापस होटल पहुँचे और वहाँ पर अपने रिश्तेदारों से मिले। मैं अपने दादा-दादी, बुआ और भैया से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ। सब लोगों ने मुझे बहुत सारा प्यार दिया। इस दिन की रात में हम वापस अमरीका जाने के लिए हवाई अड्डे पहुंचे। हमने एयर इंडिया से वापसी की यात्रा पूरी की। मैं बहुत खुश हूँ कि मुझे इस भारत यात्रा पर जाने का अवसर मिला और मैं हिंदी यू.एस.ए. का बहुत आभारी हूँ कि मुझे इस यात्रा पर जाने का मौका दिया। यह भारत की यात्रा मुझे बहुत अच्छी लगी और यदि मौका मिला तो मैं इस यात्रा पर फिर से जाना चाहूँगा।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई भारत की वीर नारियों में एक नारी थीं। उन्होंने बड़ी वीरता से झाँसी की अंग्रेज़ों से रक्षा की। वे अपने छोटे बेटे दामोदर को अपनी पीठ पर बाँध कर युद्ध करने गयीं। उन्होंने बड़ी सख्ती से अँग्रेज़ों से कहा, “मेरी झाँसी नहीं दूँगी”। वे अंग्रेज़ों से इतनी वीरता से लड़ीं की सभी देखते रह गये। उन्होंने स्वतंत्रता के लिए अपना बलिदान दिया। उनकी इसी वीरता के कारण झाँसी की रानी मेरी आदर्श हैं।

आरती राव, उच्च स्तर–१, साउथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला

भारत यात्रा: एक धरोहर

प्रणय जग्गी

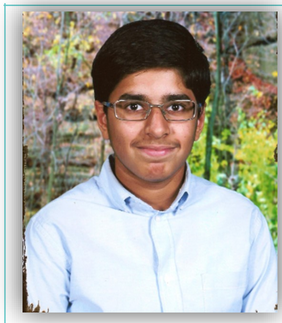

मेरा नाम प्रणय जग्गी है। मैं १३ साल का हूँ और आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं चेरी हिल हिंदी पाठशाला का पूर्व छात्र हूँ और २०१४ से स्वयंसेवक हूँ। स्वयंसेवक का काम करके मुझे बहुत संतुष्टि मिलती है क्योंकि अब मैं अपनी सीखी हुई हिंदी का उपयोग बहुत अच्छे से कर पा रहा हूँ।

पिछले वर्ष हिंदी यू.एस.ए. द्वारा आयोजित पंद्रह दिन की भारत यात्रा के लिए मेरा चयन हुआ था। इस चयन के लिए हमारी लिखित और मौखिक परीक्षा हुई थी। उस समय मेरा ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा था। मैं बहुत बेसब्री से जाने के दिन का इंतज़ार कर रहा था। धीरे धीरे जाने का दिन भी आ गया। जब १८ दिसंबर को मेरे माता पिता एवं छोटा भाई हवाई अड्डे पर मुझे छोड़ने आए तो मन में अजीब सी दुविधा थी। एक तरफ पहली बार अपने माता-पिता से अलग होने का डर और दूसरी तरफ एक ऐसा अद्भुत अनुभव जो मुझे फिर कभी अपने जीवन में नहीं मिलने वाला था।

हमारे इस दल में ९ लड़के, ३ लड़कियां और २ अध्यापक थे। इंदिरा गांधी हवाई अड्डे पर हमारा स्वागत भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद द्वारा बहुत ज़ोर शोर से हुआ। हवाई अड्डे से हम बस में सवार हो कर गुड़गांव के होटल पहुंचे। अगले दिन सुबह हमारी भारत यात्रा का आरम्भ हुआ। सबसे पहले हम राजस्थान की राजधानी जयपुर पहुँचे। शाम को हम चौकीधानी गए। वहाँ पर हमने ऊँट की सवारी की। ऊँट की सवारी में मुझे बहुत मज़ा आया। रात में हम लोगों ने राजस्थानी खाना खाया। खाना जैसे परोसा था, वह मुझे बहुत अच्छा लगा। खाना सूखे पत्तों की थाली में परोसा था और उसमें बहुत तरह के व्यंजन थे जैसे कि दाल बाटी, साग, सब्ज़ी, पापड़ और इमरती। खाना तीखा था पर बहुत स्वादिष्ट था। यह खाना हमने नीचे ज़मीन पर बैठ कर खाया था। उस खाने का स्वाद अभी भी मेरे मुँह में है।

जयपुर के बाद हम उदयपुर गए। वहाँ हम लोग नाथद्वार के मंदिर गए। अगले दिन हम हल्दीघाटी गए। वहाँ पर हमने महाराणा प्रताप का किला देखा और हल्दीघाटी के युद्ध, महाराणा प्रताप और उनके घोड़े चेतक के बारे में पढ़ा। उनकी वीरता की कहानी पढ़ कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। उदयपुर में हम सिटी पैलेस भी गए। सिटी पैलेस एक बहुत सुन्दर और बड़ी इमारत है।

इस यात्रा के पाँचवें दिन हम चितौढ़गढ़ गए। वहाँ पर हम ने चितौढ़गढ़ का भव्य किला देखा और उस किले के इतिहास के बारे में पढ़ा और राणा रतन

सिंह और मुग़ल बादशाह अलाउद्दीन ख़िलजी के युद्ध के बारे में भी जाना। राजस्थान और राजपूत इतिहास के बारे में जानकार मैं बहुत प्रभावित हुआ कि कैसे निर्बल सैन्य शक्ति होते हुए भी हर बार राजपूत अपनी आन के लिए मुग़लों से वीरता से लड़े।

राजस्थान में मैंने यह भी देखा कि वहाँ के लोगों की वेषभूषा बहुत रंगीन है। वहाँ के बाजार भी बहुत रंगीन और सुन्दर लगते हैं। चितौढ़गढ़ में हम मीरा के मंदिर भी गए। यह मंदिर बहुत सुन्दर और बड़ा था। चितौढ़गढ़ के बाद हम रणथंबोर नेशनल पार्क गए जहाँ पर हमने बहुत सारे पक्षी और २ चीते देखे।

रणथंबोर के बाद हम आगरा गए जहाँ हमने आगरा फोर्ट देखा। आगरा फोर्ट में गाइड ने हमें फोर्ट के इतिहास के बारे में बताया। आगरा से हम लोगों ने वहाँ का मशहूर पेठा (मिठाई) भी ख़रीदा। मैं यह सुनकर हैरान हो गया कि इतना स्वादिष्ट पेठा कद्दू सब्ज़ी से बनता है। कहते हैं कि आगरा तीन चीज़ों के लिए मशहूर है - ताज महल, पेठा और वहाँ का नमकीन। आगरे में हमने ताज महल देखा। यमुना नदी के किनारे सफ़ेद संगमरमर पत्थर का बना ताज महल बहुत सुन्दर लगता है।

इस यात्रा में हम लोग मथुरा और वृन्दावन भी गए और वहाँ पर हमने बहुत सुन्दर मंदिर देखे। मथुरा से हम लोगों ने वहाँ के मशहूर पेड़े लिए। पेड़े तो मैंने यू.एस.ए. में भी खाए हैं पर मथुरा के पेड़ों की तो बात ही कुछ और है।

फिर हम लोग ग्वालियर गए जहाँ पर हम लोगों ने वहाँ का किला देखा। किला बहुत बड़ा और सुन्दर था। यात्रा के अंतिम पड़ाव में हम लोग भारत की राजधानी दिल्ली पहुंचे जहाँ पर हम लोगों ने अक्षरधाम मंदिर, क़ुतुब मीनार, इंडिया गेट देखा।

आखिरी दिन हम लोग दिल्ली के प्रसिद्ध चांदनी चौक बाजार गए जहाँ पर हम लोगों ने रिक्शे की सवारी भी की। चांदनी चौक में हम लोगों ने भारत की मशहूर हल्दीराम की दुकान पर दिल्ली की बहुत स्वादिष्ट चाट खायी जैसे कि कचौड़ी, समोसा, पाव भाजी। चाट खा कर तो हम लोगों को मज़ा आ गया।

इस भारत यात्रा में जितनी भी जगह हम लोग गए, मैंने हर जगह के भोजन में, वहाँ के किले, मंदिर और भवनों की वास्तुकला में बहुत विविधता देखी। एक तरफ राजस्थान के भव्य राजपूत किले तो दूसरी तरफ आगरा और दिल्ली की सुन्दर मुग़ल वास्तुकला। इतनी विभिन्नता होते हुए भी भारत एक संगठित देश है। यह भारत यात्रा मेरे जीवन की सबसे यादगार यात्रा रहेगी। मैं उन सब लोगों को धन्यवाद देता हूँ जिनकी वजह से यह यात्रा संभव हो पायी। मैं हिंदी यू.एस.ए. का बहुत बहुत आभारी हूँ।

नरेंद्र दामोदरदास मोदी

नरेंद्र दामोदरदास मोदी, भारतीय जनता पार्टी के एक नेता, २६ मई २०१४ को भारत के १५वें प्रधानमंत्री बने। वे २००१ से २०१४ तक गुजरात के मुख्यमंत्री थे। मोदी जी का मुख्य ध्यान सुधार और आधुनिकीकरण पर था। ट्रेन स्टेशन पर चाय बेचने वाला एक लड़का आज भारत का प्रधानमंत्री बन गया है! वे मुझे मेरा काम सफलतापूर्वक करने के लिए प्रेरित करते हैं, इसीलिए वे मेरे आदर्श हैं।

शैली गोरडिया, उच्च स्तर-१

साउथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला

भारत - एक खोज

अदिति विजयवर्गीय

मैं अदिति विजयवर्गीय चेस्टरफ़ील्ड हिन्दी पाठशाला में उच्चस्तर-१ कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे हिन्दी पढ़ना, लिखना और बोलना अच्छा लगता हैं। मैं दिसम्बर १८, २०१५ को हिन्दी यू.एस.ए. की ओर से पन्द्रह दिन के लिए भारत यात्रा पर गई थी। यह यात्रा मैंने दो शिक्षकों और ग्यारह विद्यार्थियों के साथ की। इस यात्रा में हमने चार राज्यों को देखा, जिसमें हमने दिल्ली, जयपुर, उदयपुर, ग्वालियर, चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा, हल्दीघाटी, वृंदावन, रणथम्बोर और आगरा को देखा। इस यात्रा में हमें कई यादगार अनुभव मिले। हमें लोकसभा दूरदर्शन, आकाशवाणी रेडिओ में साक्षात्कार देने का अनुभव मिला। साथ ही हमने भारत की दो पाठशालाओं को देखने का अवसर मिला। हमने कई ऐतिहासिक महल, किले, इमारतें भी देखीं और कई तरह का स्वादिष्ट भोजन किया। भारत को कई पहलुओं से देखा, जाना और समझा।

इस भारत यात्रा में मैंने भारत को हर दृष्टिकोण से जाना। मैंने जाना कि असली भारत बॉलीवुड चलचित्रों में दिखाए रूपों से बहुत अलग है। मैंने भारत का सुंदर और वास्तविक रूप देखा और अनुभव किया। मेरी यह भारत यात्रा भी बहुत विशेष अनुभवों से भरपूर रही। अगर मैं अकेले ही जाती तो इस यात्रा जैसा आनंद मुझे कभी नहीं हो पाता। कहा जाता है कि जो भी होता है अच्छा होता है। इस यात्रा में जयपुर जाते समय बस का ख़राब होना और ग़लत रास्ते पर जाना जैसी घटनाओं का अनुभव किया। परन्तु हमने इसी समय भारत का सबसे अच्छा रूप देखा। हमारी बस के ग़लत मोड़ लेने के कारण हमें राज़ अंकल जी की पाठशाला को देखने और विद्यार्थियों से मिलने पर हमने देखा कि वे लोग कैसे कम से कम सुविधाओं के होते हुए भी अच्छी पढ़ाई करते हैं।

हमने यह भी जाना की वह पाठशाला विद्यार्थियों के साथ-साथ गाँव वालों के लिये भी गर्व का कारण है। विद्यार्थी अपनी पाठशाला में वॉलीबॉल खेल खेलते हैं, जिसमें पाठशाला के विद्यार्थियों के साथ-साथ गाँव के लोग भी दिन में खेल सकते है| यह जानकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि पाठशाला केवल अपने विद्यार्थियों के लिए ही नहीं अपितु गाँव के लोगों के बारे में भी सोचती है| मुझे नहीं लगता कि यह किसी बड़ी पाठशाला में ऐसा होता है। इस दौरान, मैं और मेरा साथी ईशान पाठशाला के कुछ विद्यार्थियों से मिले और बातचीत की। हमने उनके साथ आजकल चल रही प्रथा के अनुसार सेल्फ़ी भी ली। इसी बीच मुझे यह भी देखने को मिला कि मेरी उम्र के लोगों में फिल्मों का कितना प्रभाव पड़ा है, जब पीछे से किसी विद्यार्थी ने फिल्म बजरंगी भाईजान का गाना गाया "सेल्फ़ी ले रे"।

जैसे कि कहा जाता है कि हमें किसी के बारे में सही उस वक्त मालूम पड़ता है जब हमें किसी की जरूरत होती है। मुझे भारत के लोगों के मिलनसार और सहायक स्वभाव के बारे मे तब जानने को मिला जब मेरा चश्मा अचानक टूट गया और मैं परेशानी मे आ गई। तब योगिता आंटी जी के पारिवारिक मित्र (आदित्य जी का परिवार) ने पूरे जतन से कोशिश कर मेरा चश्मा मात्र २० मिनट में ठीक करा लिया। यह देख कर मेरा हृदय बहुत प्रसन्न हुआ कि उन्होंने कैसे

"अतिथि देवो भव" का सही उदाहरण दिया। मैंने भारत में संयुक्त परिवार भी देखा। जब हम आदित्य जी के घर खाना खाने गए तब उन्होंने और उनके परिवार ने हमारा बहुत प्यार और अपनापन से स्वागत किया। हमें उन्होंने अपने घर जैसा अनुभव कराया और जैसे कि मैं उनके घर का ही एक सदस्य हूँ।

मैंने वहाँ पर खरीददारी का भी बड़ा आनंद लिया। वहाँ पहली बार मैंने भाव तोल करना भी सीखा। कैसे दुकानदार अपना सामान बेचने के लिए हर प्रयास करता है। वह कैसे बात ही बात करके आपसे रिश्ता बनाता है, कैसे वह आपको भावुक करता है, कैसे वह धार्मिक बात करके भी आपको सामान खरीदने के लिए प्रेरित करता है। हमें यात्रा के दौरान कई बार खरीददारी करने का अवसर मिला। मैं अपने इस नए तरीके से खरीददारी करने में और निपुण हो गई, जैसे कि मैं वहीं की रहने वाली हूँ। इस सब का मुझे सबसे अधिक फायदा यह हुआ कि मैं अपनी हिंदी बोलने मे और सुधार कर पाई।

जब हम वृन्दावन गए तब मैंने यह देखा कि कैसे भारतीय लोग भगवान के दर्शन के लिए लम्बी कतार में खड़े रहते हैं। साथ ही मैंने यह देखा कि कैसे कुछ लोग भगवान के विशेष दर्शन के लिए पुजारी को पैसे देते हैं। वे लम्बी कतार को काट कर उन लोगों को सबसे आगे ले जा रहे थे। मैं और मेरे साथियों ने इसका जम कर विरोध किया और हमने उन्हें अपने से आगे जाने से रोक लिया। मंदिर के अंदर धक्का-मुक्की भी होती है, परन्तु सभी लोगों का ध्यान भगवान के दर्शन में होता है।

मुझे भारत के इतिहास को भी सीखने का मौका मिला। हमने उदयपुर के महल और ग्वालियर के महल को देखा। हमने चित्तौड़गढ़, ग्वालियर, और आगरे का किला भी देखा। हमने हल्दीघाटी म्यूजियम में महाराणा प्रताप के बारे मे सीखने को मिला। कैसे उन्होंने अपने देश के मान की रक्षा के लिए लड़ाई की। उनके घोड़े का नाम चेतक था जिसने हल्दीघाटी के युद्ध में उनकी जान भी बचाई थी। वे अपने शत्रु पर कभी भी पीछे से वार नहीं करते थे। मुझे शूरवीर झाला के बारे में भी सीखने को मिला।

भारत यात्रा के दौरान हमने बहुत प्रकार के व्यंजन खाए। हमने चौकीढाणी, किंगडम ऑफ़ ड्रीम, बीकानेर हल्दीराम जैसी जगहों पर भी खाना खाया। मुझे विशेष कर दाल बाटी, चूरमा लड्डू, जलेबी, डोसा-साम्भर और समोसा बहुत पसंद आया। हमने वहाँ पर चाय, लिम्का, लस्सी, और जूस का भी आनंद लिया।

भारत में हम रणथम्बोर नेशनल पार्क में भी गए। वहाँ हम खुली जीप से जंगल मे घूमे। हमने वहाँ शेर, शेरनी और उनका परिवार देखा। साथ ही हमने हिरण, मोर और कई तरह की रंगबिरंगी चिड़ियाँ भी देखीं। यह एक बहुत ही अच्छा अनुभव था।

इस भारत यात्रा की यादें हमेशा मेरे दिल मे रहेंगी। मैंने इस यात्रा के दौरान अपने ११ मित्र भी बनाए। साथ ही योगिता मोदी आंटी जी को माँ और राज मित्तल अंकल जी को पिता की तरह पाया। भारत के बारे में मैं यही कहूँगी कि वह एक बहुत ही सांस्कृतिक धनी देश है। वहाँ की खूबसूरती, इतिहास, संस्कृति, खान-पान, लोगों का अपनापन देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा और मैं वहाँ भविष्य में भी जाना चाहूँगी और भारत के बारे में और भी सीखना चाहूँगी। यह भारत यात्रा मेरी अन्य भारत यात्रा में सबसे विशेष रही।

सभी कठिन कार्यों में , एक जो सबसे कठिन है वह है एक अच्छा शिक्षक बनना

अक्षरधाम

मेरा नाम समीक्षा खेतान है और मैं सोलह साल की हूँ। मै अभी JP Stevens में ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। पिछले आठ सालो से मैं एडिसन हिंदी पाठशाला से जुड़ी हुई हूँ। २०१२ में मैं स्नातक हुई थी और मैं पिछले तीन सालों से मध्यमा-२ की कक्षा मे मदद करती हूँ। इस दौरान मैंने हिंदी महोत्सव और कविता पाठ प्रतियोगिता में भाग लिया है और इनमें सहयोग भी किया। मुझे भारतीय नृत्य में विशेष रुचि है और मैं पिछले नौ सालो से गुरु रीटा शर्मा से कत्थक सीख रही हूँ।

अठारह दिसंबर को मैं एक अविस्मरणीय यात्रा पर पन्द्रह दिनों के लिये ग्यारह छात्रों, योगिता आंटी, और राज अंकल के साथ जे.ऍफ़.के हवाई अड्डे से भारत के लिये उड़ी थी। दो जनवरी को मैं भारत से, ग्यारह नए दोस्तों के साथ और मन में भारत के प्रति एक नई सराहना लिये, वापस आई थी। इस अद्भुत अनुभव के लिये मैं हिन्दी यू.एस.ए. की हमेशा आभारी रहूँगी। इस यात्रा को सफल बनाने में दोनों देशों के कई लोगों की महीनों की मेहनत और सहयोग था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे ऐसी यात्रा पर जाने का मौका मिलेगा, और जब यह मौका मिला और हमारी तैयारी शुरू हुई थी तो मैंने कभी नहीं सोचा था की मुझे यह यात्रा इतनी पसंद आयेगी। बस पन्द्रह दिनों में हम सब ने दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और हरियाणा घूमा। मेरी पिछली ग्यारह भारत यात्राओं में मैंने काफी सारे स्थान देख लिये थे, पर इस समूह के साथ मैंने हर स्थान को एक नए दृष्टिकोण से देखा। मैंने सब बच्चों और आंटी और अंकल से बहुत कुछ सीखा। मुझे हर एक स्थान में मज़ा आया और हर जगह में मैंने भारत के इतिहास और संस्कृति के बारे में कुछ नया सीखा।

मुझे भारत में सभी स्थान बहुत अच्छे लगे, विशेषकर दिल्ली में स्थित अक्षरधाम। अक्षरधाम एक ऐसी जगह है जिसकी कहानी दिलचस्प है, दृश्य खूबसूरत है, और प्रदर्शनियाँ मजेदार हैं। “स्वामीनारायण अक्षरधाम काम्प्लेक्स” का सबसे महत्वपूर्ण और सबसे सुन्दर हिस्सा उसका मंदिर है जो ४३ मीटर ऊंचा, ९६ मीटर चौड़ा, और १०९ मीटर लम्बा है। इस मंदिर का आर्किटेक्चर शानदार है। मंदिर के अंदर २३४ लम्बे नक्काशीदार खम्भे हैं, और मंदिर के हर भाग में है एक कहानी, दर्शन का मौका, या भगवान स्वामीनारायण के जीवन का एक हिस्सा देखने के लिये। अक्षरधाम मंदिर का बाहर का दिखावा एक पारंपरिक पत्थर के मंदिर के जैसा है जिसको मंडोवर कहते हैं। स्वामीनारायण मंदिर का मंडोवर ७.६२ मीटर ऊंचा और १८६ मीटर लम्बा है, जो पिछले ८०० सालो में भारत का सबसे बड़ा मंडोवर है। सच में यह मंदिर भारत की एक मुख्य कार्यसिद्धि है।

अक्षरधाम की बाकी सब प्रदर्शनियाँ भी अद्वितीय और शैक्षणिक हैं, और सब में कला,

विज्ञान, संस्कृति, और आध्यात्मिकता का एक मिलाप है। मुझे फिल्म और नाव की सवारी में सबसे मज़ा आया क्योंकि दोनों चीज़ें अलग सी थीं। फिल्म हमें छोटे नीलकंठ वर्णी के साथ-साथ उसके भारत भ्रमण पर लेकर गयी थी, और दिलचस्प होने के अलावा यह कहानी धर्म और विश्वास की ऊर्जा की एक अच्छी स्मरण-पत्र थी। एक अन्य चीज़ इस फिल्म के बारे में जो मुझे पसंद आयी थी है वह है कमरा जिसमें फिल्म दिखाई गयी थी - कुर्सियाँ बहुत आरामदेह थीं और स्क्रीन बहुत बड़ी थी, ३० मीटर चौड़ी और २० मीटर लम्बी। फिल्म के बाद हम सब ने नाव की सवारी की। यह बारह मिनट की सवारी एक जलयात्रा थी जिसमे भारत का पुराना इतिहास दिखाया गया था। मुझे भारत के शानदार इतिहास को प्रकट करने का यह तरीका बहुत भिन्न और मनोरंजक लगा।

मेरे लिये सबसे आकर्षक हिस्सा अक्षरधाम का है। वहाँ पानी और रोशनी का २४ मिनट का प्रदर्शन बहुत आश्चर्यजनक था। अंधेरा होने पर हम सब एक साथ यह प्रदर्शन देखने के लिए बैठे थे, और हमारे आस-पास में करीब १००० लोग थे। पानी के प्रदर्शन ने “केन उपनिषद्” से एक कहानी दिखाई। वह कहानी एक तालाब के पानी से छोटे बच्चों का खेल और उनकी देवताओं से मुठभेड़ के बारे में थी और बहुत हास्यास्पद भी थी। कहानी से ज्यादा मुझे पानी, ध्वनि, और बिजली का मिलाप पसंद आया। प्रदर्शन से मैं मंत्रमुग्ध हो गयी थी। आज तक मैंने बहुत सारी ऐसी प्रदर्शनियाँ देखी हैं, पर यह प्रदर्शन निश्चित रूप से सबसे अच्छा था।

अक्षरधाम सच में एक शानदार स्थान है। यह इतना बड़ा है कि आप यहाँ पूरा दिन भी बिता सकते हैं। अक्षरधाम में हमने बाबा मौर्य जी के साथ समय बिताया, और उनके साथ अंताक्षरी, कबड्डी और दूसरे प्रकार के खेल खेले। यह सब खेल खेलने में हमें बड़ा मज़ा आया क्योंकि बाबा मौर्य जी एक बहुत ओजस्वी और हंसमुख इंसान हैं। अगर मुझे अक्षरधाम दूसरी बार जाने का मौका मिलेगा तो मैं जाने के लिये पक्का तैयार रहूँगी। मुझे शुरू से ही भारत के लिये एक प्यार था, पर अब इस यात्रा के बाद मुझे ध्यान आया कि भारत सच में एक खूबसूरत और ऐतिहासिक देश है जिसमें बहुत सारे अच्छे स्थान देखने के लिये हैं, अच्छे लोग मिलने के लिये हैं, और विभिन्न प्रकार का भोजन खाने के लिये हैं। इस यात्रा ने मुझे एक और चीज़ भी दी थी - दूसरे बच्चों से मिलने का एक मौका जिन्हें हिंदी भाषा और संस्कृति से मेरे जैसा ही प्यार है। हम सब ने रोज एक साथ घूमने, खाने, बाते करने, और बस में बैठने के बीच में एक अच्छी, ज़िन्दगी-भर की दोस्ती बना ली। इसके कारण मैं इस यात्रा को कभी नहीं भूल सकती।

भारत भ्रमण
लोक सभा टीवी साक्षात्कार

नमस्ते, मेरा नाम आयुष विक्रम है। मैं १४ वर्ष का हूँ और प्लेन्सबोरो हिन्दी पाठशाला में उच्चस्तर-२ में पढ़ता हूँ। पिछले दिसंबर में मुझे एवं ११ बच्चों को हिंदी यू.एस.ए. की ओर से भारत यात्रा पर जाने का अवसर मिला था। हमने भारत में १० प्रसिद्ध शहरों का भ्रमण किया था। वे शहर थे: दिल्ली, गुड़गॉव, जयपुर, उदयपुर, चित्तौड़ गड़, नाथ द्वारा, रणथम्भोर, आगरा, मथुरा, वृनदावन, तथा ग्वालियर। हमने सब शहरों में ऐतिहासिक स्थानों, मंदिरों, और विशाल जगहों को देखा। भ्रमण के दौरान हमने बहुत सम्मानित लोगों से मुलाकात की, जैसे कवि, लेखक, पंडित, अध्यापक, प्रधानाचार्य, TV होस्ट एवं सरकारी अफ़सर। हम सब ने दो भारतीय पाठशालाओं का भ्रमण भी किया, जिसके दौरान हमने बहुत से छात्रों के साथ वार्तालाप भी किया। इस यात्रा के दौरान, सामान की खरीदारी करते समय और लोगों से बात करते समय हम सब को हिन्दी भाषा का प्रयोग करने का अवसर मिला।

LOK SABHA
अमेरिका में हिन्दी
अमेरिका में हिन्दी
मार्च 2016: न्यू जर्सी में आयोजित होना है, अमेरिका में तीसरा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

लोक सभा टीवी, दिल्ली

दिल्ली के आकाशवाणी भवन में हम सब ने आकाशवाणी रेडियो पर साक्षात्कार दिया, जिसके दौरान हमने अपने यात्रा के अनुभव बताये थे। उसके बाद सभी छात्रों ने अपनी कुछ प्रतिभा प्रस्तुत की, जैसे कविता, गीत, और श्लोक। राज जी और योगिता जी ने हिंदी यू.एस.ए. संस्था के बारे में भी बातें कीं। हमने बताया कि अमेरिका में हिंदी कैसे पढ़ते हैं। साक्षात्कार के बाद हम आकाशवाणी डायरेक्टर से मिले और यात्रा के बारे में बात की। उसके बाद हम सब आकाशवाणी भवन से संसद भवन चले गए।

संसद भवन में हमारी सुरक्षा-जांच हुई। फिर हमने भोजन करने के बाद लोक सभा टीवी के स्टूडियो का भ्रमण किया। हम सब स्टूडियो देख कर हैरान रह गये, क्योंकि हम सब ने पहले टीवी स्टूडियो नहीं देखा था। लोक सभा टीवी साक्षात्कार में होस्ट ने हम सब को अमेरिका में हिंदी सीखने एवं भारत यात्रा के अनुभव के बारे में प्रश्न किया। होस्ट आश्चर्यचकित हो गये, क्योंकि हम सब अमेरिका में रहते हैं, लेकिन हम सब हिंदी में प्रश्न के उत्तर दे रहे थे। उसके बाद कुछ बच्चों ने हिंदी में कविता सुनाई, कुछ बच्चों ने वेद मंत्रों का उच्चारण किया, तथा कुछ बच्चों ने भजन सुनाये। सभी दर्शक बहुत खुश थे, क्योंकि हम सब बच्चे भारत की संस्कृति नहीं भूले थे। हमारे साथ एक कवि तथा एक कवियत्री भी उपस्थित थीं, और वे भी सुन कर बहुत प्रसन्न हो गये।

टी.वी तथा रेडियो पर आना बहुत ही अनोखा अनुभव था। वापस आने के बाद मेरे सभी मित्र बहुत

भारत देश के नए वर्ष के त्यौहार

मेरा नाम तान्या सिंह है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं पिछले सात साल से हिंदी यू.एस.ए. की मोनरो पाठशाला में हिंदी सीख रही हूँ।

भारत देश में तरह-तरह की संस्कृतियाँ हैं। इन भिन्न प्रकार की संस्कृतियों में विभिन्न तरीकों से नया साल बनाया जाता है, जैसे कि बैसाखी, युगादी, पोंगल बैसाख और नवरेन।

बैसाखी पंजाबियों का नया साल है। यह नए साल और खालसा पंथ की स्थापना के लिए मनाया जाता है। पहले बैसाखी पंजाब में फसलों के त्यौहार की तरह मनाया जाता था। अब यह सिखों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार की तरह मनाया जाता है। हमारा परिवार बैसाखी बहुत धूमधाम से मनाता है क्योंकि मैं एक सिख हूँ। इस साल बैसाखी अप्रैल में मनाया जाएगा।

युगादी तेलुगु भाषी लोगों का नया साल है। इस त्यौहार में छः स्वाद के भोजन खाए जाते हैं। ये छः स्वाद हैं, खट्टा, मीठा, नमकीन, कड़वा, चटपटा, और तीखा। ये छः स्वाद छः प्रकार की अनुभूतियों को दर्शाते हैं जैसे कि वितृष्णा, ख़ुशी, डर, दुःख, गुस्सा और आश्चर्य। इस साल युगादी अप्रैल आठ को मनाया जाएगा।

पोंगल बैसाख बंगालियों का नया साल है। बांग्लादेश और भारत दोनों ही देशों में यह त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह त्यौहार तरह-तरह के रंगों, मस्ती, भोज्य पदार्थों तथा संगीत से मनाया जाता है। यह त्यौहार पूरे एक दिन तक मनाया जाता है। इस साल पोंगल बैसाख बांग्लादेश में चौदह अप्रैल और भारत में पंद्रह अप्रैल को मनाया जायेगा।

नवरेन कश्मीर का नया साल है। यह चैत्र मास के पहले दिन मनाया जाता है। यह त्यौहार पांच हजार उन्यासी साल पहले सप्तरिशी के समय में देवी शारिका के निवास के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। नवरेन हमेशा मार्च या अप्रैल के महीने में मनाया जाता है। इस साल नवरेन पंद्रह अप्रैल को मनाया जाएगा।

जैसे कि आपने देखा भारतवर्ष में तरह-तरह से नया साल मनाया जाता है। नए साल के ये सभी त्यौहार चन्द्र पंचांग के हिसाब से काफी पास-पास ही मनाये जाते हैं।

लोक सभा टीवी साक्षात्कार...

हैरान हो गए और मुझे बधाई दी। हिंदी यू.एस.ए. द्वारा आयोजित १५ दिन की यह अनोखी भारत यात्रा मेरे मन में सदा स्मरणीय रहेगी। मैं अंत में देवेन्द्र जी, रचिता जी, योगिता जी और राज जी, जिन्होंने हमें भारत भ्रमण का यह सुनहरा अवसर दिया तथा सभी स्वयंसेवक जिन्होंने हमारी भारत में मदद की, को दिल से धन्यवाद देता हूँ।

झीलों और महलों का शहर - उदयपुर

मेरा नाम ईशानी रंजन है। मैं १४ साल की हूँ। मैंने आठ साल पहले हिंदी यु.एस.ए. पाठशाला में हिंदी सीखना शुरू किया था, और पिछले दो साल से मैं एक स्वयं सेवक हूँ। हिंदी यु.एस.ए. मेरी ज़िन्दगी का एक बड़ा हिस्सा बन चुका है। मुझे हिंदी कविता सुनाना बहुत ही पसंद है, और मैं हर एक साल, हिंदी महोत्सव के कविता पाठ प्रतियोगिता में भाग लेती थी। हिंदी सीखने के अलावा मुझे वायलिन बजाना, फोटोग्राफी और टेनिस खेलना भी बहुत पसंद है।

भारत भ्रमण का यह तीसरा दिन था और हम झीलों और महलों के शहर उदयपुर पहुंच चुके थे। यह राजस्थान का एक बहुत ही शानदार शहर है जिसका इतिहास बहुत ही गौरवशाली है। सुबह के ११ बजे थे और हम उदयपुर की सैर पर निकल पड़े थे। हमारा पहला पड़ाव सहेलियों की बाड़ी था। नाम ही इतना रोचक था कि इसके बारे में जानने की बहुत ही उत्सुकता थी। हमारे गाइड ने हमें बताया कि महाराणा संग्राम सिंह ने रानी और उनकी ४८ सहेलियों के लिए यहाँ बहुत ही खूबसूरत गार्डन बनवाया था। शानदार वास्तुकला से बने इस गार्डन में कई फव्वारे और संगमरमर से बनी हाथियों की मूर्तियाँ है जो हर पर्यटक का मन मोह लेती हैं। इस दिन का दूसरा पड़ाव था पिछोला लेक। पिछोला लेक एक आर्टिफीसियल झील है जिसे १३६२ में बनाया गया था। पिछोला लेक के साथ ही स्थित है एक भव्य महल, जिसे लोग सिटी पैलेस के नाम से जानते हैं। पिछोला लेक और उसके पास के पहाड़ों की खूबसूरती देखकर महाराणा उदय सिंह ने इस महल का निर्माण करवाया था। अंदर जाते ही एक बहुत ही शांत वातावरण मिलता है और ऐसा लगता है कि शहर के शोर गुल से मीलों दूर आ गए हैं। जैसे-जैसे आप महल की ऊपरी मंज़िलों पर पहुंचते जाते हैं, पिछोला झील और उदयपुर शहर का नजारा और भी खूबसूरत होता जाता है। लेक पिछोला और सिटी पैलेस घूमने के लिए हमने शाम का वक्त बिताया था। सूर्यास्त के वक्त आसमान के लाल, नारंगी, पीले और तरह-तरह के रंगों की किरणें जो पहाड़ों से होकर लेक पिछोला पर गिरती है, वह दृश्य बहुत ही मन-मोहक होता है।

अब बारी थी एक विशेष यात्रा की जिसे हमने ऑटो रिक्शा में बैठकर पूरा किया। उदयपुर की छोटी गलियों से होते हुए हमारा ऑटो शिल्पग्राम पहुंच गया। शिल्पग्राम एक ऐसा गाँव है जहाँ पश्चिम भारतीय हैंडीक्राफ्ट्स मिलते है, जैसे कठपुतली गुड़ियाँ, तलवारें, गहने और ऐसी कई सारी चीज़ें। हम पहली बार अपने माता-पिता के बिना खरीददारी कर रहे थे और इस वजह से शिल्पग्राम में हमने थोड़ी बहुत बार्गेनिंग सीखी। शिल्पग्राम में घूमते समय हमने बहुत सारे सजे सजाये ऊँट देखे। एक घंटे के बाद हम वापस अपने होटल जाने की तैयारी कर रहे थे, लेकिन वापस जाने से पहले हम सब ने रबड़ी पी। ठंडे-ठंडे मौसम में गरम-गरम रबड़ी पीने में बहुत ही मज़ा आया। इस तरह से हमने एक बहुत ही व्यस्त और मज़ेदार दिन बताया। अलविदा उदयपुर फिर किसी दिन और फुर्सत में मिलेंगे।

धन्यवाद

२०१५-१६ की हिंदी यू.एस.ए. के छात्रों की भारत यात्रा को सफल बनाने में निम्न महानुभावों का विशेष सहयोग रहा। इनके सहयोग के बिना इस यात्रा की सफलता संभव नहीं थी। हृदय से आप सभी का असीम धन्यवाद।

श्री राजेश चेतन, श्री गजेन्द्र सोलंकी, श्री राज कुमार अग्रवाल, सुश्री बलजीत कौर,
श्री दिग्विजय जैन, श्री संजय प्रभाकर, सुश्री सीमा गुप्ता (लोकसभा टीवी),
श्री राम श्रेष्ठ (लोकसभा टीवी), श्री जगदीश मित्तल, बाबा सत्यनारायण मौर्या,
श्री थापियाल (आल इंडिया रेडियो - आकाशवाणी),
श्री दिलीप पाण्डेय (N.C. Jindal High School),
श्री सुनील व्यास - प्रिंसिपल, हाई स्कूल, बिजयनगर,
डॉ. निधिषा अग्रवाल - ग्वालियर, श्रीमती श्यामा अग्रवाल - ग्वालियर,
श्री शशांक गोयल - आगरा, श्री अश्विनी पलोड़ - चित्तोर्गढ़, श्री राहुल मोदी - गुडगाँव

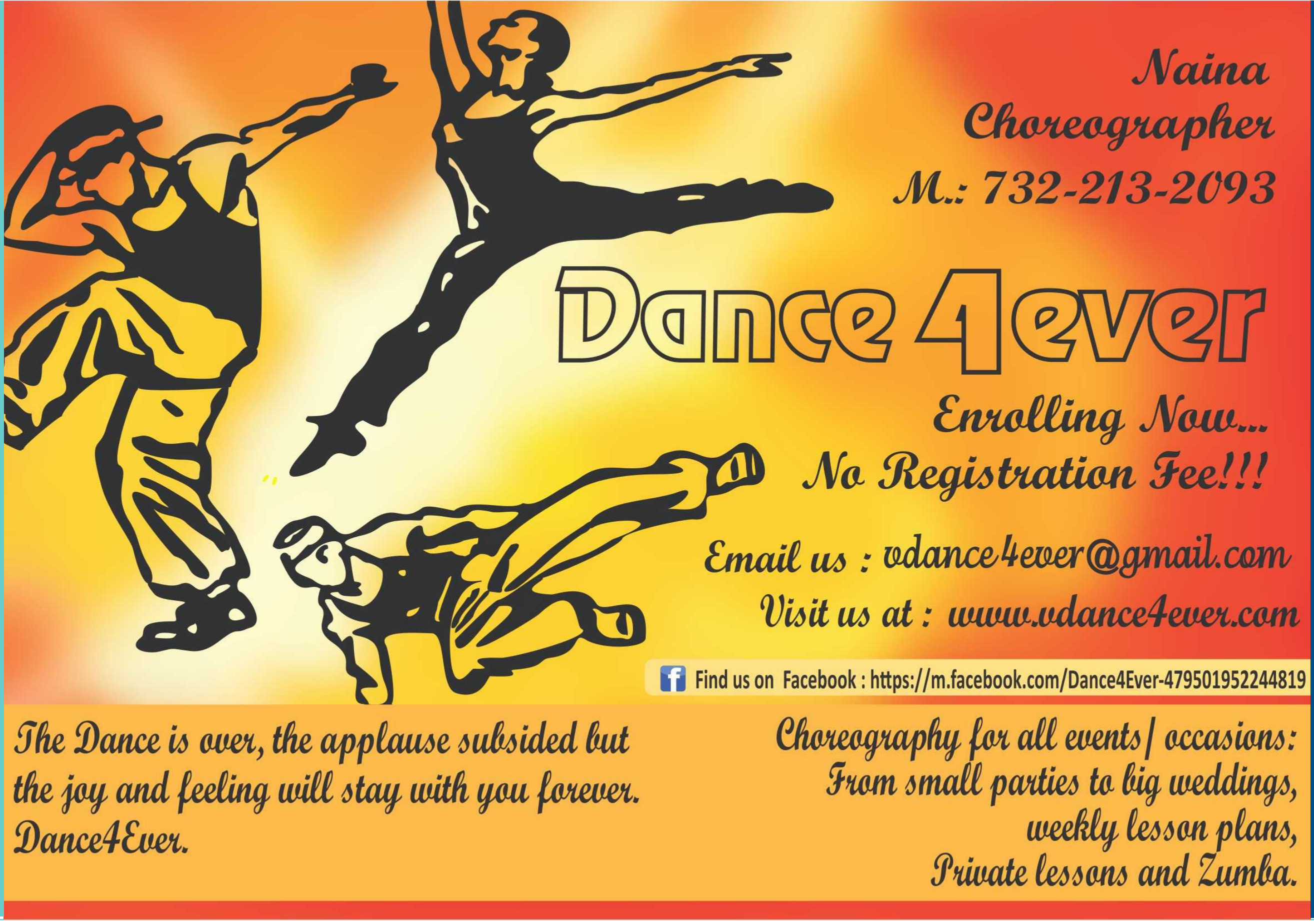
Naina
Choreographer
M.: 732-213-2093

Dance 4ever

Enrolling Now...
No Registration Fee!!!

Email us : vdance4ever@gmail.com
Visit us at : www.vdance4ever.com

Find us on Facebook : https://m.facebook.com/Dance4Ever-479501952244819

The Dance is over, the applause subsided but
the joy and feeling will stay with you forever.
Dance4Ever.

Choreography for all events/ occasions:
From small parties to big weddings,
weekly lesson plans,
Private lessons and Zumba.

लेकिन

तेरह वर्षीय कार्तिक शंकर हिंदी यू.एस.ए. की साउथ ब्रंस्विक पाठशाला में उच्च स्तर-१ के छात्र है। कार्तिक को पढ़ना, दौड़ना एवं कंप्यूटर प्रोग्रामिंग करना अच्छा लगता है। उनके प्रोग्रामिंग की कुछ झलकियाँ निम्न लिंक पर देखी जा सकती हैं:
https://scratch.mit.edu/studios/301189/

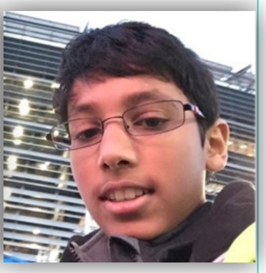

बस्ते में इतना ज्ञान पड़ा है लेकिन भार उठाना मुश्किल है।
कलम में अपार शब्द छुपे हैं लेकिन सत्य लिखना मुश्किल है।

जगत में इतने विद्वान पंडित हैं लेकिन दर्शन पाना मुश्किल है।
दूकानो में कीमती सामान भरे हैं लेकिन रोटी खरीदना मुश्किल है।

वाहन में विविध गतियाँ होती है लेकिन ईंधन भरना मुश्किल है।
विज्ञान ने उठाये प्रश्न कई है लेकिन सारे उत्तर पाना मुश्किल है।

अंतरिक्ष में चमकते तारे अनंत हैं लेकिन उनको छूना मुश्किल है।
समय में कई जादुई पल कढे हैं लेकिन नियंत्रण पाना मुश्किल है।

भूजाल में असीम जानकारी भरी है लेकिन ध्यान केंद्रित करना मुश्किल है।
दूरदर्शन में भरपूर मनोरंजन प्रस्तुत है लेकिन उचित चैंनल लगाना मुश्किल है।

मस्तिष्क में अद्भुत कल्पनाऐं भरी हैं लेकिन अमल में लाना मुश्किल है।
पन्नों में इतने शास्त्र रचित हैं लेकिन सही अर्थ समझना मुश्किल है।

रिया चतुर्वेदी

गरीबी कैसे मिटाई जाए?

मेरा नाम रिया चतुर्वेदी है। मैं सातवी कक्षा में हूँ। मुझे नाचना अच्छा लगता है। कुछ ही साल में मैं कत्थक में प्रमाणित हो जाऊँगी। में सॉफ्टबाल भी खेलती हूँ। पाठशाला में मुझे लिखने का बहुत शौक है।

एक क्षण, एक घंटा, एक दिन, एक हफ़्ता, एक महीना, एक साल, बहुत हैं न? लेकिन क्या आपको पता है कि हर दिन हजारों मरते हैं? वह इसलिए क्योंकि उनके पास एक रोटी के लिए पैसे नहीं होते। रोटी तो बहुत दूर कि बात है, उनके पास खाने का दाना या पानी की बूंद के लिए पैसे नहीं होते हैं। अगर हम सब मिलकर कम से कम तीन डॉलर दें तो हम लाखों को बचा पाएंगे। इस दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं। एक जो गरीबों को पैसे दे देते हैं और दूसरे जो गरीबों को अनदेखा कर देते हैं। एक महान व्यक्ति ने कहा कि "दुनिया में बहुत पीड़ा है। इसकी वजह बुरे लोगों की बुराई नहीं बल्कि अच्छे लोगों कि चुप्पी है।"

सब लोग को पता है कि गरीबों की मदद करनी चाहिये लेकिन वे करते नहीं हैं। इसके कई कारण हैं। एक कारण है स्वार्थ, कि लोग अपनी दिनचर्या में कितने मस्त रहते हैं कि उनको गरीबों कि पीड़ा का अनुमान नहीं है। दूसरा कारण है लालच। वे दूसरों के लिए पैसे खर्च नहीं करना चाहते। वे सिर्फ अपना लाभ देखते हैं। उनको सिर्फ ये सूझता है कि अगर वह पैसे देंगे तो उनकी कितनी हानि होगी। यह नहीं कि "वह आदमी भूखा है, चलो मैं उसे चाय और समोसे खिला देता हूँ। "लेकिन नहीं, अगर मैंने उसे दस रुपए दे दिये तो मैं बरबाद हो जाऊँगा। दस रुपए गए तो गए कोई बात नहीं वापस कमा लोगे लेकिन यह सोचो कि आपने अभी एक जान को बचाया है। इसमें आपको गर्व नहीं होगा? अगर आप भूख से मर रहे होते और आपको कोई मदद नहीं कर रहा होता तो आपको कैसा लगता? आप यही सोचते कि "मुझे कोई मदद क्यों नहीं कर रहा है?" आपको गुस्सा आता, आप दुखी होते, है न?

अगर आप थोड़ा सा समय और अपनी कमाई से पैसे गरीबों के लिए रख सकते हो तो दुनिया से गरीबी काफी हद तक मिटाई जा सकती है। प्रौद्योगिकी में बहुत प्रगति हो गयी है और आप सब लोगों के पास फोन, लैपटॉप, या आईपैड है तो आप कृपया इंटरनेट या ऑनलाइन जा कर दान करिये। ऐसे हमारा वर्तमान और भविष्य सुधर सकता है। तो ऐसे गरीबी मिटाई जा सकती है।

गरीबी दूर करना भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती है – नरेन्द्र मोदी

मैं और मेरी बहन

मेरा नाम सलोनी गुप्ता है। मैंने रटगर्स विश्वविद्यालय से इतिहास और बिजनिस में बी॰एस॰ की है, और यूनाइटेड हेल्थकेर में कार्यरत हूँ। मुझे हिन्दी में बहुत रुचि है इसलिए मैं एडिसन शाखा में सहायक शिक्षिका हूँ।

मैं सभी लड़कियों की तरह हूँ, पर मेरी एक खास बात है जो औरों के लिए अंजान है। वह यह है कि मेरी एक जुड़वाँ बहन है। उसका नाम शालिनी है।

जब मैं लोगों को यह बताती हूँ तो पहले वे यकीन नहीं करते। फिर आश्चर्य होकर कहते हैं, “वाह! काश मेरी भी एक जुड़वाँ होती”। सब मुझसे पूछते हैं, “तुम्हें कैसा लगता है कि तुम्हारी एक जुड़वाँ बहन है?” इस प्रश्न का जवाब बहुत सरल लगता है लेकिन ऐसा है नहीं, क्योंकि हम दोनों नहीं जानते हैं कि एक जुड़वाँ बहन का ना होना कैसा लगता है। बचपन से हम हमेशा साथ रहे हैं।

जब हम छोटे थे और अपने विद्यालय जाते थे, तो बाकी विद्यार्थी हमें गौर से देखते थे - मुझे यह बहुत अजीब लगता था। हमारी ज़्यादातर अध्यापिकाएँ भी हमें “जुड़वाँ बहनें” कह कर बुलाती थीं.... हमारे घर वालों और मित्रों के अलावा बहुत कम लोग हमें हमारे नाम से बुलाते थे। मुझे यह अच्छा नहीं लगता था और गुस्सा आता था।

लेकिन मैं इस गुस्से में यह भूल जाती थी कि सब मेरी विशेषता को महत्व दे रहे थे। मेरी इतिहास की अध्यापिका ने मुझे एक बात कही थी जो मैं आज तक नहीं भूली हूँ। पहले दिन उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं अपने बारे में एक ऐसी बात बताऊँ जो उनको नहीं पता हो। कुछ दिनो बाद जब उनको पता चला कि मेरी एक जुड़वाँ बहन है तो उन्होंने मुझसे पूछा कि मैंने उनको क्यों नहीं बताया मेरी जुड़वाँ बहन है?

ऐसा नहीं था कि एक जुड़वाँ बहन का होना मुझे अच्छा नहीं लगता था। बात सिर्फ यह थी कि वह हमेशा मेरे साथ रही और मुझे कभी भी नहीं लगा कि हम दोनों अलग हैं। जो बात सबको बहुत खास लगती है, हम दोनों को वह आम लगती थी। शायद जब मैं शालिनी से दूर रहूँगी तो मुझे उसकी कमी बहुत महसूस होगी। लेकिन हाँ, उस दिन से मैं जान गयी थी कि मेरी एक पहचान है पर शालिनी भी मेरी पेहचान से जुडी हुई है। शालिनी मेरी ज़िंदगी में बहुत खास है और यह बात कि मेरी एक जुड़वाँ बहन है, कोई भी मुझसे छीन नहीं सकता है...मैं खुद भी नहीं।

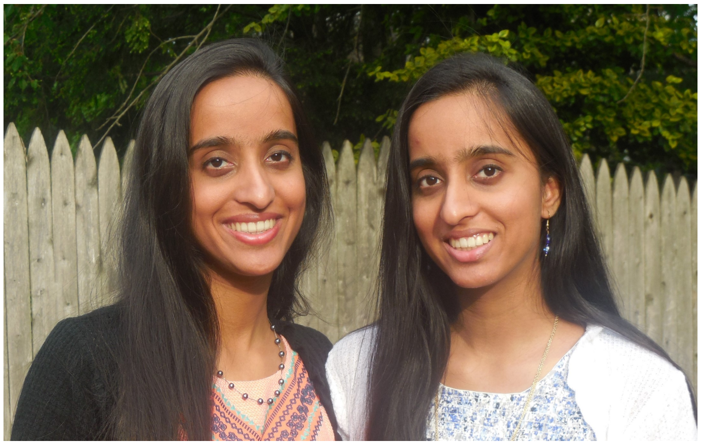

हिंदी का ज्ञान

अपनी धरती तो छूट गयी पर उसकी महक अभी तक साँसों में है। मैं कुलदीप सिंह खालसा भारत में अहमदाबाद शहर से हूँ। मैं USA में करीब १६ साल से बसा हुआ हूँ। मेरे दो पुत्र हैं और दोनों ही मोंट्गोमेरी हिंदीUSA पाठशाला में हिंदी का अभ्यास करते हैं। मेरी पत्नी जसप्रीत कौर मोंट्गोमेरी स्कूल में तीन वर्ष से हिंदी की अध्यापिका है और S2 कक्षा में पढ़ाती हैं। अपनी सभ्यता और संस्कृति को अगर आगे बढ़ाना हो, बच्चों में अच्छे गुण डालने हों तो हिंदी सीखना बहुत ही आवश्यक है। इसी कारण हम दोनों बच्चों को हिंदी पढ़ा रहे हैं। मेरा बच्चों और उनके माता पिता से यही कहना हैं कि हिंदी को भूलना नहीं। इस देश में रहकर अगर हमारे बच्चे हिंदी पढ़ना और बोलना सीख लें तो हमारी मेहनत सफल होगी। मैं हिंदीUSA संस्था और मोंट्गोमरी स्कूल के प्रमुख अद्वैत और अरुंधति जी का आभारी हूँ जो इस लगन से यह काम कर रहे हैं और बच्चों को अपनी मातृ भाषा के करीब ला रहे हैं।

हिंदी भाषा बड़ी निराली
मैंने अब तो सीख ही डाली

जनम लिया अमरीकी धरती
बोले जहाँ हर कोई अंगरेजी
यहाँ रहते मेरे हिन्द वासी
जो बोले हिंदी भई भाती

माता पिता को मैंने पूछा
क्या हिंदी हैं हमारी मातृ भाषा
वे बोले हिंदी से है हमारी शान
मैं बोला मुझे भी दो हिंदी का ज्ञान

तब उन्होंने मुझे बताया
हम भारतीयों ने हिंदी को जर्सी में भी बसाया
जहाँ पढ़ते बच्चे हिंदी भाषा
वह पाठशाला “हिंदीUSA” कहलाता

मैंने तो फिर ठान ही डाला
सीख के रहूंगा में हिंदी भाषा

माना इस देश अंग्रेजी चलती
हिंदी सिखाती अपनी संस्कृति
सीखा स्वर अक्षर वर्णमाला
तीन वर्ष हिंदी अभ्यास कर डाला
अब कठिन नहीं लगता हिंदी पढ़ना
मुझे है ज्ञान हासिल करना

मोंट्गोमेरी पाठशाला में पढ़ता हूँ
हर शुक्रवार जाया करता हूँ
गुरूजी मेरे बड़े ज्ञानी
सरल कर दी जिन्होंने कठिन हिंदी वाणी

गुरूजी का यह है कहना
मुश्किल नहीं हिंदी पढ़ना
नील परिश्रम करके आगे बढ़ना
हिंदी भाषा से तुम नहीं डरना

मैंने जाना भारत था स्वर्ण की खान
हिन्द देश था विश्व महान
भारत में जन्मी कई विभूतियाँ
धन्य भारत की ऐतिहासिक संस्कृतियाँ

अब जो सीखा हिंदी का ज्ञान
करता हूँ हिन्द को सलाम
जिसने जन्मे संत योद्धा और वीर
गांधी भगत सिंह राम कबीर

पुस्तकें पढ़के मेरा मन भर आया
हिंद के लिए अपना शीश झुकाया

देशवासियों को किया प्रणाम
धन्य भारत तेरा बलिदान

हिंदी भाषा बड़ी निराली
मैंने अब तो सीख ही डाली

Piyush Gopal

अध्यापक-अध्यापिकाओं को नमन

मम्मी की गोद में खोली आँखें, दादी के प्यार में पला
दादा से सुनी कहानी, पापा की उंगली पकड़ कर चला
टीवी से क्रिकेट सीखा, और भैया से गाने
चाचा-चाची के लाड़ में, चल पड़ा मस्ती की नई धुन बनाने

पर जीवन में एक बड़ा मोड़ तब आया
जब मैंने अपने को एक बड़े स्कूल के विशाल प्राँगण में पाया
मेरी दुबली-पतली, कुछ सहमी कुछ मुस्कराती छवि देख
अध्यापक-अध्यापिकाओं ने मुझे अपना बनाया

मिस जूडी थी क्लास की टीचर, बहुत प्यारे थे उनके स्वर
बार-बार एक ही बात बोलती, सभी कोई काम करो साथ मिलकर
सर साइमन होते थे कभी गरम तो कभी नरम
संस्कृत पढ़ाने में रखते थे पूरा दमखम

हिन्दी अंग्रेज़ी में बढ़ता रहा, गणित से थोड़ा डरता रहा
कभी नीरस तो कभी अचंभित करने वाला था क़ुरेशी सर का विज्ञान
मज़ा तो तब आया जब सर लाल ने लिया सामान्य ज्ञान का इम्तिहान
मिस डी कॉस्टा की छड़ी से और पाण्डेय जी की खरी बोली से काँपा था मैं थर थर
लेकिन आत्म विस्वास तब बढ़ा जब सर रॉकी ने बनाया क्लास का मॉनिटर

पढ़ता रहा, खेलता रहा कभी हॉकी कभी क्रिकेट, कभी क्विज़ और कभी डिबेट
कुछ खट्टी कुछ मीठी यादें बटोर के स्कूल के जीवन को अग्रसर करता रहा
आज भी वो दिन याद है जब सर अम्बर अंग्रेज़ी के उस लेख से मंत्र मुग्ध हो गये थे
उपहार स्वरूप एक लेखक बनने का बीज बो कर चले गये थे

आँखें नाम होती हैं जब मिस मेरी का प्यार और सर राज की फटकार याद करता हूँ
दोस्तों बता नहीं सकता, अपने स्कूल के इन अध्यापक-अध्यापिकाओं से कितना प्यार करता हूँ
शब्दों से सुन्दर वाक्य बनाने का श्रेय तो इनको ही जाता है
महत्वपूर्ण बात यह है की किताबी कीड़े से बढ़कर एक परिपूर्ण इंसान बनने में इनका उत्कृष्ट योगदान अब समझ में आता है
अगर वे न होते तो परिस्थितियों को झेलने का अनुभव ना होता
देश विदेश में नाम कमाना संभव ना होता

दादा दादी पापा मम्मी भैया और दोस्त, उन सब से कुछ कुछ सीखा है
लेकिन ओ मेरे शिक्षक गण आपका दिया हुआ ज्ञान ही मेरा सबसे अमूल्य हीरा है

मेरी भारत यात्रा

पलक जैन

मेरा नाम पलक जैन है। मैं चैरी हिल पाठशाला की नौवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं चैरी हिल हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मेरी रुचियाँ चित्रकारी, किताबें पढ़ना, और नृत्य करना हैं।

मेरे माता-पिता भारत से हैं। मैं अमेरिका में पैदा हुई लेकिन मुझे भारत जाना बहुत पसंद है। मैं भारत बहुत बार गई हूँ। मेरे परिवार के अनेक सदस्य वहाँ रहते हैं। गुड़गांव में मैं अपने नाना, नानी, मौसी, मौसाजी और मौसेरे भाई बहनों से मिलती हूँ। ग्वालियर में मैं अपनी दादी, ताऊजी, ताईजी, बुआजी, फूफाजी और भाई बहनों से मिलती हूँ। भारत में मुझे बहुत मज़ा आता है। मैं अपने परिवार के साथ बाहर बहुत खेलती हूँ। हम बाज़ार में घूमते हैं और खरीददारी करते हैं। हम भारतीय कपड़े लेते हैं और मिठाइयाँ खाते हैं। हम वहाँ परंपरागत भोजन खाते हैं। मुझे सबसे अच्छा पनीर लगता है।

हिंदी भारत की राष्ट्रीय भाषा है। मैं अमेरिका में हिंदी यू.एस.ए. संस्था में पिछले कई वर्षों से हिंदी सीख रही हूँ। इससे मुझे यह फायदा हुआ कि भारत में मैं सब को अच्छी तरह से समझती हूँ और सबसे हिंदी में बात भी कर सकती हूँ। पिछली बार जब मैं भारत गई थी, हमने ग्वालियर में दिवाली मनाई थी। भारत में दिवाली बहुत धूम-धाम से मनाई जाती है। धनतेरस की पूजा करके हमने छत पर फुलझड़ी जलाई। फिर हमने अंदर जाकर खाना खाया। छोटी दिवाली पर सारे बच्चों ने फिर से फुलझड़ी जलाई। धनतेरस और छोटी दिवाली पर बहुत मज़ा आता है, लेकिन बड़ी दिवाली पर सबसे ज्यादा मजा आता है। हम सुंदर भारतीय वस्त्र पहनते हैं जैसे सलवार कमीज़, लहंगा और साड़ी। फिर हम लक्ष्मी जी, गणेश जी और सरस्वती माँ की पूजा करते हैं जो कि करीब एक घंटे की होती है। हम बहुत सारे स्वादिष्ट व्यंजन खाते हैं। दिवाली पर बहुत खाना बनता है जैसे पनीर, दाल माखनी, पूड़ी, रायता, आलू की सब्जी, और बहुत सारी मिठाईयाँ और पकवान भी बनते हैं। जब सब पेट भर भोजन कर लेते हैं, हम पटाखे जलाना शुरू करते हैं जैसे राकेट, चकरी, फुलझड़ी, और अनार। हमारे सारे दोस्त मिलने आते हैं और हम उनके साथ दिवाली मनाते हैं।

> ***विश्व में अनेकता में एकता का भारत बहुत ही सुंदर उदाहरण है।***

भारत में देखने के लिए बहुत कुछ है। इंडिया गेट, ताज महल, कुतुब मिनार, और लाल किला जैसी बहुत अच्छी और सुंदर जगह हैं। भारत में बहुत सारी भाषाएँ बोली जाती हैं और विभिन्न संस्कृतियाँ देखने को मिलती हैं। लोग दुनिया के कोने-कोने से भारत की इसी संस्कृति को देखने के लिए आते हैं। विश्व में अनेकता में एकता का भारत बहुत ही सुंदर उदाहरण है।

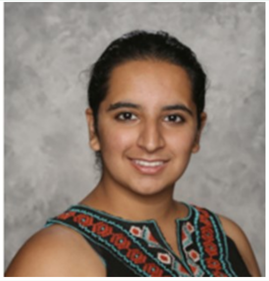

अमेरिका में दिवाली

तान्वी कटारीया, उच्चस्तर-१, मॉन्टगोमरी हिन्दी पाठशाला

दिवाली भारत का एक महत्वपूर्ण त्योहार है। यह त्योहार भारत में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। हम दिवाली यहाँ अमरीका में भी उसी धेय से मनाते हैं। मैं हर साल रंगोली बनाती हूँ। इसके अलावा दिवाली पर अनेक प्रकार के भोज और मिठाइयाँ बनाते हैं। इन्हें बनाने में मैं माताजी की मदद करती हूँ। मेरी सबसे प्रिय मिठाई गुलाब जामुन है।

दिवाली पर सब लोग अच्छे-अच्छे भारतीय कपड़े पहनते हैं। मैं भी सलवार कमीज पहनती हूँ, और मेरी बहन लहंगा-चोली पहनती है। मेरी माताजी अपनी सबसे सुंदर साड़ी पहनती हैं और मेरे पिताजी कुर्ता पहनते हैं। मुझे और मेरी बहन को तैयार होकर पार्टी में जाना बहुत अच्छा लगता है। मेरी बहन को बाल बनाने में और चूड़ियाँ पसंद करने में बहुत मजा आता है। जब मैं मेरी बहन को सजने में मदद करती हूँ तो उसे बहुत खुशी होती है। दिवाली हमारे परिवार के लिये एक खुशी का समय होता है।

भारत में बच्चे पटाके जलाते हैं। अफ़सोस की बात है कि न्यु जर्सी में पटाके जलाना मना है। भारत में कई लोग नदी के किनारे दिये जलाते हैं। हम यहाँ अपने-अपने घरों के बाहर दिये लगाकर दिवाली के वातावरण का मजा लेते हैं।

हम हर वर्ष हिन्दी पाठशाला के दिवाली उत्सव में पूरे परिवार के साथ जाते हैं। यहाँ पाठशाला के बाकी परिवार भी आते हैं। सभी भारतीय कपड़े पहनते हैं। हर परिवार से लाए अलग-अलग व्यंजन खाते हैं। हमारी पाठशाला के अभिभावक सभी बच्चों के लिये दिवाली से जुड़ी कलाकृति का आयोजन करती हैं। हम सब हमारे इस हिंदी पाठशाला के परिवारों के साथ तस्वीरें लेते हैं।

ऐसे लगता है कि लोग सोचते हैं कि भारत मे दिवाली ज्यादा उत्साह से मनाई जाती है। लेकिन मुझे लगता है कि सही लोगों के साथ दिवाली कहीं पर भी सही तरीके से मनाई जा सकती है।

* * *

विवेक ही हमारा वास्तविक गुरु है। यदि मनुष्य अपने विवेक का अनादर करता है तो उसका विवेक लुप्त हो जाता है और जो मनुष्य अपने विवेक का आदर करता है तो उसका विवेक इतना बढ़ता है कि वह शास्त्र तथा गुरु के बिना भी सत्य तक पहुँच जाता है।

तिल के लड्डू

प्रियंका सिन्हा

मेरा नाम प्रियंका सिन्हा है। मैं १२ साल की हूँ और सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला में उच्च स्तर-२ में हिन्दी का अध्ययन कर रही हूँ। मुझे हिन्दी पढ़ना बहुत पसंद है।

सामग्री:

१ कप तिल
१ कप गुड़
२ छोटी चम्मच घी

विधि:

१. बर्तन गैस पर रखकर उस में चम्मच देसी घी डालें।

२. अब उस में गुड़ डाल दें और धीमी आग पर चलाते रहें जब तक कि वह पिघल न जाए।

३. जब गुड़ पूरी तरह से पिघल जाए गैस बन्द कर दें।

४. अब इस पिघले गुड़ में १ कप तिल डाल दें और दोनों को अच्छे से मिलायें।

५. अब अपनी हथेली पर थोड़ा सा घी लगा कर लड्डू बनाएँ और उसे थाली में रखें।

६. इन लड्डूओं का आनंद लें।

क्रैबी मेरा दोस्त

मेरा नाम रुचिर माथुर है। मैं चौथी कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं आजकल बाँसुरी और तबला सीख रहा हूँ। मुझे अपने खिलौने कैंकड़े, जिसका नाम क्रैबी है, के साथ खेलना पसंद है और मेरी यह कविता उसी पर है।

लाल छोटा खिलौना, क्रैबी जिसका नाम,
कैंकड़ा है जो, खेलना जिसका काम।

छोटे-छोटे पैर हैं आठ,
ताक़तवर दो पंजें हैं साथ।

हल्का क्रैबी, उछलता कैब्री,
हँसाता कैब्री, सुलाता क्रैबी,
मेरी आँखों का तारा क्रैबी,
मेरा प्यारा क्रैबी ।

हिन्दी यू.एस.ए. में मेरा अनुभव तथा हिन्दी सीखने के लाभ

मेरा नाम सार्थक उप्पल है। मैं कक्षा आठ में पढ़ता हूँ। मेरे विद्यालय का नाम नॉर्दन बर्लिंग्टन रीजनल मिडिल स्कूल है। मैं पिछले पाँच साल से हिंदी यू.एस.ए. के चेस्टरफ़ील्ड न्यू जर्सी विद्यालय में पढ़ रहा हूँ। मैंने प्रथमा स्तर-१ से हिंदी सीखना प्रारम्भ किया था। अब मैं उच्च स्तर-१ में पढ़ता हूँ। मैं हमेशा से हिंदी सीखना चाहता था क्योंकि हिंदी हमारी मातृ भाषा है। मुझे हिंदी लिखना और पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। हिंदी सीख पाने से अब मैं हिंदी फिल्मों को भी समझ पाता हूँ और अपने परिवार के साथ बैठकर देख सकता हूँ।

मैं हिंदी कविता प्रतियोगिता में हर साल भाग लेता हूँ। पिछले साल की तरह ही इस बार भी में सेमी -फाइनल प्रतियोगिता जीत कर फाइनल में पहुंच गया हूँ। सेमी फाइनल की जीत ने मुझमें और ज्यादा आत्म विश्वास दिया है। मैं अब फाइनल की तैयारी और भी ज्यादा मेहनत और परिश्रम से करूँगा। मुझे पूरा विश्वास है की मैं इस बार फाइनल प्रतियोगिता जीत कर अपने हिंदी यू.एस.ए के चेस्टरफ़ील्ड विद्यालय का नाम रोशन करूँगा।

हिंदी सीखने से मैं अभी अपने रिश्तेदारों से बात कर सकता हूँ और हिंदी संगीत का आनंद ले सकता हूँ। मुझे अब लगता है की हिंदी सीखना मेरे जीवन की सबसे अच्छी घटना है।

महात्मा गांधी

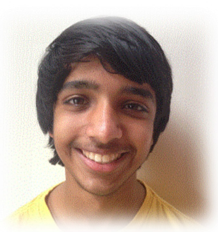

नमस्ते! मेरा नाम शुभ जोशी है। मैं आठवीं कक्षा का छात्र हूँ। मुझे किताब पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। मैं खाली समय अपने मित्रों के साथ व्यतीत करना पसंद करता हूँ। सॉकर मेरा मनपसंद खेल है।

आज मैं आपको भारत के राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी जी के बारे में कुछ बातें बताऊँगा। गांधी जी को पूरी दुनिया में बापू या महात्मा के नाम से भी जाना जाता है। इनका जन्म २ अक्टूबर १८६९ को गुजरात के पोरबन्दर में हुआ था। उन्होंने हमेशा सत्य और अहिंसा के लिया आंदोलन चलाया। उनका सार्वजनिक जीवन दक्षिण अफ्रीका में प्रारम्भ हुआ। वहाँ से वापस आकर उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। वे कई बार जेल भी गए और अनेक कष्ट सहे। उन्हीं की प्रेरणा से हमारा देश १५ अगस्त १९४७ को आजाद हुआ।

गांधी जी की ३० जनवरी को एक प्रार्थना सभा में नाथूराम गोडसे ने गोली मारकर हत्या कर दी। उनकी समाधि राज घाट दिल्ली में स्थित है।

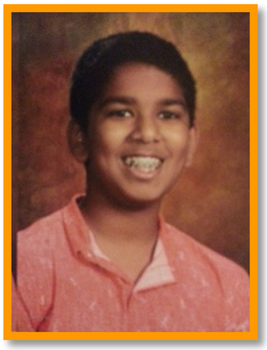

मांझी

अक्षरों से वाक्य तक मेरा सफर

मैं केशव माने ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला मध्यमा-१ में पढ़ता हूँ। मैंने अपनी पुस्तक में से शब्दों और अंको को जोड़कर कविता लिखी है। आशा है आप को पसंद आएगी।

एक दो तीन चार,
अक्षर पढ़ो बार-बार।
पांच छः सात आठ,
स्वरों को अब कर लिया याद।
नौ दस ग्यारह बारह,
मात्रा जोड़ो व्यंजनों में सारे।
तेरह चौदह पंद्रह, सोलह,
शब्दों का बनाया ठेला।
सत्रह अठारह उन्नीस बीस,
वाक्यों से बनाएंगे नई चीज़।

मेरा नाम कबीर सक्सेना है। मैं १२ साल का हूँ और सातवीं कक्षा में पढ़ाता हूँ। इस साल हिंदी यू.एस.ए. की पंद्रहवीं वर्षगाँठ है। मैं पिछले ६ साल से हिंदी पढ़ रहा हूँ। इन ६ सालों में मैंने हिंदी संस्कृति, भाषा और बहुत सारे प्रसिद्ध लोगों के बारे में पढ़ा और उन्हें जाना। मैंने एक ऐसे इंसान की भी कहानी पढ़ी जिन्हें लोग उतना नहीं जानते। लेकिन मुझे उनकी कहानी ने काफी प्रेरित किया। उनका नाम है दशरथ मांझी।

दशरथ मांझी काफी गरीब थे और बिहार के एक बहुत छोटे से गाँव में रहते थे। उनका गाँव चारों तरफ से पहाड़ से घिरा हुआ था। एक गाँव से दूसरे गाँव जाने के लिए लोगों को पूरा घूम कर जाना पड़ता था जिसमें काफी समय लग जाता था। वे शादी शुदा थे। एक बार उनकी पत्नी उनके लिए खाना लेकर आ रही थी और वह पहाड़ से फिसल कर गिर गयी। दशरथ उन्हें सही समय पर अस्पताल नहीं ले जा पाये और उनका देहांत हो गया। दशरथ बहुत दुखी थे और उसी रात उन्होंने यह तय किया कि वे कैसे भी हो पहाड़ काट कर सड़क बनायेंगे। सब लोगों ने सोचा की दशरथ पागल हो गया है। सब उसका मजाक भी उड़ाने लगे। लेकिन दशरथ अड़ गए और अकेले ही अपनी छेनी और हथोड़ी से रास्ता काटना शुरू कर दिया। वे लगातार तेइस साल तक इसी काम में लगे रहे। अंत में उन्होंने ३६० फ़ीट लम्बी और ३० फीट चौड़ी सड़क बना कर ही दम लिया। उनकी मेहनत से पूरे गाँव का फायदा हुआ। उनकी ज़िन्दगी से हमें बहुत कुछ सीखना चाहिए।

Boys Scout - एक स्मरणीय यात्रा

मेरा नाम चिरायु गुप्ता है। मैं १७ साल का हूँ और मैं Hightstown High School में एक वरिष्ठ छात्र हूँ। मैं पिछले ६ वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. की मोनरो शाखा में हिंदी सीख रहा हूँ। मेरा हिंदी सीखने का अनुभव बहुत अच्छा रहा। पिछले साल गर्मियों की छुट्टियों में मैंने Boys Scout के लिए Eagle Project पर काम किया। मैं इस परियोजना के विषय में कुछ बताना चाहता हूँ।

मैंने सात साल की उम्र से Boys Scout में जाना आरंभ किया। Boys Scout of America प्रतिभाशाली लड़कों का एक संगठन है जो शिविरों में जाना और नए-नए कौशल सीखना पसंद करते हैं। पिछले १० वर्षों में मैं कई शिविरों में गया हूँ और कई परोपकारिक संस्थानों में निस्वार्थ काम किया है। जब मैं आठवीं कक्षा में था, मैं एक सप्ताह के लिए एक नाव पर रहने के लिए फ्लोरिडा में एक साहसिक यात्रा के लिए गया था।

Boys Scout में ७ पद हैं और आखिरी पद - Eagle पाने के लिए एक सर्विस प्रोजेक्ट करना आवश्यक होता है। मैंने अपने High School के लिए ७ “प्रेरणादायक कहावतें” लकड़ी के बोर्ड पर पेंट किए। ये बोर्ड अब विद्यालय की दीवारों पर लगे हैं। मुझे अपने इस कार्य पर बहुत गर्व है। मुझे इस Eagle Project को करने की प्रेरणा हिन्दी यू.एस.ए. की स्वयंसेवक अध्यापिकाओं की निस्वार्थ सेवा से मिली।

इस प्रोजेक्ट से मैंने अपने विद्यालय के लिए एक नेक काम किया है। विद्यालय के आने वाले छात्र इन “प्रेरणादायक कहावतें” से प्रेरित होंगे। दिसंबर २०१५ में मेरा यह प्रोजेक्ट मान्य हो गया और मुझे Eagle पद से सम्मानित किया गया।

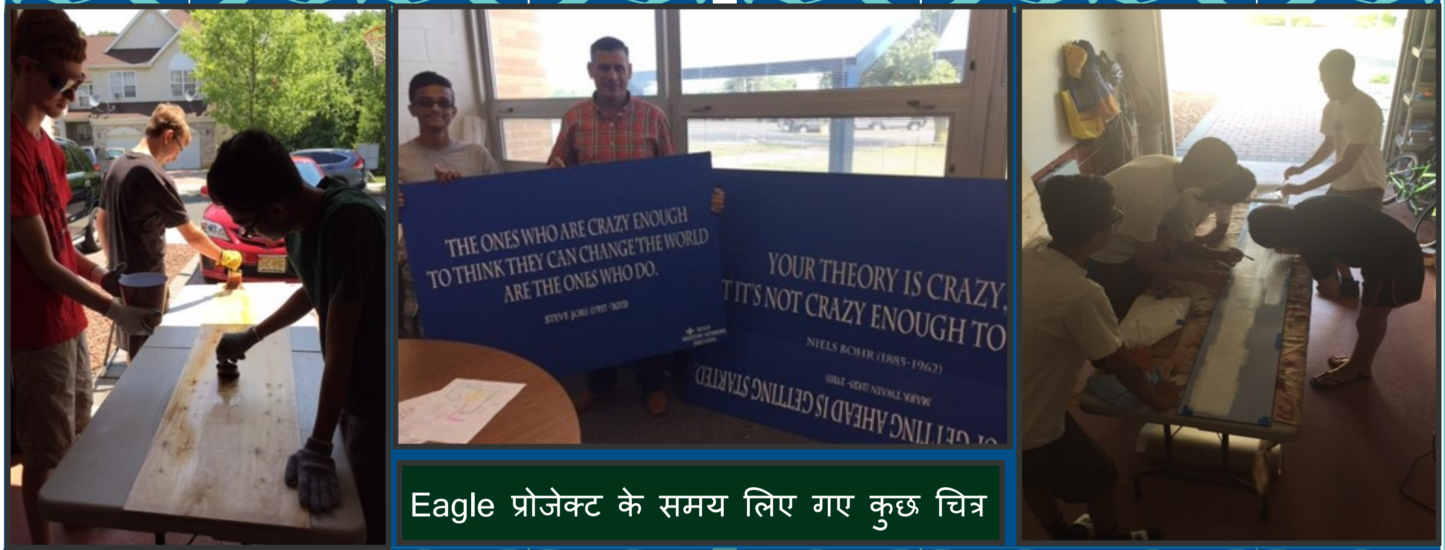
THE ONES WHO ARE CRAZY ENOUGH
TO THINK THEY CAN CHANGE THE WORLD
ARE THE ONES WHO DO.
STEVE JOBS
YOUR THEORY IS CRAZY
IT'S NOT CRAZY ENOUGH TO
NIELS BOHR (1885-1962)
GETTING AHEAD IS GETTING STARTED
MARK TWAIN

Eagle प्रोजेक्ट के समय लिए गए कुछ चित्र

हिन्दी का अनुभव

मेरा नाम ध्रुव गुप्ता है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं पिछले सात वर्षों से मोनरो हिंदी पाठशाला का छात्र हूँ। मुझे कराटे, संगीत और नाटक का शौक है।

इस साल मैं भारत गया था। क्योंकि मैंने यहाँ पर हिंदी बोलना सीखा, मैं दूसरे बच्चों के साथ बात कर सकता था। मैं उनकी बातों को समझ सकता था तथा थोड़ा सा मज़ाक भी कर सकता था। इसीलिए हिंदी सीखना महत्वपूर्ण है। जो आप अंग्रेजी बोलकर कर सकते हो, वह हिंदी में भी कह सकते हो। अगर दूसरे लोग तमिल या तेलुगु बोलते हैं, तो आप फिर भी उनके साथ बात कर सकते हो, क्योंकि हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा है और यह मैंने अपनी भारत यात्रा में देखा।

जब मैं जयपुर गया था, तो मुझे एक मिठाई वाले की दुकान मिली, जिसका नाम मथुरा वाला था। मुझे मथुरा के पेड़े बहुत अच्छे लगते हैं, तो मैंने पूछा क्या उनके पास पेड़े हैं। जब उन्होंने बोला कि पेड़े नहीं हैं, तो मैंने कहा कि कैसे मथुरा वाले हो और मथुरा के पेड़े नहीं हैं? इस पर बहुत हँसी मिली और मेरे रिश्तेदारों ने पूछा कि मैंने कहाँ से इतनी अच्छी हिंदी सीखी। जब मैं बोला की मैं हिन्दी यू.एस.ए. की हिंदी कक्षाएँ लेता हूँ तो उन्हें बड़ी ख़ुशी हुई।

जब मैं पिछली बार भारत गया था, तब मुझे ज्यादा हिंदी नहीं आती थी, तो मैं ज़्यादा नहीं बोला। पर इस बार, मैं ज्यादा हिंदी बोल पाया और जो मुझे बोलना था, वह बोल सकता था।

जब मैं टुटिकोरिन(तमिलनाडु) गया था, मुझे दोस्त मिले। उनमें से एक को थोड़ी-बहुत अंग्रेजी आती थी। पर क्योंकि मै हिंदी बोलता था, अंग्रेजी बोलने की जरूरत नहीं थी। उन्होंने मुझे कबड्डी और क्रिकेट खेलना भी सिखाया, और मैं इतना अच्छा खेल पाया कि अगर कोई उधर की तरफ गया, तो वह सोचते थे कि मैं दिल्ली से हूँ। अगर मैंने किसी को नहीं बताया, तो उनको कभी भी ख्याल नहीं आता कि मैं अमेरिका से हूँ। हिन्दी यू.एस.ए. ने मुझे एक बहुत अच्छा उपहार दिया है, और यह एक उपहार है जिसका मैं अपनी पूरी जिंदगी उपयोग करूंगा, और मैं दूसरे भारतीयों को भी हिंदी सीखने की सलाह देता हूँ।

मेरा हिन्दी अनुभव और विचार

मेरा नाम आस्था है। मैं बारह साल की हूँ और चेस्टफ़ील्ड हिन्दी पाठशाला में उच्च स्तर-१ की छात्रा हूँ। मैं आपके सामने मेरे हिन्दी अनुभव के बारे में कुछ विचार और भावना व्यक्त करना चाहती हूँ। मैं पिछले ६ साल से हिन्दी यू.एस.ए. के माध्यम से हिन्दी भाषा सीख रही हूँ। मुझे हिन्दी में लिखना और बोलना पसंद है क्योंकि इस वजह से मुझे अपनी सांस्कृतिक से जुड़े रहने का अवसर मिलता है। हिन्दी मुझे मेरे बुर्जुगों, जैसे नाना-नानी और दादा-दादी के करीब जोड़ती है। जब भी मैं अपने माता-पिता से और भारत में रिश्तेदारों से हिंदी में बातचीत करती हूँ तो उन्हें मुझ पर गर्व होता है। मेरी यह प्रबल इच्छा है कि मैं हिन्दी से और भी ज्यादा जुड़ूँ और एसे ही ज्ञान प्राप्त एवम् प्रचार करती रहूँ।

मेरी भारत यात्रा

अपेक्षा सूद, उच्च स्तर-१, चेस्टरफील्ड पाठशाला

२०१४ अगस्त को मैं अपने परिवार के साथ भारत गई। जाने से पहले मैं बहुत उत्साहित थी क्योंकि मैं तीन वर्ष के बाद भारत जा रही थी। १६ घंटे की लम्बी उड़ान के बाद हम भारत पहुंचे। हवाई अड्डे पर मेरे नाना जी हमें लेने आए हुए थे। उनके साथ मिलकर हम सब ननिहाल अम्बाला पहुँचे। वहाँ मासी, मामा और नानी जी हमसे मिलकर बहुत खुश हुए। एक सप्ताह वहाँ रहने के बाद हम दादा और दादी जी के घर पहुँचे। वहाँ चाचा और चाची जी से मिलकर हमें अच्छा लगा। तीन दिन वहाँ रहने के बाद हम आगरा के लिए निकल पड़े। रास्ते में हम एक दिन के लिए राजधानी दिल्ली रुके और कई ऐतिहासिक स्थान देखे। मुझे संसद भवन, इंडिया गेट, राष्ट्रपति भवन, लाल किला और अक्षरधाम बहुत अच्छे लगे। अगले दिन हम आगरा के लिए निकल पड़े। मुझे ताज महल देखने की बहुत उत्सुकता हो रही थी क्योंकि वह दुनिया के सात अजूबों में से एक है। वहाँ पहुँचते ही हमने एक गाइड कर लिया। गाइड ने हमें ताज महल दिखाया और साथ में उसका इतिहास भी बताया। ताज महल सफ़ेद संगमरमर का बना हुआ है जो अपने आप में बहुत सुन्दर है। उस दिन बहुत गर्मी थी, फिर भी हमें बहुत मज़ा आया। हमने बहुत सारे फोटो भी खींचे। वापसी पर हमने वहाँ का मशहूर पेठा भी खाया और यादगार के तौर पर एक छोटा ताज महल भी ख़रीदा। यह मेरी एक यादगार भारत यात्रा थी। मेरी इच्छा है कि अगली बार जब मैं फिर भारत जाऊँ तो किसी और ऐतिहासिक शहर के बारे में खूब सारी जानकारी प्राप्त करूँ।

भाषा, देश और संस्कृति

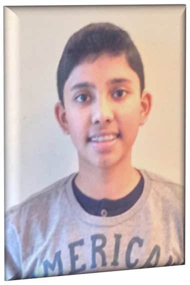

मेरा नाम रोशन सेटलुर है, मैं १५ साल का हूँ, और जे.पी.स्टीवन्स हाई स्कूल में पढ़ता हूँ। मैं पिछले छः साल से हिन्दी यू.एस.ए. में भारत की संस्कृति और हिन्दी भाषा का अध्ययन कर रहा हूँ। मैंने भारत जाकर इस बात का अनुभव किया है कि यदि हमें भारत की जनता और भारत की संस्कृति को अच्छी तरह समझना है तो हिन्दी भाषा का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। यह वह स्थान है जहाँ पर शिवा ने भक्तों को साक्षात दर्शन दिये थे। भारत में सब स्थानों पर शिव मंदिर हैं, परंतु बारह प्रसिद्ध मंदिर हैं जिन्हें ज्योतिर्लिंग कहते हैं। इनमें केदारनाथ सबसे ऊपर और रामेश्वरम सबसे नीचे हैं। कुछ वर्ष पहले मुझे सोमनाथ देखने का मौका मिला था। कहते हैं कि जब महमूद गजनबी ने इस मंदिर पर हमला किया था तो वह कई मन (चालीस किलो) सोना लेकर गया था। हर एक ज्योतिर्लिंग का बहुत पुराना इतिहास है, जैसे रामेश्वरम का ज्योतिर्लिंग स्वयं राम जी के हाथों का बना है।

हिंदी और मैं

ऋद्धि गुप्ता (उच्च स्तर -१) चेस्टरफ़ील्ड हिंदी यू.एस.ए.

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है। क्या यही वजह है जिस लिए मैं हिंदी सीख रही हूँ? मैं कभी-कभी हिंदी पढ़ते समय यह सोचती हूँ?

भाषा की बात करें तो हम अमेरिका में रहते हैं और अपने दोस्तों से अंग्रेजी में बात करते हैं। एक और अंतर्राष्ट्रीय भाषा सीखने के लिए स्पेनिश सीखते हैं। फिर हिंदी क्यों? इन प्रश्नों के उत्तर खुद को जब देती हूँ तो खुद ही ख़ुश हो जाती हूँ। हिंदी सीखकर मैं अपनी मूल भाषा सीख रही हूँ। जो मुझे मेरे अपनों के साथ मिलने में मदद करता है। मेरे नानी, नाना और परिवार के बाकी लोगों से मेरी हिंदी में बातें उनके चेहरे पर जो ख़ुशी और अभिमान लाती है वह अतुलनीय है।

जब मैं अपने स्कूल में अपने शिक्षकों और सहेलियों को बताती हूँ कि मैं हिंदी लिख पढ़ सकती हूँ तो वे मुझ पर गर्व करते है। सब से अधिक मुझे अपने हिंदी पढ़ने और लिखने पर गर्व तब हुआ जब मैं भारत गई और वहाँ अपने सभी जानने वालों से मिलकर हिंदी में बातें की और शुरू 'नमस्ते, आप कैसे हो' से किया। उनका मुस्कराता हुआ चेहरा मुझे बहुत खुशी दे गया और मुझे हिंदी और भी अच्छे से पढ़ने और लिखने के लिए प्रेरित कर गया।

समय

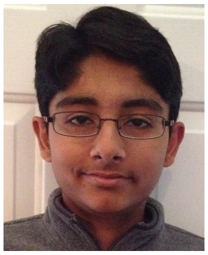

रिशब मनचंदा

समय एक उपहार है। हमें समय का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। समय का उपयोग हमारे कामों को पूरा करने के लिए है। हमें समय का उपयोग अच्छी यादों को बनाने में करना चाहिए। समय किसी के लिए नहीं रुकता है। हमें समय को मिल-जुल कर बिताना चाहिए। समय हमारा गुरु भी है। समय हमें नई चीज़ें सिखाता है। हम समय को नहीं पकड़ सकते। इसलिए समय एक उपहार है, जो ईश्वर ने हमें दिया है।

मेरी पसंद

निधी पंतुला

नमस्ते। मेरा नाम निधी पंतुला है। मुझे हिन्दी फ़िल्में अच्छी लगती हैं। मेरी मनपसंद फ़िल्म ओम शान्ति ओम है क्योंकि वह मेरी पहली फ़िल्म थी। मेरे मनपसंद अभिनेता ह्रितिक रोशन और शाहरुख़ खान हैं। मेरी मनपसंद अभिनेत्री दीपिका पादुकोण और प्रियंका चोपड़ा हैं। उनकी भारतीय पोशाक बहुत आकर्षक और सुन्दर होती हैं। हिन्दी फ़िल्म जगत में कुछ और फ़िल्म भी अच्छी बनी है जैसे "३ इडियट" जो कि जीवन के दूसरे रूप को दिखाती है।

विद्यार्थियों के विचार

आकाश श्रीवास्तव

दौड़ना

मेरा नाम आकाश श्रीवास्तव है। मैं १६ साल का हूँ। मैं जे. पी. स्टीवेंस हाई स्कूल में पढ़ता हूँ। मुझे दौड़ना, वॉलीबॉल और बास्केटबॉल खेलना पसंद है। इसके अतिरिक्त मुझे सोना और खाना भी पसंद है। मेरे परिवार में मेरे माता, पिता और एक छोटी बहन है।

आजकल हर किसी ने व्यायाम के बारे में सुना है। सभी लोग जानते हैं कि व्यायाम स्वास्थय के लिए कितना अच्छा है। सारे अच्छे व्यायामों में से एक दौड़ना है। लेकिन बहुत लोग इससे डरते हैं। दौड़ना मन और शरीर दोनों के लिए अच्छा है। दौड़ने में आप जैसे भी हो, इसका लाभ आपको जरूर मिलता है। मैं हर दिन दौड़ता हूँ। इससे मेरा मन शांत होता है और शरीर में ताकत आती है। अगर आप रोज दौड़ेंगे तो आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा।

माँ

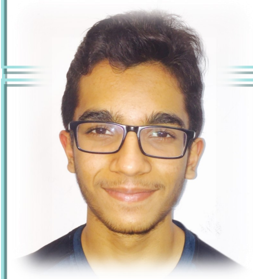

नमस्ते, मेरा नाम सारांश सैनी है। मैं कक्षा ८ का छात्र हूँ। मैं हिन्दी यू.एस.ए. की उच्च स्तर-१ कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे हर शुक्रवार एडिसन पाठशाला में जाना बहुत अच्छा लगता है क्योंकि मुझे वहाँ पर हिन्दी सीखने का अवसर मिलता है।

माँ! दुनिया की सबसे बड़ी अनुभूति, शायद सबसे मधुर अहसास को अपने में संजोए हुए भाषा का सबसे महत्वपूर्ण शब्द है - माँ।

माँ क्या होती है? माँ वह होती है जो कि घर की महान परिकल्पना को साकार करती है। माँ वह होती है जो अपना पूरा जीवन पति, घर, परिवार, और बच्चों की साज-सँवार और सेवा पर न्योछावर कर देती है। उनके लिए जीवन के सुन्दर पथ पर चलने की प्रेरणा बनती है और पूरा जीवन उनका हाथ पकड़कर उस मार्ग पर साथ निभाती है।

प्रकृति ने माँ को जो सहन-शक्ति दी है, आत्म बल दिया है, और अपने बच्चों के प्रति जिस ममता नामक भाव से उसके हृदय को भरा है वह संसार का एक सुखद आश्चर्य है। यह कहना शायद व्यर्थ है कि माँ अपने बच्चों लिए क्या कर सकती है, बस यह ही कहना ठीक है कि माँ अपने बच्चों के लिए क्या नहीं कर सकती। वह तो बस प्रेम ही प्रेम, ममता ही ममता लुटाना जानती हैं, जैसे वह और कुछ जानती ही नहीं। न नाराज होना, न अपने लिए कुछ चाहना। वह तो बस एक ही बात जानती है की उसे अपने बच्चों से प्यार है।

वह तो बस एक ही काम कर सकती है, अपने घर, परिवार, और बच्चों से प्यार। शायद इसलिए उसे सबसे महत्वपूर्ण नाम मिला है - माँ।

खेल का महत्व

मेरा नाम अनुज पटेल है और मैं तेरह साल का हूँ। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं ईस्ट ब्रंस्विक की हिन्दी पाठशाला में आठ साल से जा रहा हूँ।

मेरा यह मानना है कि पढ़ने के अलावा जीवन में "खेल" का भी अधिक महत्व है। जब हम खेलते हैं तो हमारे शरीर को व्यायाम मिलता है। उससे हमारा शरीर ताकतवर और मजबूत बनता है। हमारा शारीरिक और मानसिक विकास भी होता है। खेलों के कई प्रकार होते हैं। कुछ खेल अकेले खेले जाते हैं, जिसे एकल खेल कहते हैं जैसे टेनिस, शतरंज, ताश, बेड मिंटन आदि और कुछ खेल टीम में रह कर खेले जाते हैं जैसे कि सॉकर, फुटबॉल, क्रिकेट, हॉकी, वॉलीबाल, कबड्डी आदि। हमारे भारत का सबसे पौराणिक खेल कबड्डी है। यदि आपको दोस्त बनाने हो तो दूसरों के साथ मिल कर खेलने से भी दोस्त बनाये जा सकते हैं । मेरा पसंदीदा खेल तैराकी और सॉकर हैं। मेरी माँ कहती हैं कि जब वह छोटी थीं तब वह ‘खो-खो, लंगडी, नदी और पहाड़, चोर-पुलिस, गिल्ली-डंडा, हाथी की सूंड आदि खेल खेलती थीं, जिनके नाम मैंने अमेरिका में सुने भी नहीं है ।

असल में खेल खेलना अच्छा होता है, हम सब को खेलना चाहिए। मैं तो बहुत खेलता हूँ आशा है आप भी कोई न कोई खेल अवश्य खेलते होंगे।

◆ ◆ ◆

राघवेंद्र सक्सेना

वर्चुअल रियलिटी

मेरा नाम राघवेंद्र सक्सेना है। मैं वूड्रो विल्सन मिडिल स्कूल में छटवीं कक्षा में पढता हूँ। हमें भारत से आये तीन वर्ष हुए हैं। मेरी उम्र ग्यारह वर्ष है। मैं एडिसन हिंदी स्कूल में पढ़ता हूँ।

वर्चुअल रियलिटी क्या है?

वर्चुअल रियलिटी ऐसी कुछ चीज़ है जिसे आप आँखों पर पहन कर एक जगह से दूसरी जगह पहुँच जाएँगे। यह चीज़ गूगल ने बनाई है। इस में आप गूगल कार्डबोर्ड या गूगल गिलास लेते हो, फिर आप अपना फ़ोन गूगल कार्डबोर्ड में लगा देते हो। उसके बाद आप अनेक जगह जा सकते हो। उदाहरण के लिये ताज महल, कुतुब मीनार, लाल किला इत्यादी जा सकते हैं।

वर्चुअल रियलिटी हमे कैसे मदद कर सकता है?

वर्चुअल रियलिटी बहुत चीजों में मदद कर सकता है।

उदाहरण के लिए, घर ख़रीदने से पहले आप उसे देख सकते हैं। चिकित्सक अपने मरीज़ को देख सकती है और उनसे बात चीत भी कर सकती है। तेल का कुआँ ठीक करने से पहले उस को देख सकते हैं।

अगले कुछ वर्षों में उम्मीद है कि वर्चुअल रियलिटी के ग्लासेज एक्स बॉक्स, पी.सी.पी. और वी जैसे वीडियो गेम्स में मिलने शुरु हो जाएंगे।

मेरे लेख

मेरा नाम सुहनी गुप्ता है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला की उच्च स्तर-२ में पढ़ती हूँ। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और वुडरो विल्सन स्कूल में जाती हूँ। मुझे फुटबॉल खेलना और आधुनिक संगीत सुनना पसंद है। आशा है कि आपको मेरे लेख पसंद आएंगे।

चंदर और बंदर

एक बार एक बंदर पेड़ पर बैठा था जहाँ से उसे एक दूसरा बंदर दिखा। दूसरे बंदर का नाम चंदर था। पहले बंदर ने कहा, “मेरे केले के छिलके उस थैले में रखो !” चंदर को उस बंदर का नौकर नहीं बनना था। उसने इस मुसीबत से निकलने का रास्ता सोच लिया। चंदर बोला, “अगर मैं ये छिलके थैले में रख दूँ, तो तुम मेरा एक काम करोगे ?” पहला बंदर बड़ा आलसी था। उसने चंदर की बात मान ली। बंदर बोला, “ठीक है, तुम जो भी कहोगे मैं करूंगा। मैं वादा करता हूँ।” चंदर मुस्कराया और बंदर से उसका काम खुद करवाया, यह कह कर कि, “मेरा यह काम करो, कि तुम अपना काम खुद करो!” चंदर हंसते-हंसते चला गया, और बंदर को हैरान कर गया।

इन्सान

मुझमें राक्षस है,
राम भी हैं,
गुस्सा भी है,
और प्यार भी है।
मैं हंसाती हूँ,
रुलाती हूँ,
डराती हूँ,
रूठों को मनाती हूँ।
मैं वह हूँ जिसने
इस दुनिया में जन्म लिया
मैं वह हूँ जो
एक दिन यह दुनिया छोड़ दूंगी।
मैं एक इंसान हूँ।

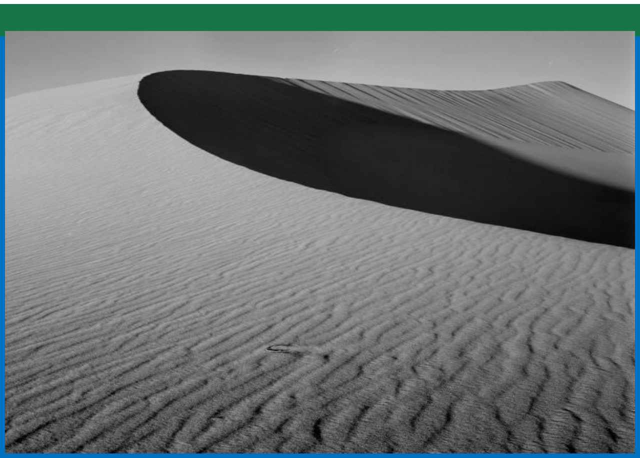

अमृत वाणी

स्वार्थ और अभिमान - इन दो चीजों से स्वभाव बिगड़ता है, अत: साधक को स्वार्थ और अभिमान का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए।

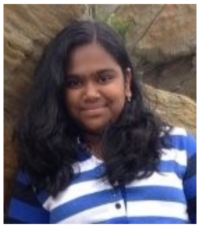

मेरी हिंदी यू.एस.ए. की यात्रा

नमस्ते। मेरा नाम नितांता गरग है और मैं उच्तस्तर- १ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे बचपन से ही हिंदी पढ़ने की चाह रही है।

मेरा हिंदी यू.एस.ए का सफर बहुत अनोखा और मजेदार रहा। मैं पहले पिस्कैटवे हिंदी पाठशाला में पढ़ती थी। वहाँ सभी शिक्षिकाएँ बहुत सहायक थीं तथा बाकी विद्यार्थियों ने भी मुझे प्रोत्साहित किया। कुछ दिनों बाद हमारा साउथ ब्रंस्विक में स्थान-परिवर्तन हो गया और मैंने वहाँ की पाठशाला में दाखिला ले लिया। पहले मुझे डर लगा कि वहाँ मेरा अनुभव कैसा रहेगा! परन्तु मैंने पाया कि वहाँ की भी शिक्षिकाएँ उत्तम थीं।

हिंदी यू.एस.ए. में मैंने केवल हिंदी ही नहीं सीखी बल्कि कई भारतीय संस्कृति से जुड़ी बातें भी सीखीं। इस वजह से मैं अपने दादा-दादी, नाना-नानी और बाकी सभी रिश्तेदारों से अच्छी तरह हिंदी में वार्तालाप कर सकती हूँ और साथ ही अपनी भारतीय संस्कृति से भी जुड़ रही हूँ। हिंदी यू.एस.ए. में मेरा मनपसंद हिस्सा कविता पाठ प्रतियोगिता रहा है। इसकी वजह से हिंदी बोलना और समझना बहुत सरल और मजेदार बन गया।

अब मैं विल्टन हिंदी पाठशाला में पढ़ती हूँ। यहाँ भी हिंदी पढ़ना काफी रोमांचक रहा है। हिंदी पाठशाला में सिर्फ पढ़ाई ही नहीं की जाती परन्तु हम सबको एक अच्छे नागरिक बनने की भी सीख दी जाती है।

इसके लिए मैं अपने माता-पिता और सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं को कोटि-कोटि धन्यवाद देती हूँ क्योंकि आप सभी ने अपना व्यस्त समय हम सभी को हिंदी सिखाने में बिताया है। मैं भी आगे चल कर इस कार्य में बराबर से साथ देने का प्रयास करूँगी।

* * *

मेरा नाम रोहित झा है। मैं मध्यमा-३ की कक्षा मैं पढ़ता हूँ। मेरी हिंदी पाठशाला स्टैमफर्ड शहर मैं है। मुझे हिंदी पढ़ना, गाना सुनना, किताब पढ़ना और दूरदर्शन देखना अच्छा लगता है। मैं जब, चौथी कक्षा मैं था, तब मेरे शहर स्टैमफर्ड मैं हिंदी पाठशाला शुरु हुई थी। उस समय मैं और मेरे दो मित्रों ने दूसरे शहर जाकर प्रथमा-२ की परीक्षा देकर स्टैमफर्ड पाठशाला मैं प्रथमा-२ की कक्षा की शुरूवात की, जो यहां की उच्च स्तर की कक्षा थी। उस समय मैं निश्चित नहीं था कि हिंदी पाठशाला मुझे कितनी मदद करेगी, लेकिन आज मैं मध्यमा-३ की कक्षा मैं हूँ। मैंने बहुत कुछ सीखा है, जैसे - शब्द, गिनती, मात्राएँ, देवनागरी लिपि, संज्ञा, कविताएँ आदि। मैंने हिंदी पाठशाला मैं बहुत दोस्त बनाए और मुझे बहुत अच्छा लगता है।

रूबिक्स क्यूब

मेरा नाम अभिरूप माथुर है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं पिछले आठ सालों से हिंदी यू.एस.ए. की ईस्ट ब्रन्सविक पाठशाला में हिंदी सीख रहा हूँ। यह मेरा आखिरी वर्ष है। मई के महीने में मैं हिंदी पाठशाला का स्नातक हो जाऊँगा। मुझे गणित, विज्ञान और समाज शास्त्र के विषय प्रिय हैं। वायोलिन और तबले बजाने की विशेष रुचि है। दो सालों से मुझे रूबिक्स क्यूब को कम से कम समय में हल करने की लालसा जागी है। यह कविता उसी पर आधारित है।

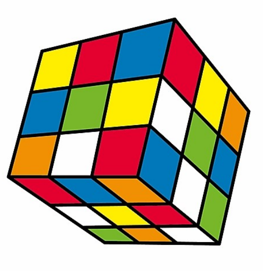

रूबिक्स क्यूब है कठिन बड़ा,
क्यों बनाया तुमने रूबिक्स, यह जटिल जड़ा?

हाँ! पता है मुझे, थी खोज तुम्हें एक पहेली की,
पहेली जो हो नई नवेली सी।

डरो मत! पता है मुझे, कैसे इसे सुलझाया जाए,
सीखना जिसको हो, वह मेरे पास आए।

उलझी हुई क्यूब को लेकर, अपने दिमाग और उँगलियों के कमाल दिखाए,
रंग बिरंगी क्यूब हाथ में लेकर, नीले से नीला, पीले से पीला, लाल से लाल मिलाए।

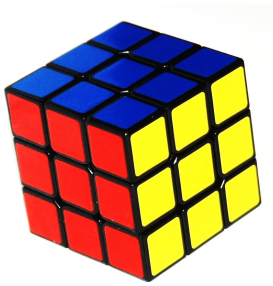

पर जब पहला मिलाए तो दूसरा बदल जाए,
जब दूसरा मिलाए तो पहला फिर जाए।

एक तरीका है, इसे हल करने का,
हर फलक को किसी एक क्रम में घुमाने का।

यदि तुम्हें तरकीब आ जाए, तो आ जाएगा हल चुटकी बजा के,
नहीं तो उलझे रहो तुम, घंटों घुमा-घुमा के।।

लेह लद्दाख - स्वर्ग से भी सुन्दर

मेरा नाम विशाखा तिवारी है। मैं पिछले आठ साल से साउथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला में पढ़ रही हूं। मुझे लिखना और किताबें पढ़ना पसंद है। इसके अलावा, मुझे नई जगहों का दौरा करना भी पसंद है।

इस साल गर्मी की छुट्टियों में हम लेह-लद्दाख गए। मेरे परिवार के साथ मेरी मौसी और हमारे दो और दोस्तों के परिवार भी थे। सब मिलकर हम १८ लोग थे।

कश्मीर को “धरती पर स्वर्ग” कहा जाता है। लेह स्वर्ग से भी सुन्दर है। लेह, जम्मू और कश्मीर के लद्दाख पहाड़ों के क्षेत्र में पड़ता है लेकिन उसकी सीमाएँ तिब्बत, पाकिस्तान और चीन से जुड़ी हैं। लेह समुन्दर से ११५६२ फीट की ऊँचाई पर बसा है। ऊँचाई पर होने के कारण हवा में ऑक्सीजन की कमी थी। पूरे दिन हमने सिर्फ आराम किया ताकि शरीर को कम ऑक्सीजन की आदत हो जाए। हमने “थुक्पा” और “मोमोस” खाए। यह लद्दाखी लोगों का खाना है। दूसरे दिन से हमने घूमना शुरू किया। हम सब बहुत उत्साहित थे।

लेह से हम खर्दुंगला पास होकर नुब्रा वैली गए। खर्दुंगला पास १८००० फीट की ऊँचाई पर बसा है और वह विश्व की सबसे ऊँची जगह है जहाँ गाड़ियाँ चल सकती हैं (वर्ल्डस हाईएस्ट मोटरेबिल रोड)। नुब्रा वैली में एक रात रुकने के बाद हम लेह लौट आए। फिर हम पैंगोंग त्सो गए जो १३१४० फीट की ऊँचाई पर बसा है। लद्दाखी भाषा में झील को “त्सो” कहते हैं। पैंगोंग त्सो जाने के लिए हमें चांगला पास होकर जाना पड़ता है। पैंगोंग त्सो की दूसरी ओर तिब्बत है। यह झील बहुत ही सुन्दर है और कुछ मीलों के अंतर पर अपना रंग बदलती है, कभी भूरा तो कभी नीला तो कभी हरा। यहाँ पर “३ इडियट्स” फिल्म की शूटिंग हुई थी। राह में हमने भारत सेना की शाखाएँ देखी। सेना के जवान वहाँ पर अभ्यास कर रहे थे।

पैंगोंग त्सो के बाद हम ज़ांस्कर संगम और पत्थर साहिब गए। पत्थर साहिब गुरुद्वारा है जहाँ जवान अपना माथा टेकने जाते हैं। ज़ांस्कर संगम में दो नदियाँ मिलती हैं, इंडस नदी जो पाकिस्तान से बहकर आती है और ज़ांस्कर नदी जो भारत में बहती है। दो अलग रंगों की नदियों का यह संगम बहुत ही सुन्दर है। वहाँ से लौटते समय हम मैग्नेटिक हिल पर रुके। यहाँ हर वस्तु ग्रेविटी के नियम को तोड़कर उल्टा चलती है। लेह में कई बौद्धिक मंदिर हैं जिसे अंग्रेजी में “मोनास्ट्री “और लद्दाखी में “गोम्पा” कहते हैं। हमने “हेमिस गोम्पा, थिक्से गोम्पा और शांति स्तूपा की सैर की। ये इमारतें बहुत पुरानी हैं और उनकी दीवारों पर बौध मंत्र लिखे गए हैं।

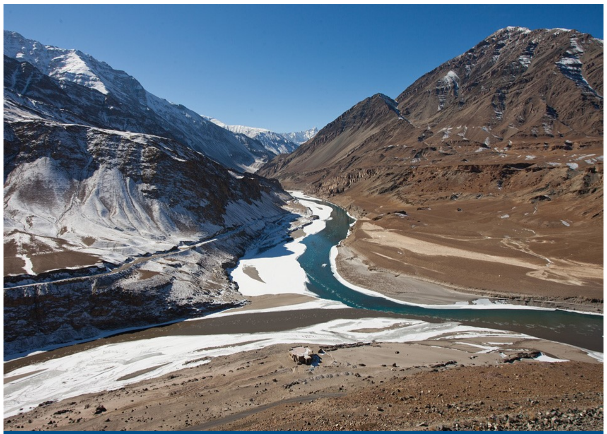

ज़ांस्कर और सिंधु नदियों का संगम

मुझे अपने लेह लदाख यात्रा पर बहुत मजा आया और मेरी यह यात्रा हमेशा मेरे लिए एक खूबसूरत यादगार रहेगी।

“मेरे आदर्श”

प्रमिला अग्रवाल एवं कविता प्रसाद, उच्च स्तर १, साऊथ ब्रंस्विक पाठशाला

हम सभी का व्यक्तित्व जाने अनजाने में किसी न किसी से प्रभावित होता है। यही विशिष्ट व्यक्ति हमारे आदर्श होते हैं जो हमें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ हमारी क्षमता को उजागर करने में हमारी मदद करते हैं। हमारा ऐसा मानना है कि बच्चों के जीवन में एक अच्छे प्रेरणा स्रोत की अत्यंत आवश्यकता होती है क्योंकि एक आदर्श के मार्ग दर्शन से बच्चे रोजमर्रा जीवन में आने वाली नकारात्मक प्रभावों से अपने को बचा सकते है। हमने अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वे अपने प्रेरणा स्रोत को पहचाने और उनके ऊपर अपने कुछ विचार व्यक्त करें। अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के विचार हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

मेरी आदर्श महिला हैं विलिमा रूडोल्फ। उनका जन्म २३ जून १९४० टेनेसी में हुआ था। बचपन में वे पोलियो जैसी खतरनाक बीमारी का शिकार हो गईं पर उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी और पक्के इरादे के साथ कड़ी मेहनत से वे अमरीका की सर्वश्रेष्ठ धाविका बनीं। मुझे विलिमा रुडोल्फ से प्रेरणा मिलती है कि अगर हमारे अंदर कड़ी लगन और पक्का इरादा हो तो कामयाबी जरूर मिलती है

- आशिक पारिख

मेरी आदर्श प्रियंका चोपड़ा है। प्रियंका चोपड़ा ने पहले भारत और फिर अमेरिका में पढ़ाई की, फिर उन्होंने मिस वर्ल्ड का ख़िताब जीता और हिंदी सिनेमा में अभिनेत्री के रूप में काम किया। उन्होंने कई अच्छी फिल्मों में काम कर के कई पुरस्कार जीते। उसके बाद उन्होंने अमेरिका आ कर हॉलीवुड में भी कार्य किया। खूबसूरत होने के साथ वे काफी मेहनती हैं। उन्होंने कठिन मेहनत कर के अपनी जगह बनाई, इसलिए वे मेरी आदर्श हैं।

- अंकित चड्डा

हम सभी का कोई न कोई आदर्श होता है। मेरी आदर्श मेरी चचेरी बहन है जिसका नाम श्वेता है। श्वेता दीदी कैलिफोर्निया में रहती हैं और वे अठारह वर्ष की हैं। वे अभी कालेज में प्रथम वर्ष की छात्रा हैं। वे एक बहुत ही उच्च स्तर की नर्तयांगना हैं। उनमें कड़ी मेहनत, लगन और दृढ़ संकल्प है जिससे मुझे काफी प्रेरणा मिलती है और मेरी भी इच्छा है कि मैं बड़ी हो कर उनकी तरह अच्छी और बेहतर नर्तयांगना बनूँ।

- इशिता भसीन

मेरे प्रेरणास्रोत मेरे पिता जी हैं। उनकी वजह से मुझे गणित के विषय में बहुत रुचि है। मेरे पिताजी का जन्म मुंबई में हुआ और वे एक इंजीनियर हैं। जब वे बड़े हो रहे थे तो उनको भी गणित में बहुत रुचि थी। मुझे जब भी पढ़ाई में मुश्किल आती है तो वे मुझे बहुत संयम और शांति से समझाते हैं। मैं भी बड़ा हो कर अपने पिताजी की भांति गणित में होशियार बन कर उनका नाम रोशन करना चाहता हूँ

- आकाश जैन

मेरे माता-पिता मेरे प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने मुझे जीवन में कई महत्वपूर्ण सबक सिखाए ताकि मैं अपने सपने साकार कर सकूँ और आगे बढ़ता चलूँ। वे कभी कठिन कार्य करने से नहीं घबराते और हमेशा सकारात्मक सोचते हैं। मुझे हमेशा बुराई से दूर रहने की शिक्षा देते हैं। मेरे माता पिता हमेशा मुझे बेहतर बनाने के लिए मेरी मदद करते हैं इसलिए वे मेरे प्रेरणास्रोत हैं।

- आयुष श्रीवास्तव

मेरे आदर्श महात्मा गांधी हैं। उनका जन्म २ अक्तूबर १८६९ को पोरबन्दर में हुआ था। उनका भारत को आजादी दिलाने में बहुत बड़ा योगदान था। भारत को १५ अगस्त, १९४७ में आजादी मिली थी। हम उनको "बापू" के नाम से जानते हैं। वे सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। महात्मा गाँधी ने नेल्सन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग जूनियर को भी प्रेरित किया था। नाथूराम गोडसे ने ३० जनवरी, १९४८ को दिल्ली में गाँधीजी की गोली मारकर हत्या कर दी।

- अरमान शिवांश

मुझे महात्मा गाँधी जी के जीवन से बहुत प्रेरणा मिलती है। वे एक स्वार्थ रहित व्यक्ति थे जो सिर्फ दूसरों के बारे में ही सोचते थे। उनके दिल में गरीबों के लिए बहुत प्रेम था। एक बार रेलगाड़ी में चढ़ते समय उनका एक जूता स्टेशन पर छूट गया तो उन्होंने दूसरा भी नीचे फेंक दिया जिससे कोई गरीब आदमी उसे पहन सके। मुझे यह घटना बहुत प्रभावित करती है। मुझे लगता है वे एक अद्भुत इन्सान थे। मैं भी गाँधीजी की तरह दूसरों के लिए काम करना चाहता हूँ।

- अरनव धाम

मेरे आदर्श ऋतिक रोशन हैं। ऋतिक रोशन एक अभिनेता हैं। उन्होंने कई अच्छी फिल्मों में काम किया है और पुरस्कार जीते हैं। ऋतिक रोशन के हाथ में छह उँगलियाँ है फिर भी वे कभी अपने को कम नहीं समझते है और मेहनत से सिर्फ अपना काम करते रहते हैं। वे एक बहुत ही कुशल नर्तक भी हैं। उनसे मुझे शिक्षा मिलती है की कभी भी अपनी कमियों को बड़ा नहीं समझना चाहिए। मुझे भी बड़ा हो कर उनके जैसे लोकप्रिय बनना है

- आर्या किनिकार

मेरे आदर्श व्यक्ति हैं रॉजर फेडेरर। वे टेनिस के एक प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं। वे बहुत अच्छा टेनिस खेलते हैं और उनका व्यक्तित्व सकारात्मक है। वे कभी हार से परेशान या अपमानित नहीं होते हैं। उनकी प्रतिभा, लगन और संकल्प से मुझे प्रेरणा मिलती है।

- करन मजीठिया

मेरे आदर्श व अनुकरणीय व्यक्ति बराक ओबामा हैं। उनका बचपन काफी मुश्किलों से गुजरा और उनकी परवरिश उनके नाना नानीजी ने की। किन्तु वे बड़े हो कर अमेरिका के राष्ट्रपति बने वह भी आठ वर्षों के लिए। वे राष्ट्रपति बनने वाले प्रथम अफ्रीकन अमेरिकन व्यक्ति हैं। उनसे मुझे प्रेरणा मिलती है की हमेशा हमें मेहनत और लगन से कुछ भी प्राप्त हो सकता है

- सागर वर्मा

मेरे दादाजी मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा हैं। बहत्तर साल की उम्र में भी मेरे दादाजी ने अपने को बहुत स्वस्थ रखा है। उनका दिन प्रातः चार बजे से प्रारम्भ होता है। वे हर दिन दो घंटे का योग अभ्यास और एक घंटे का ध्यान करते हैं। वे बहुत सात्विक खाना खाते हैं। उनका मानना है कि योग से शरीर स्वस्थ और दिमाग शांत रहता है। वे योग का शिक्षण भी करते हैं। मैंने अपने दादाजी से योग ध्यान करना सीखा है और मैं भी उनकी तरह योग शिक्षा से लोगों की मदद करना चाहती हूँ। **- विशाखा तिवारी**

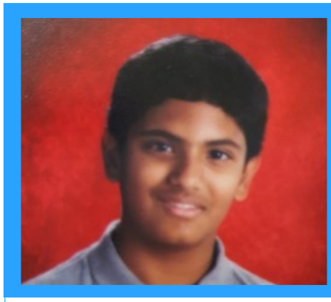

भारत का राष्ट्रीय खेल

मेरा मान ज्ञानेश्वर चुंडी है। मैं स्टेम एकेडिमी एडिसन हाई स्कूल की नौंवी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे सौकर खैलने का बहुत शौक है और मैं सौकर टीम में भी हूँ। टेनिस खेलना भी मुझे अच्छा लगता है। मैं जब दूसरी कक्षा में था, तब से मैं ईस्ट ब्रंस्विक की हिंदी पाठशाला में हिंदी पढ़ता आया हूँ। मैंने कभी हिम्मत नहीं हारी और पूरी लगन से हिंदी सीखने में लगा हुआ हूँ। इस साल मैं अपने हिंदी पाठशाला से ग्रेजुएट करने लिए बहुत उत्सुक हूँ।

भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी है, लेकिन इसकी छवि लोगों के मन से धीरे-धीरे मिटती जा रही है। हॉकी के लिए भारतीयों का प्यार सन् १९२८ में शुरु हुआ था। भारतीय टीम ने एम्सटर्डम के ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीता था। उनकी यह विजय गाथा १९८० तक चली, उन्होंने ८ स्वर्ण पदक, १ रजत पदक और २ कांस्य पदक जीते। उसके बाद वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई खेल हार चुके हैं। कारण, मुख्यतः खिलाड़ियों की चयन प्रक्रिया में कमी को और खेल के व्यापक रूप से प्रचार की कमी को माना जाता है।

क्रिकेट को देश के मुख्य खेल की मान्यता प्राप्त होने के कारण उसके खिलाड़ियों को काफी सुविधाएं प्राप्त हैं। प्राथमिक एवं सार्वजनिक स्तर पर कई क्रिकेट के मैदान हैं, इस सुविधा के कारण यह खेल लोकप्रिय है। स्कूल और कालेजों में भी इसको बढ़ावा मिलता है। हॉकी को भी ऐसा बढ़ावा सरकारी एवं व्यापारिक स्तर पर मिलना चाहिए। सभी शिक्षण स्थलों पर इसका प्रचार होना चाहिए। ऐसा होने से हॉकी सबके दिल में फिर से स्थान बनाएगी।

ईश्वर की कृपा से फिर हमारी यह मातृभूमि, ध्यान चंद, उधम सिंह, अजीत पाल सिंह, धनराज पिल्लई जैसे महान हॉकी के रत्नों पर गर्वित होगी। फिर से ये रत्न राष्ट्र का श्रृंगार पदकों से करेंगे और भारत का स्थान हॉकी के जगत में ऊँचा होगा।

बुरा न मानो होली है

होली का त्योहार फागुन महीने में मनाते हैं। इस त्योहार में सब सफ़ेद कपड़े में बाहर जाकर रंग फेंकते हैं। होली ख़ुशी मनाने का त्योहार है। इस दिन पुरानी दुश्मनी भुलाना चाहिये। रुठे हुए को मनाना चाहिए और साथ में बैठ कर खाना चाहिये। होली ठंड़ का मौसम जाने का वक़्त होता है। होली में तिल के लड्डू खाते हैं और लोग नाचते-नाचते गाना गाते हैं। लाल, नीला, पीला, हरा और बैंगनी रंग हवा में उड़ाते हैं। होली में लकड़ियों से आग भी जलाते हैं। इसमें नारियल डालकर पूजा करते हैं। होली एक ऊर्जावान त्योहार है।

- रिया हिरपारा, साउथ ब्रंसविक हिन्दी पाठशाला

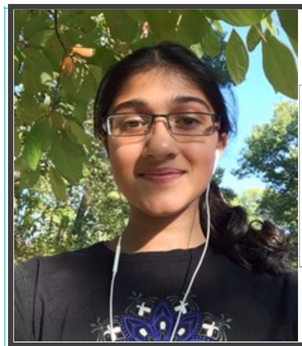

एक स्मरण (आभास)

मनीषा पार्थसारथी

मेरा नाम मनीषा पार्थसारथी है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और ईस्ट ब्रंसविक की हिन्दी पाठशाला में उच्च स्तर-२ की छात्रा हूँ। मुझे संगीत और पशु-पक्षियों में बहुत दिलचस्पी है। मेरे मनपसंद विषय साहित्य और विज्ञान हैं। बड़ी होकर मैं साइकोलोजिस्ट या अध्यापिका बनना चाहती हूँ।

समय एक अनमोल चीज़ है, हमारी यादों, भावनाओं और शिक्षा का एक खजाना है। समय का एक छोटा सा पल हमारी ज़िंदगी को बदल सकता है या फिर अपनी ताकत से पूरे विश्व में उथल-पुथल मचा सकता है। जैसे-जैसे समय बीतता है, हम अतीत में झांक अपने सुख-दुख और पछतावे के क्षणों को सोच भावुक हो उठते हैं। यह मेरा हिंदी पाठशाला का आखिरी साल है, यह सोच मेरा दिल भर आता है और मुझे अहसास होता है कि हिंदी के सीखने से मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

मैं जब छह साल की थी तो मेरे माता-पिता ने मुझे हिंदी सीखने के लिए हिंदी पाठशाला में भरती किया। शुरु-शुरु में मैं हिंदी सीखने के लिए अनिच्छुक थी, पाठशाला में जाना पसंद नहीं था। किसी भी भाषा को सीखने के लिए लगन और परिश्रम की आवश्यकता होती है, जो उस समय मैं समझ नहीं पाई। हर शुक्रवार मैं कक्षा के एक कोने में बैठ, अपनी ही दुनिया में खो जाती। उसके बावजूद भी मैंने बहुत सारे नए शब्द और कविताएं सीखीं, जिससे मुझे बढ़ावा मिला और मैंने अपनी कक्षा में ध्यान देना शुरु किया। समय के साथ-साथ मेरा परिचय भारतीय संस्कृति और परंपराओं की सुंदरता से होने लगा। हिंदी पाठशाला में भी मेरी अपनी एक जगह बन गई। नए दोस्त मिले और मुझे अपनी विशेष योग्यताओं के बारे में पता चला, जन संबोधन का पहला अनुभव भी मुझे यहीं मिला। उच्चस्तर की कक्षाओं में मेरा परिचय एक जोशीली और मेधावी शिक्षिका से हुआ, जिनसे मेरा हिंदी शिक्षा का यह सफर और भी सुखद हुआ। उनकी प्रतिभा से हम सभी फूले-फले और इस साल गर्व से स्नातक होंगे।

ये सभी निराली यादें अभी भी मेरे मन में ताज़ा हैं और यह सोच मुझे बहुत दुख होता है की यह मेरा आखिरी साल है। इन आठ सालों के बाद हिंदी पाठशाला ने मेरे हृदय में एक विशेष जगह बनाई है। हिंदी कक्षा के पाठ और इससे जुड़े लोग मेरे दिल में हमेशा बसे रहेंगे।

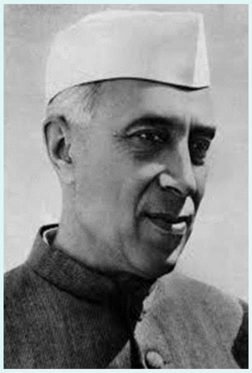

जवाहर लाल नेहरू भारत के पहले प्रधानमंत्री थे। उनका जन्म १४ नवंबर सन् १८८९ को इलाहाबाद में हुआ था। गांधीजी के साथ उन्होंने भारत की आजादी में सहयोग दिया। वे विश्व में शांति लाना चाहते थे। इसलिये उन्हें शांति दूत का नाम दिया गया। उन्हें बच्चे बहुत पसंद थे, इसलिए नवंबर १४ बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। उनकी पुत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं।

श्रेय जैन, उच्च स्तर-१, साउथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला

भारत के विभिन्न प्रांतों में दिवाली की प्रथा

नमस्ते,

मेरा नाम स्वागता माने है। इस साल मुझे उच्चस्तर-१ को पढ़ाने का अवसर मिला। ईस्ट ब्रंस्विक की संचालिका मायनो मुर्मू जी की सहायता से कक्षा के सारे महत्वपूर्ण कार्य आसान लगते हैं। अध्यापन के कार्य में वे भी कंधे से कंधा लगाकर जुड़ जाती हैं। मोतियों की जैसे माला बनती है वैसे ही इस कक्षा के विद्यार्थियों ने एक दूसरे की ओर हाथ बढ़ा कर अपनी पहचान बनाई है। दिवाली के बड़े त्यौहार पर “हमने दिवाली कैसे मनाई” इसका वृत्तांत विद्यार्थियों ने अपने शब्दों में कहने का प्रयास किया। भारत के विभिन्न प्रांतों से आये हुए इन बच्चों ने अपने प्रांत की विशेषता बताई है। शायद इस लेख से दूसरे विद्यार्थियों को भारत के अलग प्रांतों में त्यौहार मनाने की प्रथा के बारे में जानकारी मिलेगी।

ऐशानि कपिल

हम पंजाबी लोग दिवाली के अवसर पर बहुत कुछ मिठाइयाँ बनाते हैं। उपवास भी रखते हैं। कुछ लोग "आम की लस्सी" जो हमारा सबसे प्रिय पेय है, वह भी बनाते हैं। धन का दान भी करते हैं। रिश्तेदारों को मिठाइयाँ और उपहार भेट में देते हैं। घर को दियों की रोशनी में सजाते हैं।

देवार्सी मलिक

आतिशबाज़ी का मजा लेते हैं। हम इस दिन मिठाइयाँ बनाकर रिश्तेदारों और मित्रों के साथ खुशियाँ मानते हैं। दीपावली का अर्थ है - **दीपों की पंक्तियां**। इसलिए घर में दिए लगाते हैं। हम सब भगवान जी का दर्शन लेते हैं। घर के सारे लोग मिलकर एक साथ वक्त बिताते हैं। **बड़े लोगों का आशीर्वाद लेते हैं**। दीपावली मुझे बहुत अच्छी लगती है।

कपिला माने

हम मराठी लोग दिवाली में मिठाई, रंगोली, नए कपड़े, दिए लगाना, खुशियाँ मनाकर उनके साथ शिवाजी महाराज की याद में उनका "किला (Fort)" बनाना की रस्म भी करते हैं। महाराष्ट्र में ज्यादा घरों के सामने मिट्टी का बनाया यह किला और उसके ऊपर विराजमान शिवाजी महाराज और उनके साथी जिन्हें "मावळे" कहा जाता था उनकी प्रतिमा रखी जाती है। कहा जाता है कि घर की समृद्धि और दीवाली के पर्व में आई हुई लक्ष्मी का रक्षण ऐसे धर्मी आचरण होने वाले राजा के स्मरण से होता है। यह मन और बुद्धि की दिव्य ऊर्जा की चमक का प्रतीक है। इसलिए हम किले के माध्यम से दिव्य चमक को आत्मसात कर सकते हैं। हमने भी दिवाली में ऐसा किला बनाकर बाकी विधियों के साथ उसके सामने रंगोली और दिया रखा था।

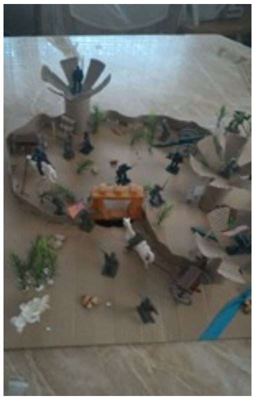

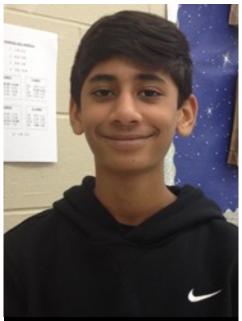
रविश मेहता

हम गुजराती लोग दीवाली धनतेरस के पहले दिन से मानते हैं। हमारे लिए दिवाली का दिन महत्वपूर्ण होता है। भगवान महावीर इसी दिन को मोक्ष पधारे थे। हम मंदिर जाकर पूजा पाठ करते हैं। दिवाली का पाडवा दिन हमारा नया साल होता है। मिठाइयाँ बनाते हैं। रिश्तेदार और मित्रों से मिलकर खुशियाँ मानते हैं।

श्रेया भारद्वाज

हम उत्तर भारतीय दीवाली धनतेरस के दिन से भाई दूज के दिन तक मनाते हैं। हम धनतेरस के दिन घी के दिए लगाकर उनकी पूजा करते हैं। इस दिन नई वस्तु (चीज) खरीदने का हमारा रिवाज है। कुछ मिठाइयाँ भी बनाते हैं। इस दिवाली को हम बड़ी दिवाली कहते हैं। शाम के वक्त दिए लगाकर लक्ष्मीजी की पूजा करते हैं। नए कपड़े पहनकर, रंगोली बनाना और दिए लगाना मुझे अच्छा लगता है। यही नहीं, हम छोटी दिवाली के दिन हनुमान जी की पूजा करते हैं। दिवाली हमारा साल भर में से बड़ा त्योहार है।

क्रिश देसाई

भारत के लोग दिवाली अलग-अलग तरीकों से मनाते हैं। हम नए कपड़े पहनकर अपने घर में लक्ष्मी जी की पूजा करते हैं। हम अपने घर रंगोली, कंदिल और दियों से सजाते हैं। दिवाली में रोशनी से सारे घर को जगमगा देते हैं। मुझे दिवाली में परिवार जनों और रिश्तेदारों के साथ बहुत मजा आता है।

मेरा नाम सार्थ चतुर्वेदी हैं। उच्च स्तर–२ में मैं पढ़ता हूँ। मैं सातवीं कक्षा में हूँ। गणित मेरा सबसे प्रिय विषय है। मुझे कम्प्यूटर, टेनिस और सारे खेल पसंद हैं।

विदेशी प्रभाव

अंग्रेजों का आज के भारतीय समाज पर बहुत बड़ा प्रभाव है। यह प्रभाव तब शुरू हुआ जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापार के लिए भारत आयी थी, मगर वह धीरे धीरे भारत के विभिन्न राज्यों पर अपना झंडा लहराते गये। उसके बाद एक वक्त आया जब सम्पूर्ण भारत अंग्रेजों के साम्राज्य का हिस्सा बन गया। अंग्रेजों ने लगभग दो सौ साल तक भारत पर अपना अधिकार जमाए रखा।

आज के ६९ सा बाद भी अंग्रेजी प्रभाव हमारे समाज पर छाया है। एक उदाहरण है भाषा। अगर आप भारत के कुछ क्षेत्रों में जाओगे, तो आप देखोगे कि लोग भारतीय भाषा कम और अंग्रेजी ज्यादा बोल रहे हैं। इसका कारण है लोग उधर अंग्रेजी को ज्यादा महत्व देते हैं। दूसरा उदाहरण है खेल। आज भारत में लोग सबसे ज्यादा क्रिकेट खेलते हैं। हॉकी हमारी राष्ट्रीय खेल होने के बावजूद क्रिकेट सबसे लोकप्रिय है। जैसे आपने पढ़ा अंग्रेजों का आज की भारतीय समाज पर बहुत बड़ा प्रभाव है। हमें हिंदी भाषा उपयोग करने में गर्व होना चाहिए।

ईशा श्रीवास्तव

मेरा नाम ईशा श्रीवास्तव है। मैं १० वर्ष की हूँ और साउथ ब्रंस्विक मध्यमा-३ की छात्रा हूँ। मुझे पुस्तकें पढ़ना, चित्रकारी, तैराकी और मार्शल आर्ट्स बहुत पसंद हैं। मैंने एक ऋतु कैलेंडर बनाया है। यह आप सभी के लिए एक रोचक पहेली भी है।

सबसे अंदर के घेरे में मेरा काल्पनिक आत्म चित्र है। उसके बाद के घेरे में वर्ष के चार मौसम आपको पहचानने हैं। और आखिरी घेरे में साल के १२ महीने भी बूझने हैं। आप हिंदी महीनों के नामों की मदद ले सकते हैं। मजा आया ना !!!

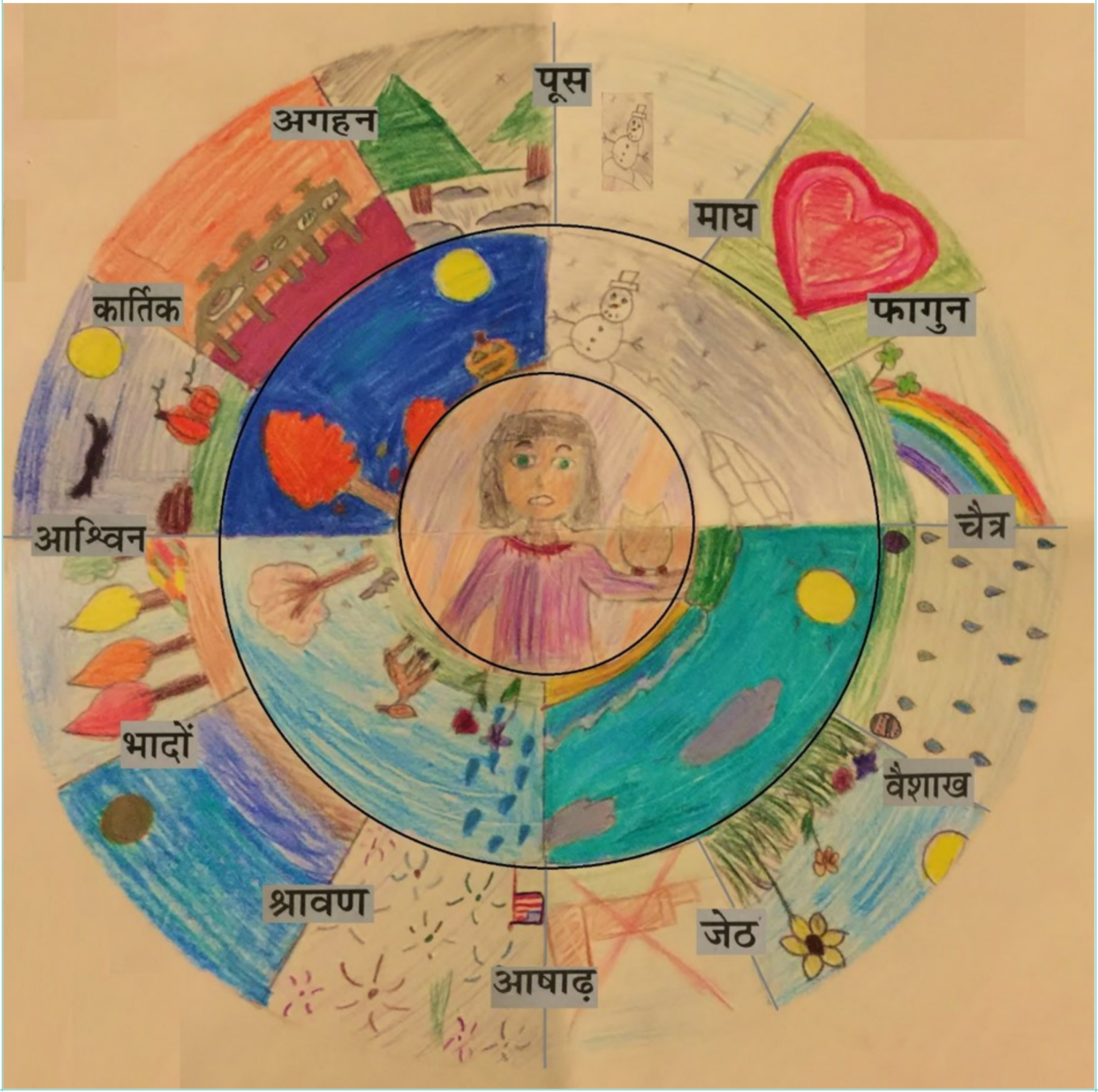
पूस
माघ
फागुन
चैत्र
वैशाख
जेठ
आषाढ़
श्रावण
भादों
आश्विन
कार्तिक
अगहन

मधुबनी चित्रकला

मेरा नाम अदिति चौधरी है। मैं १२ साल की हूँ। मैं न्यू जर्सी में रहती हूँ। मधुबनी चित्रकला एक प्राचीन कला है, जो मिथिला, बिहार में शुरू की गई थी। यह शादियों में इस्तेमाल की जाती है और यह अभी भी घरों को सजाने के लिए उपयोग की जाती है। मधुबनी चित्रों में आमतौर पर हिंदू देवी-देवता कृष्ण, राम, शिव, दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती के रूप को दर्शाते हैं। यह पैटर्न और विभिन्न डिजाइनों से भरी होती है। यहाँ ज्यादातर जीवन को दिखाया जाता है। इस चित्रकारी में पेड़-पौधों और जानवरों को बनाया जाता है। जैसे कि मोर, हाथी, कछुआ, मछली इत्यादि। इसमें बहुत सारे रंगो का प्रयोग होता है। बहुत पुराने जमाने में चित्रकारी की सहायता से ही कहानी बताई जाती थी। मुझे चित्रकारी करने की प्रेरणा मेरी माँ से मिली है। आशा है की आपको नीचे बनाया गया चित्र पसंद आएगा।

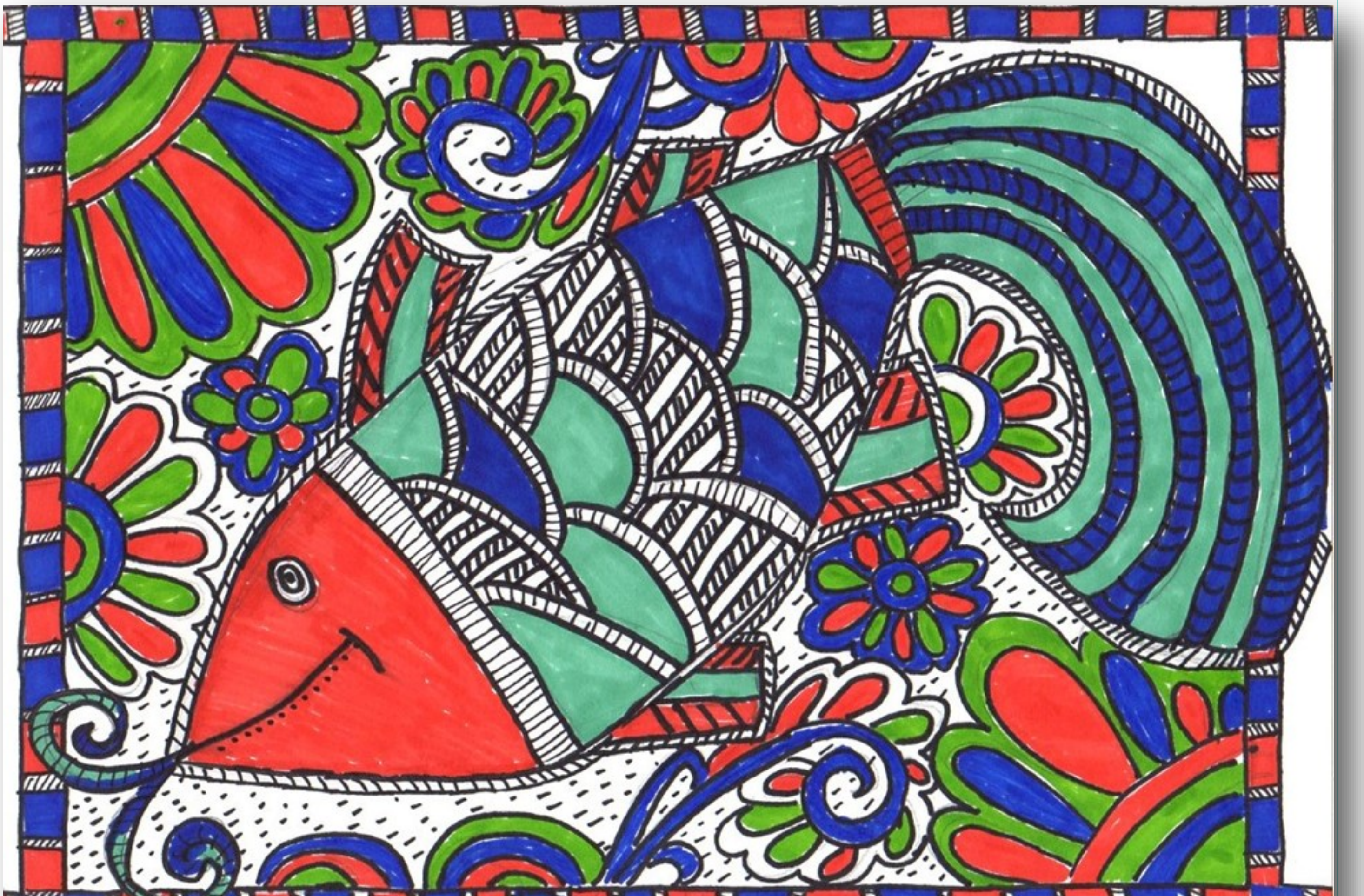

कनिष्ठ १ में मनाये गए त्योहारों की चित्र सूची

बच्चों ने गणेश जी के कागज के कप से छोटे छोटे शिल्प बनाये। उन्होंने गणेश जी की आँखें, सूंड, मुकुट, कान, तिलक बनाया और यही सारे शब्द भी सीखे। बहुत सारे बच्चों ने गणेश जी की कहानियाँ सुनाने का प्रयास किया।

बच्चों ने गांधी जयंती मनाते हुऐ उनके और तीन बंदरों के चित्र में रंग भरे। इस गतिविधि में उन्होंने गांधी जी के बारे में बहुत सारी जानकारी पाई, जैसे कि उनका नाम, जन्म स्थान, और काम, जैसे चरखा चलाते हुऐ खुद के कपड़े बनाना। उन्होंने तीन बंदरों की कहानी भी सुनी।

नवरात्री का उत्सव हम सब ने बहुत उत्साह से मनाया। बच्चों को दुर्गा माता जी कि संकल्पना समझाने का प्रयत्न करते हुऐ हमने कागज के पिरामिड तैयार किए। पिरामिड के तीनों भागों में हमने लक्ष्मी माता, सरस्वती माता और पार्वती माता के चित्र छापे। इससे हमने सीखा कि कैसे तीनों माताओं की शक्ति मिलाकर दुर्गा माता का रूप बनता है, जो हमे सदा वन्दनीय है।

दशहरा का त्यौहार मनाते हुऐ राम, लक्ष्मण, सीता जी की कहानी सुनी और हमने रावण की छवि बनाई। रंगीन कपास से हमने १० मुँह का रावण बनाया।

२०१५ को अलविदा करते हुए हमने २०१६ रंगीन कागज पर लिख कर उनसे मुखौटे बनाये। उनमें दो आँखें बनायीं जिससे बच्चों को मुखौटों से खेल कर बड़ा मजा आया।

बच्चों को गणतंत्र दिवस का महत्व बताया। नियमों का महत्व जाना। उदाहरण के लिए हमने उन्हें उनकी ही पाठशाला के नियमों की सूची बताई। इस तरह से हर एक देश के लिए नियम होने कितने जरूरी है, इसकी हमने चर्चा की। भारत के झंडे बनाने का सब ने आनंद लिया। झंडे के तीन रंगों का और अशोक चक्र का भी अर्थ समझाया।

मकर संक्रांति का उत्सव हमने रंगबिरंगी पतंग बनाकर मनाया। बच्चों को बहुत आनंद आया। मकर संक्रांति का अर्थ भी समझाया।

खेल-खेल में अभ्यास– चैरी हिल हिंदी पाठशाला कनिष्ठ-२

सोनल जोशी

छोटी उम्र में बच्चों में बहुत ज्यादा उत्साह होता है और हरदम कुछ नया सीखने की इच्छा। हमारी कक्षा के विद्यार्थियों की इसी ऊर्जा को देखते हुए हमने हमारी कक्षा में कुछ प्रयोग किए।

हेमांगी चव्हाण-शिंदे

प्रस्तुत चित्र कक्षा के सारे बच्चों की सामूहिक पढ़ाई को दर्शाता है। इस चित्र द्वारा हमने बच्चों को शरीर के अंग, कुछ स्वर और अंकों का पुनः अवलोकन करवाया। बच्चों ने पहले शरीर के विभिन्न अंग बनाये, फिर इनमें स्वर और अंक भरे। सभी बच्चों को यह चित्र बनाने में बड़ा मज़ा आया। इस प्रकार उनका ज्ञान भी पक्का हो गया।

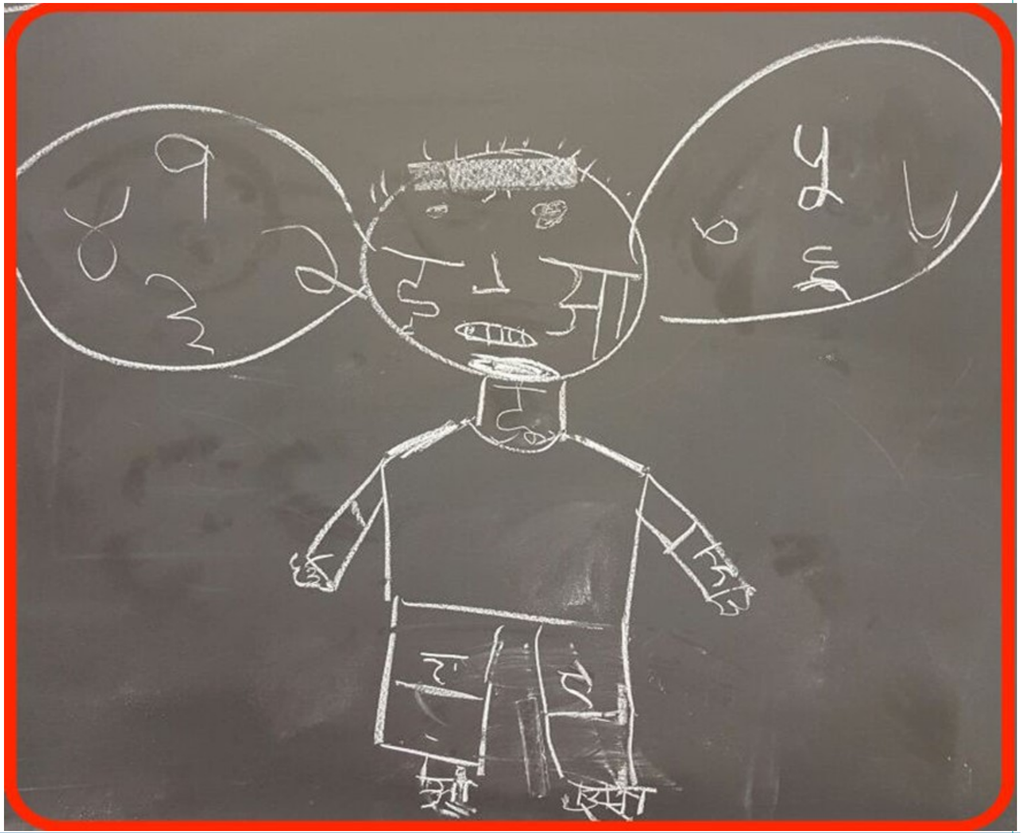

जंगली जानवरों के नाम याद करने के लिए भी एक ऐसा ही प्रयास किया गया। हमने कक्षा में पढ़ने के उपरांत सभी बच्चों के लिये एक-एक प्राणी निर्धारित किया और गृहकार्य में इस प्राणी के बारे में २ सरल वाक्य याद करने को दिए। उदाहरणतः

मैं हूँ बंदर यानी Monkey। मैं बहुत नटखट हूँ।

मैं हूँ लोमड़ी यानी Fox। मैं बहुत चालाक हूँ।

मैं हूँ हिरन यानी Deer। मैं बहुत तेज़ भाग सकता हूँ।

अगले सप्ताह बच्चों द्वारा प्रस्तुत वाक्य सुनकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई और बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ गया।

सभी बच्चों का हिंदी के प्रति बढ़ता रिझाव हमें और बेहतर कोशिश करने के लिए प्रेरित करता है।

स्वामी विवेकानंद कौन थे?

मेरा नाम आलोक भट्टाचार्य है। मैं १० साल का हूँ और पाँचवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं कनेक्टिकट में रहता हूँ और पाँच साल से हिन्दी यू.एस.ए. का छात्र हूँ। मैं बहुत सारी पुस्तकें पढ़ता हूँ।

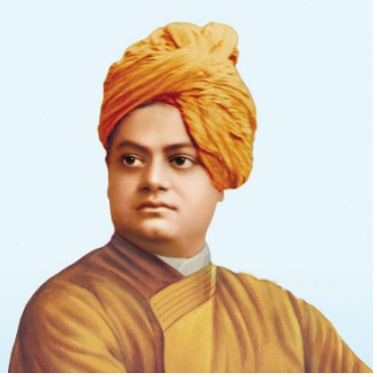

स्वामी विवेकानंद का असली नाम नरेन्द्रनाथ दत्ता था। उनका जन्म जनवरी १२, १८३६ को कोलकाता में हुआ था। जब वह बालक थे, तब संगीत, व्यायाम और पढ़ाई में प्रतिभावान थे किंतु भगवान में विश्वास नहीं करते थे। एक दिन उन्होंने श्री रामकृष्ण के बारे में सुना। वे उनसे मिलने गये और एक सवाल पूछा, जो उन्होंने अनेक लोगों से पूछा था किंतु संतोषजनक उत्तर नहीं मिला था। प्रश्न था "महोदय, क्या आपने भगवान को देखा है?" श्री रामकृष्ण ने तुरंत जवाब दिया "हाँ, मैंने देखा है। तुम जैसा स्पष्ट देखा है।" उस जवाब ने नरेन्द्रनाथ के मन से सभी संदेहों को हटा दिया।

फिर, दो दुखद घटनाएं उसके जीवन में हुई। पहला, उनके पिता गुज़र गए, और उनका परिवार दरिद्र हो गया। दूसरा, श्री रामकृष्ण जी को कैंसर हो गया। श्री रामकृष्ण जी को एक घर में ले जाया गया और उनके शिष्यों ने उनका ख्याल रखा। नरेन्द्रनाथ नेता के रूप में उस समूह में शामिल हो गए। एक दिन श्री रामकृष्ण ने वस्त्र वितरित किए और भोजन के लिए भीख माँगने के लिए उन्हें बाहर भेजा और इस तरह एक नए मठ की बुनियाद बन गयी। फिर अगस्त १६, १८८६ में श्री रामकृष्णा का देहांत हो गया। नरेन्द्रनाथ के नेतृत्व में उनके शिष्यों ने एक नए मठ का गठन किया, जिसका नाम रामकृष्ण मिशन था।

उसके बाद स्वामी विवेकानंद ने जीवन में एक बड़े मिशन के लिए भीतर की आवाज सुनी। उन्होंने पूरे भारत की यात्रा की और लोगों में आत्मविश्वास जगाया। स्वामी विवेकानंद ने सन् १८९३ में शिकागो में आयोजित पहले विश्व धर्म संसद में भारत और हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व किया।

आरुषी अत्रे

मेरा नाम आरुषी अत्रे है। मैं लॉरेंसविल इंटरमीडिएट स्कूल में कक्षा ५ में पढ़ती हूँ और हिंदी पाठशाला में उच्चतर-१ की छात्रा हूँ। मुझे टेनिस खेलना बहुत पसंद है और मैं आगे चलकर इसे अपने करियर के रूप में अपनाना चाहती हूँ। मैं अपनी छोटी बहन दिया से बहुत स्नेह करती हूँ।

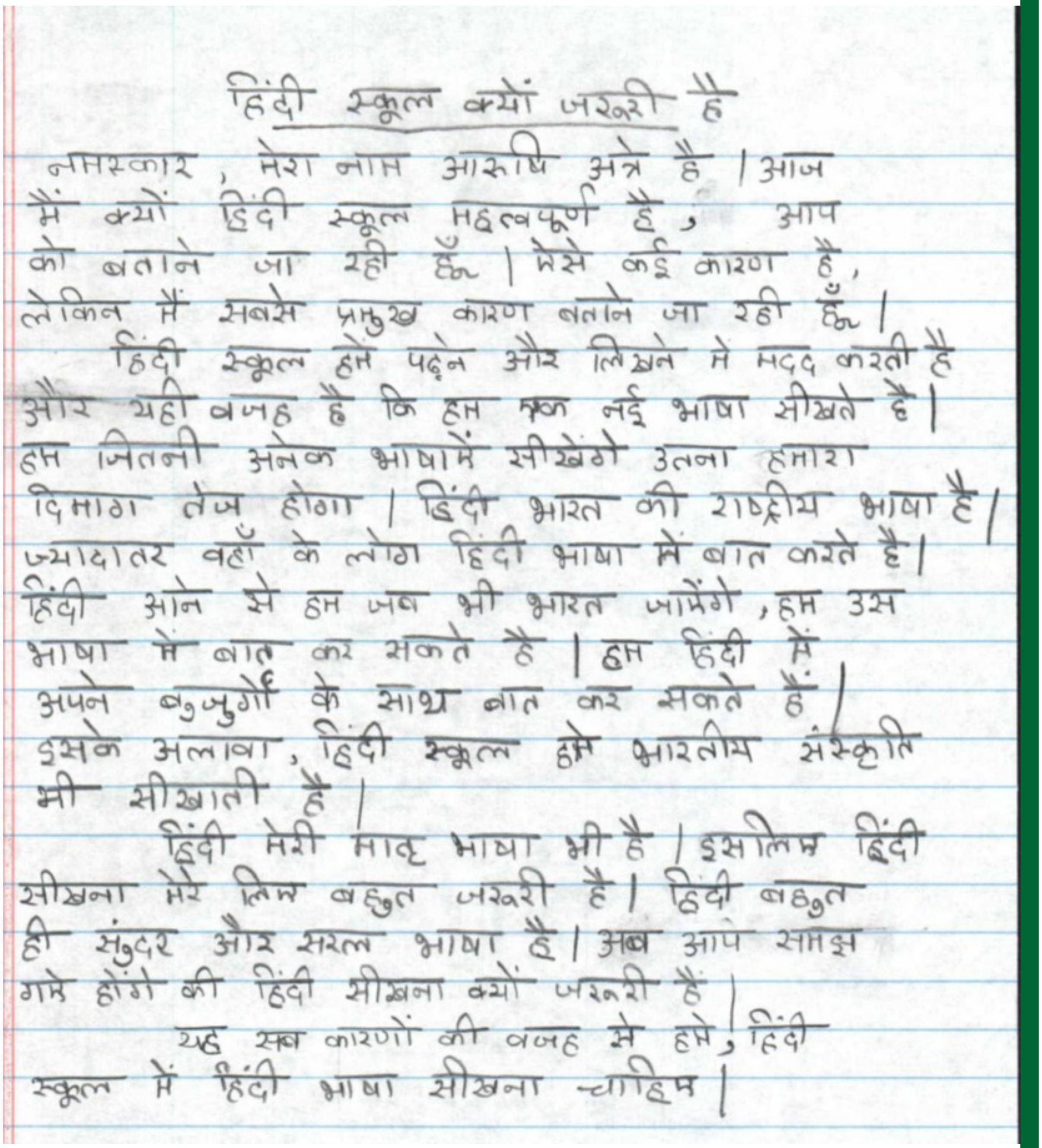

हिंदी स्कूल क्यों जरूरी है

नमस्कार, मेरा नाम आरुषि अत्रे है। आज मैं क्यों हिंदी स्कूल महत्वपूर्ण है, आप को बताने जा रही हूँ। ऐसे कई कारण है, लेकिन मैं सबसे प्रमुख कारण बताने जा रही हूँ।

हिंदी स्कूल हमे पढ़ने और लिखने मे मदद करती है और यही वजह है कि हम एक नई भाषा सीखते है। हम जितनी अनेक भाषामें सीखेंगे उतना हमारा दिमाग तेज होगा। हिंदी भारत की राष्ट्रीय भाषा है। ज्यादातर वहाँ के लोग हिंदी भाषा मे बात करते है। हिंदी आने से हम जब भी भारत जायेंगे, हम उस भाषा में बात कर सकते है। हम हिंदी में अपने बुजुर्गों के साथ बात कर सकते हैं। इसके अलावा, हिंदी स्कूल हमे भारतीय संस्कृति भी सीखाती है।

हिंदी मेरी मातृ भाषा भी है। इसलिए हिंदी सीखना मेरे लिए बहुत जरूरी है। हिंदी बहुत ही सुंदर और सरल भाषा है। अब आप समझ गये होंगे की हिंदी सीखना क्यों जरूरी हैं।

यह सब कारणों की वजह से हमे, हिंदी स्कूल में हिंदी भाषा सीखना चाहिए।

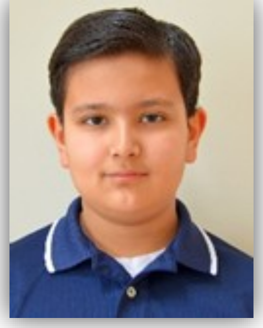

उत्तरजीविता

मेरा नाम रोहन गुप्ता है और मैं ग्यारह वर्ष का हूँ। मैं एक मजेदार और उत्साही छात्र हूँ और स्कूल में या घर पर सबसे उत्तम होने का प्रयास करता हूँ। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला में मध्यमा-२ में पढ़ता हूँ। पढ़ाई के अलावा मुझे विडिओ खेल बहुत अच्छे लगते है। मैं तएक्वांडो में ब्लॅक बेल्ट हूँ।

हे भगवान, मेरे साथ यह क्यों हो रहा है? अकवेरिअस चिल्लाया! वह एक हवाई जहाज़ पर, हवा में बीस हजार फीट से नीचे गिरता जा रहा था, और उसे यह भी पता नहीं था कि पैराशूट कहाँ है। अचानक से हवाई जहाज की छत से मास्क गिर गये। उसने अपनी जीवन बचाने वाली जैकेट खोजी और मास्क के फीते का उपयोग कर उसने चार रस्सियों का गठन किया। अकवेरिअस ने अन्य यात्रियों को जीवन नौका में हवा को भरने के लिए कहा और उसने डक्ट टेप से रस्सियों को जीवन नौका से बांध दिया। उन्होंने शेष हल्के सीट कुशन का प्रयोग करके एक बैरियर बनाया जिससे कोई भी नौका से गिरे नहीं। उसने सभी यात्रियों को नौका पर बुलाना शुरु कर दिया। तभी विमान ने झटका खाया और वह जीवन नौका हवाई जहाज से बाहर गिर गयी ।

सेजिटेरियस मुस्कुराया - “अगर हम आग बनाने में सफल हो जाएँ, तो इन पक्षियों को पका सकते हैं। इसके अलावा अगर हमें एक लंबा पेड़ मिल जाए तो हम उसे प्रकाशगृह के रूप में उपयोग कर सकते हैं, तो यह गुज़रते विमानों के लिए एक संकेत हो जाएगा।" फिर उन्होंने पेड़ को आग लगाई और मांस को भी कुछ भागों में पकाया। फिर सब ने पेट भरकर खाना खाया और सोने चले गये। अगले कुछ दिन इसी तरह से चले और एक सप्ताह के बाद उन सब ने लगभग उम्मीद छोड़ ही दी थी।

फिर एक दिन सेजिटेरियस के कानों में एक हल्की सी गूंज सुनाई दी। एक हेलीकाप्टर आ रहा था! वह जल्दी से एक पेड़ के ऊपर चढ़ गया। उसे कुछ बादल भी आते दिख रहे थे, तो इससे सूरज बादलों की आड़ मैं छिप जाता। उसने तुरंत पेड़ पर आग जलायी।

ऊपर हवा में पायलट ने ज्वलंत पेड़ों को देखा तो उसने कमांड टावर को बताया। "सर हम ज्वलंत पेड़ों को देख रहे हैं और यह विमान दुर्घटना के स्थान पर है। कमांड टावर ने जवाब दिया कि उन्हें तुरंत जाँच करनी चाहिए और यह संभव है कि उन्हें वहाँ लोग जीवित मिलें। पायलट जगह की जाँच करने के लिए हेलीकाप्टर नीचे को नीचे ले गया तो उसने वहाँ कुछ लोगों को पेड़ से लटके हुए देखा। उसने उनसे जल्दी से साथ में चलने को कहा। अकवेरिअस, सेजिटेरियस और टोरस हेलीकाप्टर की और भागे।

"आप सभी को अपनी पूरी दास्तान बतानी है" पायलट ने हँसते हुए उड़ान भरी।

UNION COUNTY PEDIATRICS GROUP

817 RAHWAY AVE
ELIZABETH, NJ 07202
908-353-5750

102 JAMES STREET SUITE 303
EDISON, NJ 08820
732-662-3300

PEDIATRIC OFFICE

ACCEPTING PATIENTS FROM NEWBORN TO 21 YEARS

PROCEDURES DONE IN THE OFFICE

EKG, PFT, HEARING TEST, TYAMPOGRAM, BLOOD TEST

CALL FOR APPOINTMENT

एडिसन पाठशाला उच्च स्तर-१

हेरी पॉटर - मेरी प्रिय पुस्तक श्रृंखला

नमस्ते। मेरा नाम श्रेयस वर्दे है। मैं वुडरो विल्सन एडिसन पाठशाला की छठी कक्षा और हिन्दी यू.एस.ए. की उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ता हूँ। यह मेरा हिन्दी यू.एस.ए. में पाँचवाँ साल हैं। मेरा मनपसंद खेल बास्केटबॉल है और मैं एक कंप्यूटर इंजीनियर या एक लेखक बनना चाहता हूँ।

बचपन से मुझे किताबें पढ़ना अच्छा लगता है। मैं अपनी माताजी के साथ पुस्तकालय से बहुत सारी किताबें लेकर घर आता था और उन्हें बहुत शौक से पढ़ता था। मेरे पिताजी भी हमेशा मेरी मनपसंद किताब मंगवाते और मुझे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते। मैंने अभी तक जो भी किताबें पढ़ीं उन सब में मुझे हेरी पॉटर की कहानियाँ बहुत पसंद हैं। मैंने सभी सब सात किताबें पढ़ी और उन सभी के चलचित्र भी देखे हैं। मैं हॉगवट्स महल देखने के लिए फ़्लोरिडा में युनिवर्सल स्टूडियो भी गया था। जो कुछ मैंने किताबों में पढ़ा, वहाँ पर वह सब बनवाया गया था। मैंने वहाँ पर हेरी पॉटर की वोड भी ख़रीदी। मुझे हेरी पॉटर की कहानियों के सभी पात्र बहुत पसंद हैं पर विशेष रुप से डम्बलडोर बहुत अच्छे लगते हैं क्योंकि वह बहुत शक्तिशाली, धार्मिक, और बुद्धिमान है।

हेरी पॉटर की कहानियों में से मुझे गोबलेट ओफ फ़ायर पुस्तक सबसे ज़्यादा पसंद है क्योंकि वह रोमांचक, मज़ाक़िया और एक्शन से भरपूर है। इस कहानी में हेरी एक प्रतियोगिता में भाग लेता है जहाँ पर वह उसके दुश्मन वोल्डेमॉट से मिलता है। वोल्डेमॉट चालाक, बुरा और क्रूर है। वह अपने जादू का हर प्रयोग हेरी पॉटर को हराने के लिए करता है, लेकिन अंत में वह हार जाता है। इन कहानियों से हमें यह सीख मिलती की हमेशा सच्चाई की जीत होती है और बुराई की हार।

ग्रीष्म की छुट्टियाँ

२०१५ की ग्रीष्म की छुट्टियों में मैंने बहुत सारी चीजें की। मेरे नाना और नानी भारत से आए हुए थे, जिनके साथ मेरे दिन अच्छे से बीते। मैं उनके साथ केरम, क्रिकेट और ताश खेला। मैंने इस बार जादू सीखा और सबका मनोरंजन किया। हम सब मेरे मामा और मामी के पास वर्जीनिया गए और मैं वहाँ दो सप्ताह रहा। मेरी नानी जी ने मेरे मनपसंद भोजन के पदार्थ बनाए। जुलाई में मैं अपने पिताजी और माताजी के साथ बीस दिन के लिए भारत में गोवा गया। वहाँ मैं अपने दादा, दादी, बुआ, और रिश्तेदारों से मिला। गोवा में मैंने बहुत सारे मंदिर, चर्च और झरने देखे। गोवा में अमेरिका से ज्यादा बरसात हो रही थी। मैं रोज अपने नानाजी की मोटर साइकिल पर घूमने जाता था। एक दिन, घूमते हुए, हमने २० मोर देखे जिनमें से ३ मोर नाच रहे थे। हम सब बेंगलुरु भी गए और खूब घूमे। अगस्त में हम वापस आ गए क्योंकि मेरी पाठशाला आरम्भ होने वाली थी। मुझे भारत में बहुत मजा आया। इस वर्ष हम कुछ ही दिनों के लिए गए थे लेकिन अगली बार मैं कुछ महीनों के लिए अवश्य जाऊँगा।

ताज महल

मेरा नाम आदित्य शेलके है। मैं ग्यारह साल का हूँ। मैं छठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे तैरना, गणित, गिटार बजाना और बास्केटबॉल खेलना अच्छा लगता है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला में उच्च स्तर-१ का विद्यार्थी हूँ।

ताज महल दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक है। यह भारत के आगरा शहर में है। यह संगमरमर से बना एक बहुत बड़ा मक़बरा है। इसे बहुत समय पहले राजा शाहजहाँ ने अपनी प्रिय रानी, मुमताज़ की याद में बनाया था।

जब मैं पाँच साल का था, मैं अपने परिवार के साथ भारत, ताज महल देखने गया था। दिल्ली तक हम हवाई जहाज़ से गए, फिर हमने आगरा जाने के लिए एक टैक्सी ली। जब हम ताज महल पहुँचे, मैं उसे देखकर देखता ही रह गया। वह एक बहुत सुंदर सफ़ेद इमारत थी। उसके सामने एक बहुत बड़ा बाग और उसके बीच में एक तालाब था जिसमें ताज महल का प्रतिबिंब दिखता था जो मुझे बहुत अच्छा लगा। ताज महल के चारों कोनों में एक-एक बड़ी मीनार थी। हम लोग ताज महल के अंदर जाने के लिए लाइन में लगे। बहुत समय लगा, पर जब हम मक़बरे के अंदर पहुँचे, मैं आश्चर्य चकित हो गया। महल के अंदर रंग-बिरंगी दीवारें थीं और बहुत सुंदर कला थी। हमने पूरा ताज महल देखा, फिर हम पास ही के एक भोजनालय में गए जहाँ हमने स्वादिष्ट खाना खाया। घर आते समय हमने आगरे का प्रसिद्ध पेठा भी लिया। ताज महल घूमकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। जब मैं बड़ा हो जाऊँगा, मैं पुनः ताज महल देखने जाऊँगा।

भारत बनाम इंडिया

मेरा नाम अभिनव आर्य है। मैं छठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं ग्यारह साल का हूँ। मैं पिछले आठ वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. में हिन्दी की पढ़ाई कर रहा हूँ।

इंडिया एक नाम है जो ब्रिटिश ने दिया। हमारे देश का प्राचीन नाम भारत है। भारत नाम हजारों साल पुराना है, जो राजा भरत के नाम पर रखा गया था। हमारा कर्तव्य है उस नाम को सम्मान देना। भारत ६००० साल से हमारे देश का नाम है। इंडिया नाम साल १८५८ से रखा गया था। हजारों साल की संस्कृति या १६० साल कि संस्कृति? आप बताइए। ब्रिटेन ने हमारे देश पर आक्रमण किया तो फिर हम भारत को उनके नाम से क्यों बुलाते हैं? महात्मा गांधीजी ने भारत के लिए विरोध किया, नहीं इंडिया के लिए। हम "भारत माता की जय" बोलते हैं। अगर हमारे देश का सच्चा नाम इंडिया हैं तो हम "इंडिया माता की जय" क्यों नहीं बोलते हैं? भारत हमारा वैदिक पहचान पत्र दिखाता है। हमारे देश का नाम है भारत, भारत, और भारत!!!

दशहरा

मेरा नाम श्रेया जैन है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे खेलना और किताबें पढ़ना अच्छा लगता है। मुझे तैरना और स्केटिंग करना भी अच्छा लगता है। मैं हिंदी यू.एस.ए. में पाँच साल से पढ़ रही हूँ। मुझे सारे अध्यापक और अध्यापिकाएँ बहुत अच्छे लगते हैं।

भारत में बहुत सारे त्यौहार हैं, जैसे होली, दीपावली, रक्षाबंधन आदि। मुझे सभी त्योहारों में सबसे अच्छा दशहरा लगता है। दशहरे पर लोग रावण का पुतला जला कर बुराई पर अच्छाई की विजय मनाते हैं। मेरी मनपसंद चीज है, हर वर्ष पापयांनी पार्क में लगने वाला मेला। हर साल मैं वहां आपने परिवार और दोस्तों के साथ जाती हूँ। जब मैं पिछले साल इस मेले में गयी थी तब मुझे हर साल की अपेक्षा ज्यादा लोग मिले थे। उस दिन मेरा जन्मदिन भी था। जब मैंने मेले में प्रवेश किया तब कुछ लोग वहाँ दुकानों के पर्चे बाँट रहे थे। अंदर जाने पर हमने सामने एक मंच देखा। मंच बहुत बड़ा और सजा हुआ था। उसके सामने दर्शकों के लिये बहुत सारी कुर्सियाँ थी। वहाँ बहुत भीड़ थी, इसलिये हमने पहले मेले से भारतीय कपड़े, गहने और खिलौने खरीदने का फैसला किया। मेरी माताजी ने मेरे लिए सुन्दर सी नीले रंग की कान की बाली ली। वहाँ मैंने हिंदी यू.एस.ए. की एक दुकान भी देखी। मेले में बच्चों के लिए बहुत सरे खेल व मनोरंजन के साधन थे। वहाँ बच्चों के लिए रेलगाड़ी भी थी। खेलने के बाद हमने छोले भटूरे, इडली, समोसे और जलेबियाँ खड़े हो कर खाईं क्योंकि वहाँ पर बैठने की जगह नहीं थी। खाने के बाद हम रामलीला देखने गये। रामलीला खत्म होने से पहले ही वहाँ पर पटाखे और आतिशबाजी शुरू हो गयी| तभी उन्होंने दस सर वाला रावण का पुतला भी जला दिया। सब खत्म होने के बाद घर पहुँचने में हमें दस मिनट की जगह एक घंटा लग गया क्योंकि रास्ते में बहुत भीड़ थी। इस तरह मेरे जन्मदिन पर मैंने बहुत आनंद लिया।

इटली की सैर

मैं पिछले वर्ष गर्मी की छुट्टियों में इटली घूमने गई थी। जब मुझे मेरे पिताजी ने बताया कि हम घूमने के लिए इटली जाएँगे तो मैं बहुत खुश हुई। हम दस दिन के लिए जाने वाले थे। इटली जाने के लिए हवाई जहाज से सात घंटे की यात्रा थी। हम पहले वेनिस गए। वेनिस बहुत सुन्दर शहर है और पूरा शहर पानी में बसा है। एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए नाव का उपयोग करते हैं। वेनिस से हम लोग रेल से रोम गए। सबसे पहले हमने रोम का कॉलोसियम देखा। यह विश्व के सात अजूबों में से एक है। यह एक विशाल खेल स्टेडियम है। पुराने जमाने में इसमें ५०,००० तक लोग इकट्ठे होकर जंगली जानवरों और गुलामों की खूनी लड़ाइयों के खेल देखते थे। इस स्टेडियम में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते थे। इस स्टेडियम की नकल करना आज तक नामुमकिन है। रोम में हमने सुन्दर-सुन्दर शिल्प कृतियाँ और पुरानी इमारतें भी देखीं। रोम से हम पीसा की मीनार देखने गए। वहाँ हमने बहुत सारे चित्र खींचे। मुझे इटली की यात्रा बहुत पसंद आई।

- जान्हवी अहिरे, उच्चस्तर-१, एडिसन हिन्दी पाठशाला

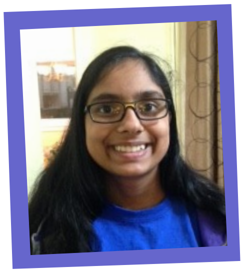

पेर्सी जॅक्सन के विचार

नेहा निचकवडे और रिजुल जैन

आरम्भ के क्रम तो बहुत उबाऊ थे। फिर जंगल में आग लगी और कहानी की धमाकेदार शुरुआत हुई। उधर शिविर “आधा रक्त” और शिविर “बृहस्पति” ने दिग्गजों के साथ एक युद्ध समाप्त किया। आप ने सही अनुमान लगाया --- युद्ध जीतने के बाद जश्न तो मनाना ही चाहिए, पर नहीं --- वे तो कुछ भी नहीं कर रहे थे। कुछ भी न कर के आनंद उठाने वाली बात हजम नहीं हो पा रही थी। लेकिन जैसा हम सोचते हैं हमेशा वैसा नहीं होता। मुझे जल्दी ही यह एहसास हो गया कि अराजकता के खिलाफ अंतिम लड़ाई हो कर ही रहेगी। सभी को यह उम्मीद थी।

अराजकता के खिलाफ युद्ध।

फिर जैसा सोचा था वैसे ही हुआ, युद्ध शुरू हुआ। अब लड़ने के अलावा कोई मार्ग नहीं बचा। सभी ने इतने सालों से अपनी जमाई गई मेहनत और शक्ति का प्रयोग किया। सभी का ध्येय यह युद्ध जीतना था। फिर क्या फर्क पड़ता कि कितने राक्षस मरे या घायल हुए। कई दिन तक युद्ध चलता रहा और सभी युद्ध करते रहे। ऐसा लग रहा था की यह लड़ाई कभी खत्म नहीं होगी। मैं सोच रहा था कि काश किसी तरह हम इस भयानक युद्ध से बच पाते। तभी मम्मी की आवाज सुनकर मेरी आँखें खुल गईं और या भयानक सपना टूट गया। मुझे पाठशाला जाने के लिए तैयार होना था।

मेरी भारत यात्रा - कैसे की हिंदी यू.एस.ए. ने मदद!

मेरा नाम श्रेया भारद्वाज है। मैं ईस्ट ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-१ में पढ़ती हूँ। पिछले साल में सर्दियों की छुट्टियों में भारत गई थी। मुझे आश्चर्य हुआ की वहाँ मेरे ममेरे भाई और बहन को अंग्रेजी नहीं आती थी, क्योंकि वे दोनों अभी पाठशाला नहीं जाते थे और घर पर हमेशा हिंदी ही बोलते थे। अच्छा हुआ जो मैं हिंदी यू.एस.ए. में हिंदी पढ़ती थी। मुझे अच्छे से हिंदी बोलना और लिखना आता है। मैं अपने भाई बहनों के साथ बहुत खेली।

दूसरी बात, जब भी मैं किसी रिश्तेदार से मिलती थी तब वे पूछते थे कि क्या वहाँ पाठशाला में हिंदी सिखाते है? तब मैंने उन्हें हिंदी यू.एस.ए. के बारे में विस्तार से बताया कि यह एक संस्था है जहाँ हिंदी पढ़ाई जाती है। मैं कई सालों से यहाँ अपने भाई और माताजी (जो वहाँ पढ़ाती हैं) के साथ पाठशाला जाती हूँ। साथ-साथ यह भी बताया कि मैं कविता तथा महोत्सव जैसे कार्यक्रमों में भी भाग लेती हूँ, जहाँ मुझे भारतीय संस्कृति और सभ्यता के बारे में भी पता चलता है। मैं सुंदर भारतीय वस्त्र पहनकर दिवाली और अन्य कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेती हूँ। मैंने उन्हें कर्मभूमि तथा हिंदी कैलेंडर भी दिखाया। सब हैरान थे की तुम तो इतनी दूर रह कर भी देश के इतने करीब हो। वे सब बहुत खुश हुए।

इसलिए मैं इस लेख द्वारा हिंदी यू.एस.ए. को धन्यवाद देना चाहतीं हूँ।

हिन्द देश - हिन्दी यू.एस.ए.

मेरा नाम अनुषा गुप्ता है। मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं बास्किंग रिज में रहती हूँ और पिछले पाँच साल से एडिसन हिन्दी पाठशाला में हिन्दी सीख रही हूँ। अभी मैं उच्च-स्तर १ में पढ़ रही हूँ। मुझे किताब पढ़ना, फुटबॉल खेलना, वायलिन बजाना और तैरना बहुत अच्छा लगता है ।

दुनिया में उभरता नाम है।
हम बच्चों की जान है।
हिन्दी सीखने का भंडार है।
संस्कारों से भरा संसार है।

दीवाली की चमक है।
मिठाइयों की मिठास है।
होली की उमंग है।
रंगों भरी रंगोली है।

कविता पाठ की ललकार है।
शिक्षक अभिनंदन का सौंदर्य है।
राम लीला की बहार है।
हिन्दी महोत्सव का उत्साह है।

मीठे वचन वाला गान है।
कठिन परिश्रम का प्रचार है।
एकता की पहचान है।
तुम्हें शत - शत प्रणाम है।

हिन्दी का नारा लगाएंगे हम।
हिन्द देश का गौरव बढ़ायेंगे हम।
घर-घर हिन्दी बसाएंगे हम।
हिन्दी भवन बनाएंगे हम।
जय हिन्द, जय हिन्दी यू.एस.ए. !!!

* * *

मेरा नाम अद्वैत माहेश्वरी है। मैं मध्यमा-३ का विद्यार्थी हूँ। मैं विल्टन कनेक्टिकट में रहता हूँ और साइडर मिल पाठशाला में पाँचवीं का छात्र हूं। मैं स्टैमफोर्ड विद्यालय में हिन्दी पढ़ता हूँ। मेरे माता-पिता मुझसे हिन्दी में बात करते थे और मेरे परिवार के सदस्य जैसे नाना, नानी, दादा, दादी सभी हिन्दी में बात करते थे। हिन्दी हमारी मातृभाषा है। इसलिए मैं हिन्दी पढ़ना और लिखना सीखना चाहता था। चार वर्ष पूर्व जब स्टैमफोर्ड में हिन्दी यू.एस.ए की शुरुआत हुई, मैंने इसमें दाखिला लेकर हिन्दी सीखना शुरू किया। मैं हिन्दी लिखना और पढ़ना सीख रहा हूँ और यह मुझे बहुत अच्छा लगता है। अब मेरी छोटी बहन भी मुझसे हिन्दी मे बात करती है।

पेंगुइन रिपोर्ट

मेरा नाम पावनी भारद्वाज है। मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला की मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ती हूँ। पेंगुइन मेरा पसंदीदा जानवर है। हमें पेंगुइन की रक्षा करनी चाहिए। मुझे लगता है कि मैं पेंगुइन के बारे में हर किसी को सिखाऊँ और मैं उनके बारे में सब कुछ जानना चाहती हूँ।

मैं आज आपको पेंगुइन के बारे में बताने जा रही हूँ। ये मेरे पेंगुइन हैं। पेंगुइन कहते हैं: "पावनी हम सब के वारे में आपको बताएगी, लेकिन हम भी आप को थोड़ा सा बताते हैं। हम एक लुप्तप्राजातियाँ हैं। आपको लुप्तप्राय प्रजातियों के लिए पैसे जुटाने में मदद करनी चाहिए। हम दुनिया को बदलने के लिए आप पर निर्भर हैं। हम मुख्य रूप से काले और सफेद होते हैं और साथ-साथ थोड़े से नारंगी और पीले रंग के भी हैं। हम अन्य पक्षियों से अलग हैं क्योंकि हम तैरते हैं। तैरने के लिए हमारे पास फ्लिपर्स और झाल्लीदार पैर हैं। अब आपको पावनी हमारे बारे में बताएगी।"

पेंगुइन जल जीवन के लिए अत्यधिक अनुकूल पक्षी हैं। वे शौक़ीन तैराक हैं। पेंगुइन सागर में मछली, क्रिल्ल और समुद्री जीवन के कुछ अन्य रूपों को खाती हैं। सम्राट पेंगुइन सबसे सवा मीटर लंबा और सबसे बड़ा पेंगुइन है और लगभग ३७ किलोग्राम का होता है। लिटिल ब्लू पेंगुइन सबसे छोटे पेंगुइन हैं और वे ४० सेंटीमीटर लंबे होते हैं। उनका वज़न १.२ किलो होता है। पेंगुइन विशेष रूप से ठंडे मौसम में पाए जाते हैं पर कुछ दक्षिणी गोलार्ध में भूमध्य रेखा के पास भी रहते हैं। पेंगुइन एक दूसरे से संचार करते हैं। हालांकि वे बहुत अच्छी तरह से सुन नहीं सकते लेकिन वे गंध और दृष्टि में उत्कृष्ट हैं। वे दिन और रात के दौरान रंग में देखते हैं, और वे जमीन और पानी में दूर तक देख सकते हैं। पेंगुइन पानी में लंबा समय बिता सकते हैं। पेंगुइन अपना ७५% जीवन पानी में बिताते हैं। वे २२ मीटर तक गोता लगा सकते हैं और प्रजाति के आधार पर २० मिनिट के लिए गोता लगा सकते हैं।

एक दिलचस्प तथ्य यह है – कई लोगों को लगता है कि पेंगुइन सोते नहीं हैं लेकिन ऐसी बात नहीं है। पेंगुइन, एक समय में कुछ मिनट के लिए, या तो दिन के दौरान या रात में, वे जहाँ भी होते हैं सो लेते हैं। लेकिन वे रात में और जमीन पर, लंबी अवधि के लिए सोते हैं। वे पानी में बैठे, खड़े या लेटे सो जाते हैं। आशा है कि मेरा यह लेख आपको पसंद आया होगा।

पिस्कैटवे पाठशाला उच्च स्तर-२

मेरी प्रेरणा

शैली शाह

जिसका हम अनुसरण करते हैं उसे हम हमारी प्रेरणा कहते हैं। कई लोग भूतकाल या वर्तमान काल से किसी प्रसिद्ध व्यक्ति को अपनी प्रेरणा मानते हैं, पर मेरे लिए मेरी प्रेरणा मेरी माँ हैं। मेरी माँ हमेशा से मेरी मित्र, शिक्षिका और पथप्रदर्शक रही हैं। उन्होंने मुझे जीवन में चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने मुझे जीवन का महत्व सिखाया है। उनका एक प्रभावशाली और उदार चरित्र है जिस पर हर कोई भरोसा कर सकता है। मेरी माँ का मेरे लिए प्रेरणास्तोत्र होने का मुख्य कारण यह है कि वह हमेशा अपना नहीं सोच कर पहले दूसरों का सोचती है। जब वह किसी को दुखी देखती है तो अपनी मुसीबतों को भूल कर उनकी मदद करती है। वह जरूरतमंद को पैसे देती है, बीमारों को दवाइयाँ और कमजोर व्यक्तियों का आत्मविश्वास बढ़ाती है। मैं अपनी माँ कि तरह बनना चाहती हूँ, और उनके बताए हुए रास्ते पर चलना चाहती हूँ। एक व्यक्ति का व्यक्तित्व सिर्फ उसकी सुंदरता या उसकी बुद्धिमानी पर निर्भर नहीं होता। लेकिन उसका व्यक्तित्व कितना बड़ा है उसके दिल पर निर्भर करता है। मेरी माँ बहुत ही दयालु प्रामाणिक, विश्वासपात्र और प्यारी है। वह मुझे सिर्फ अपनी बेटी ही नहीं, एक मित्र भी मानती है। उन्होंने मुझे जीवन जीने का मंत्र सिखाया है जो है, "मै कर सकती हूँ, मैं करूंगी और मैं करके दिखाऊँगी। मैं हमेशा अपनी माँ का सम्मान करूँगी और जीवन में आगे बढ़ने के लिए और लक्ष्य को पाने के लिए माँ को अपनी प्रेरणा मानकर चलूँगी।

भारत यात्रा का विवरण

अदिति सिंह

इस बार मेरी भारत यात्रा के दौरान मुझे अपने परिवार के साथ बोधगया जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। बोधगया भारत के बिहार राज्य में गया से करीब पंद्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मुझे बोधगया में अनेक बौद्ध धर्म के मंदिरों के साथ बोधिवृक्ष देखने को और उसके नीचे बैठने का अवसर मिला। इसी वृक्ष के नीचे कुंवर सिद्धार्थ ज्ञान प्राप्त करके गौतम बुद्ध कहलाये थे।

बोधगया के दर्शनीय स्थानो में महाबोधि मंदिर, पीपल वृक्ष, अनिमेषलोचन चैत तिब्बती मंदिर, चीन का मंदिर, जापानी मंदिर, थाई मंदिर एवं पुरात्मिक संग्रहालय दर्शनीय है। बोधगया से कुछ ही दूरी पर नालंदा विश्वविद्यालय का अवशेष भी स्थित है। नालंदा विश्व का पहला विश्वविद्यालय था। इसकी स्थापना का श्रेय कुमार गुप्त प्रथम को प्राप्त है। इस विद्यालय में करीब दस हजार विद्यार्थी पढ़ते थे, और इसमें नौ स्तर का एक बड़ा पुस्तकालय भी था। मुझे नालंदा के अवशेषों को देखकर भारत की धरोहर पर बहुत गर्व हुआ।

देशना दोषी

बहन को पत्र

मेरी प्रिय बहन रचना,

तुम कैसी हो? मैंने सुना है कि तुम हिंदी पढ़ती हो? मैं भी हिंदी पढ़ती हूँ। मैं एक संगठन जिसका नाम हिंदी यू.एस.ए. है, में पढ़ती हूँ। मुझे यह बहुत अच्छी लगती है। यहाँ हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। मैं जब नौ साल की थी तब से यहाँ पढ़ रही हूँ। तब मुझे गुजराती आती थी इसलिए हिंदी सीखना सरल हो गया। जैसे-जैसे हिंदी का स्तर बढ़ने लगा पढाई कठिन होने लगी। मैं हिंदी इसलिए पढ़ना चाहती हूँ ताकि मैं यहां से स्नातक होकर ही भारत जाऊँ। मैं भारत में एक चिकित्सक बन कर गरीब लोगों की सहायता करना चाहती हूँ। अगर मुझे भारत में काम करना है तो मुझे हिंदी पढ़ना, बोलना, और लिखना सीखना पड़ेगा क्योंकि भारत की राष्ट्र भाषा हिंदी है। तुम भी एक पत्र लिखकर बताना कि भारत की हिंदी पाठशाला कैसी होती है।

तुम्हारी बहन, देशना

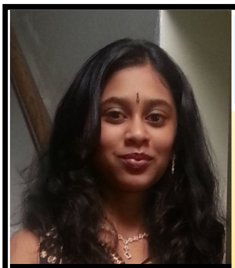

तनवी कोरगाओंकर

हिंदी भाषा सीखने का अनुभव

मुझे हिंदी पाठशाला जाना पसंद है। मुझे हिंदी यू.एस.ए. का अभ्यास क्रम पसंद है। मुझे यह अभ्यास क्रम इसलिए अच्छा लगता है क्योंकि जो लोग घर पर हिंदी नहीं बोलते हैं, जैसे कि मैं, यह उनको भी हिंदी सिखा सकता है। मुझे हिंदी पाठशाला के बारे में दो बातें अच्छी लगती हैं। पहली बात है कि इस साल हम कहानियों कि किताबें पढ़ रहे हैं। अभी तक हमने दो किताबें पढ़ी हैं, भूतु और प्यारा दोस्त। मेरे लिए किताबें पढ़ना अब आसान हो गया है। दूसरी बात है हर साल हिंदी यू.एस.ए. का हिंदी महोत्सव। मुझे महोत्सव में भाग लेने में मज़ा आता है। एक साल हम जेओपर्डी में दूसरे स्थान पर आये थे। मुझे हिंदी व्याकरण थोड़ी कठिन लगती है, पर इसमें अच्छे अंक पाने के लिए मैं मेहनत करती हूँ। मैं मेहनत इसलिए करती हूँ क्योंकि हिंदी सीखने से मैं भारत जाकर लोगों से अच्छी तरह वार्तालाप कर सकती हूँ, और मैं अपनी संस्कृति को भी और अच्छे से समझ सकती हूँ।

प्रणव उदेशी

मामाजी को पत्र

आदरणीय मामाजी,

आप कैसे हो? मैं और मेरा परिवार ठीक है। शायद आपको नहीं पता कि मैं अब छः साल से यू.एस.ए. की हिंदी पाठशाला में जा रहा हूँ। हिंदी यू.एस.ए. एक लाभ-निरपेक्ष संस्था है। यहाँ के सारे अध्यापक और अध्यापिकाएँ स्वयंसेवक हैं। यहाँ सभी अध्यापिकाएँ बहुत अच्छी तरीके से सिखाती हैं, जो कि बहुत ही कठिन काम है। इन्होंने मुझे भी इस संस्था में स्वयंसेवक बनने के लिए प्रेरित किया है। मैं हिंदी यू.एस.ए. का बहुत आभारी हूँ क्योंकि मैं अब मेरे रिश्तेदारों को अच्छी तरह समझ सकता हूँ। इस साल जब मैं भारत गया तो मेरे सारे रिश्तेदार अचरज में थे कि मैं इतनी अच्छी हिंदी बोल सकता हूँ। इस संस्था के बिना मैं इतनी अच्छी हिंदी लिख पढ़ बोल नहीं सकता था। मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि मैं हिंदी यू.एस.ए. परिवार का एक सदस्य हूँ। आपका भतीजा, प्रणव

हिन्दी की आवश्यकता

मेरा नाम श्रेया सिनकर है। मैं ईस्ट ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला की मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे खाली समय में चित्रकारी करना और फुटबॉल खेलना अच्छा लगता है।

मुझे लगता है कि आज की पीढ़ी को हिन्दी सीखना बहुत जरूरी है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में अँग्रेज़ी और चाइनीस के अलावा हिन्दी बोली जाती है। भारत की अनेक भाषाओं की तरह हिन्दी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। हिन्दी भाषा देवनागरी लिपी में लिखी जाती है। जब मैं भारत यात्रा पर गई तब मुझे हिन्दी भाषा काफ़ी उपयोग में आई और मैं वहाँ के लोगों से वार्तालाप कर सकी। मैं वहाँ पर अपने बुजुर्ग रिश्तेदारों से वार्तालाप कर सकी जो अँग्रेज़ी बोलना नहीं जानते। हिन्दी भाषा समझने का और एक फ़ायदा यह भी है कि दुनिया भर में प्रसिद्ध बॉलीवुड फ़िल्में भी इसी सुंदर भाषा में बनाई जाती हैं जिनका मैं आनंद उठा सकती हूँ। हिन्दी भाषा की वजह से अब मैं अलग-अलग भारतीय भाषाएँ सीख सकूँगी जैसे मराठी, गुजराती, पंजाबी इत्यादि। हिन्दी यू.एस.ए. के कारण मुझे यह महत्वपूर्ण भाषा सीखने का मौका मिला। हिन्दी यू.एस.ए. के कारण अब मैं काफ़ी हद तक हिन्दी लिख, बोल, और पढ़ सकती हूँ। हिन्दी सीखने से हम वास्तव में और पूरी तरह से भारतीय संस्कृति को समझेंगे और अपना पाएँगे।

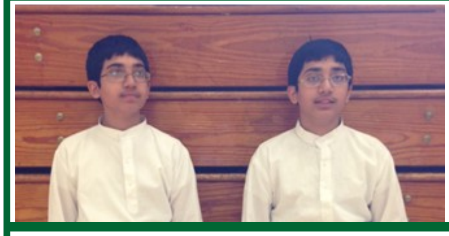

सर्दियों का मौसम

आर्यन और अमन शर्मा

मध्यमा - २ स्तर, एडिसन पाठशाला

ठंड का मौसम हमेशा अच्छा लगता है। सर्दियों के मौसम में बच्चे शीतकालीन खेल खेलते हैं। रातें लंबी होती हैं और दिन छोटे होते हैं। शीतकालीन खेलों के कुछ उदाहरण हैं - स्कींग, सलेडिंग और बच्चे बर्फ के गोले बना कर एक दूसरे के साथ खेलते हैं। शीतकाल में पेड़ से पत्ते गिरते हैं| सब पक्षी दूर गर्म जगह चले जाते हैं। सर्दी का मौसम दिसंबर से शुरू होता है और मार्च में समाप्त होता है। हर कोई खुद को गर्म रखने के लिए मोटे कपड़े पहनता है। जैकेट, स्कार्फ़, दस्ताने, कैप और मफलर का बहुत उपयोग होता है। बच्चों को सर्दियों में छुट्टियाँ मिलती हैं। हमारे यहाँ सर्दी मे बरफ बहुत गिरती है। हर जगह सफेदी छा जाती है। बहुत सुंदर लगता है। हमें सर्दी का मौसम ही सब से अच्छा लगता है।

दीपावली

मेरा नाम आश्रिता महतपुरे है। हम दीवाली का त्योहार हर साल बड़े धूमधाम से मनाते हैं। दीपावली भारत में हिन्दुओं द्वारा मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्योहार है। दीपावली का मतलब होता है दीपों की अवली, यानी पंक्ति। इस प्रकार दीपों की पंक्तियों से सुसज्जित इस त्योहार को दीपावली कहा जाता है। दीप जलाने की प्रथा के पीछे अलग-अलग कारण या कहानियाँ हैं। हिंदू मान्यताओं में राम भक्तों के अनुसार कार्तिक अमावस्या को भगवान श्री रामचंद्रजी चौदह वर्ष का वनवास काटकर तथा असुरी वृत्तियों के प्रतीक रावणादि का संहार करके अयोध्या लौटे थे। तब अयोध्या वासियों ने राम के राज्यारोहण पर दीप मालाएं जलाकर महोत्सव मनाया था। इसीलिए दीपावली हिन्दुओं के प्रमुख त्योहारों में से एक है। कृष्ण भक्तिधारा के लोगों का मत है कि इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर का वध किया था। इस नृशंस राक्षस के वध से जनता में अपार हर्ष फैल गया और प्रसन्नता से भरे लोगों ने घी के दीप जलाए। एक पौराणिक कथा के अनुसार विष्णु ने नरसिंह रुप धारण कर हिरण्यकश्यप का वध किया था तथा इसी दिन समुद्रमंथन के पश्चात लक्ष्मी व धन्वंतरि प्रकट हुए। मैं और मेरे परिवार के सदस्य सवेरे उठते हैं और नहाकर नये कपड़े पहनकर दीया जला कर लक्ष्मी जी की पूजा करते हैं। मैं और मेरी दीदी मिलकर भगवान के सामने भक्ति गीत गाते हैं। हम दीवाली के दिन खूब सारी मिठाइयाँ बनाते हैं और भगवान को अर्पित करते हैं। हम शाम को सारे घर को दीपों से रोशन कर देते हैं और पटाखे जलाकर परिवार के सदस्यों के साथ दीवाली का त्यौहार मनाते हैं।

प्रियल गर्ग

एक अंगूर खट्टा, बाकी मीठे

मेरा नाम प्रियल गर्ग है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे हिंदी भाषा बहुत अच्छी लगती है। यह मेरे हिंदी स्कूल का अंतिम वर्ष है परंतु मैं अगले वर्ष से अपने हिंदी स्कूल में सहायता करुँगी और हिंदी से जुड़ी रहूँगी। इस साल हम कहावतें पढ़ रहे हैं। मैंने एक कहावत में कुछ बदलाव करके अपनी भाषा में लिखी है, आशा है आपको पसंद आएगी।

एक लोमड़ी बहुत भूखी थी, वह खाने की तलाश में घूम रही थी। उसने एक बाग़ में अंगूर के बहुत से गुच्छे देखे, और वह बहुत खुश हो गई। अंगूर बहुत ऊँचे थे, इसलिए लोमड़ी अँगूरों तक नहीं पहुँच पाई। उसने बहुत कोशिश की लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। थोड़ी देर के बाद एक बड़ी लोमड़ी आई। छोटी लोमड़ी ने जल्दी से कहा, "कौन खाए ये अंगूर? अंगूर तो खट्टे हैं। "लेकिन फिर भी बड़ी लोमड़ी अंगूर की बेल को नीचे लाई, और खाना शुरू कर दिया। बड़ी लोमड़ी ने कहा, "अरे! ये **अंगूर** तो बहुत मीठे और अच्छे हैं। ये खट्टे बिलकुल भी नहीं हैं!" छोटी लोमड़ी झेंप गई और उसने कहा, "जो अंगूर मैंने खाया था, वह तो बहुत खट्टा था। एक अंगूर खट्टा, बाकी मीठे।" यह कहकर, छोटी लोमड़ी भाग गयी।

बंदर और भालू

मेरा नाम श्रीनित्या तडिसिना है। मैं दस साल की हूँ और चेस्टरफ़ील्ड पाठशाला में मध्यम-२ की छात्रा हूँ। मुझे कहानियाँ लिखना और पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।

जंगल में एक दिन एक भालू बहुत भूखा था। उस भालू का नाम चाँद था। चाँद बहुत बुड्ढा हो गया था। उसमें शिकार करने की शक्ति नहीं थी पर वह बहुत होशियार था। नजदीक में बिंदी नाम की बंदरिया शहद खा रही थी। जब चाँद ने बिंदी को शहद खाते देखा तो उसने बिंदी से कहा “बिंदी तुम मेरी नकल कभी नहीं कर सकती हो”। ऐसा सुनकर बिंदी को गुस्सा आ गया। बिंदी ने बोला “मैं कोई भी काम तुमसे अच्छा कर सकती हूं”। यह सुनकर चाँद ने ताली बजायी और बिंदी ने हँसकर और जोर से ताली बजायी। बिंदी के हाथों से शहद सीधा नीचे खड़े चांद के मुहँ में गिरा और उसकी भूख मिट गयी।

शिक्षा/नीति - शारीरिक शक्ति से होशियारी ज्यादा महत्वपूर्ण है।

हिंदी भाषा सीखने का लाभ

श्रेया पिल्लै

मेरा नाम श्रेया पिल्लै है और मैं १३ साल की हूँ। मेरा एक छोटा भाई है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मेरा प्रिय विषय गणित है और मुझे विज्ञान भी बहुत अच्छा लगता है। अपने खाली समय में मुझे नृत्य करना बहुत अच्छा लगता है।

हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा है और हर भारतीय को यह भाषा सीखनी चाहिए। मैं दक्षिण भारत से हूँ और हमारे घर में हिंदी नहीं बोली जाती पर मेरे माता पिता चाहते थे कि मैं यह भाषा सीखूं। हिंदी भाषा हमें भारत के बारे में अधिक ज्ञान देती है। हिंदी कक्षा में आने से हमें भारतीय संस्कृति के बारे में और अधिक ज्ञान मिलता है। यहाँ हम दीवाली का त्यौहार मिल कर मानते हैं और सब मिलकर बहुत अच्छा भोजन करते हैं। पिछले साल दशहरे त्यौहार के अवसर पर हम लोगों ने रामायण की थी और रामायण नाटक में भाग लेकर मुझे बहुत मज़ा आया था। अभी हिंदी कक्षा में मैं हिंदी व्याकरण सीख रही हूँ। व्याकरण सीखने से मैं हिंदी के छोटे वाक्य बना लेती हूँ और हिंदी में पढ़ भी लेती हूँ। अब हिंदी के चलचित्र देखना और समझना भी मेरे लिए थोड़ा आसान हो गया है।

हिंदी कविता प्रतियोगिता में भाग लेने से मेरा आत्मविश्वास बहुत बढ़ा है। मंच पर खड़े होकर सब लोगों के सामने जब मैं कविता बोलती हूँ तो मेरे माता पिता को बहुत गर्व महसूस होता है।

मुझे विश्वास है कि भारत जा कर मैं लोगों से हिंदी में वार्तालाप कर सकूँगी।

मीरा शाखा हिंदी पाठशाला

आडुवॉन, पेंसिलवेनिया, मीरा शाखा की हिंदी शाखा में कुल ११ विद्यार्थी हैं। ये ११ विद्यार्थी पाँच विभिन्न कक्षाओं में अध्ययन करते हैं। प्रत्येक रविवार बालगोकुलम (शाखा) कार्यक्रम समाप्त होने के बाद हिंदी कक्षा प्रारम्भ होती है। पाँच विभिन्न कक्षाओं के संचालन में विद्यार्थियों के माता-पिता भी सहयोग देते हैं।

सभी कक्षाओं में नियमित रूप से मौखिक और लिखित अभ्यास पर महत्व दिया जाता है। माता-पिता से भी अनुरोध किया जाता है कि वे घर पर भी हिंदी वार्तालाप को प्रोत्साहन दें। अधिकतर बच्चे मुझ से यह प्रश्न करते हैं कि हमें हिंदी क्यों पढ़नी चाहिए। उसका सबसे सरल उत्तर है, “अपनी सभ्यता और संस्कृति से जुड़े रहने के लिए”। कमलापति त्रिपाठी के शब्दों में:

“हिंदी भाषा संस्कृति की आत्मा है”

हिंदी यू.एस.ए. का इस दिशा में बढ़ाया कदम प्रशंसनीय है। आइए आप और हम मिलकर कदम बढ़ाएँ और हिंदी भाषा को महत्वपूर्ण बनाएँ। भारतेन्द्र हरिशचंद्र के शब्दों में:

“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल

बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।”

वीना मित्तल

हिंदी शिक्षका

मेरे दादाजी का गाँव

खुशी प्रसाद, उच्चतर-१, साऊथ ब्रंस्विक पाठशाला

जब भी मैं भारत गई थी तो दिल्ली या गुड़गाँव जैसे शहरों में ही गई थी क्योंकि इन्हीं दो शहरों में मेरे पिताजी और माताजी के परिवार के सभी लोग रहते हैं। पिछले साल जब मैं अपने दादाजी की पहली पुण्यतिथि पर भारत गयी तो मुझे अपने दादाजी के गाँव जाने का अवसर मिला। मैंने कई कहानियों में भारत के गाँव के बारे में पढ़ा था, इसलिए मैं काफी उत्सुक थी। मेरे पापा ने बताया कि मेरे दादाजी का गाँव बिहार राज्य के वैशाली जिले में आता है। हमारे पास सामान बहुत था, इसलिए मेरी दादीजी ने निर्णय लिया कि हम रेलगाड़ी से जायेंगे। हम दिल्ली से राजधानी एक्सप्रेस रेलगाड़ी से पटना शहर तक गए। सुबह-सुबह हमारी रेलगाड़ी पटना स्टेशन पहुँच गई। स्टेशन से बाहर आकर हमने किराए पर टेक्सी ली और गाँव की ओर चल दिये।

रास्ते में हमने गंगा नदी का पुल पार किया। गंगा नदी काफी चौड़ी थी और पानी शांत था। कई लोग नहा रहे थे। नदी के दोनों ओर पेड़ ही पेड़ थे। मेरी दादी ने बताया कि सारे पेड़ केले के हैं। गाँव की सड़क पक्की थी और भीड़ नहीं थी फिर भी टैक्सीवाला हॉर्न जोर से बार-बार बजा रहा था। पूछने पर उसने कहा कि कई लोग सड़क पर साईकिल से जा रहे हैं और बिना सोचे सड़क पार करने लगते हैं। सड़क के दोनों ओर खेत थे और कई किसान काम कर रहे थे।

मेरे दादाजी का घर बहुत बड़ा था। घर के बीच में खुला आँगन था और उसमें एक हैंड पम्प लगा था जिससे सब लोग पानी निकालते थे। मेरी छोटी बहन हर समय पानी निकालने का ही काम करती रहती थी क्योंकि उसके लिए वह एक खेल था। रात में हम सब लोग छत पर गद्दे बिछा कर सोने के लिए गए। खुली छत पर सोने का विचार पहले तो मुझे अजीब लगा लेकिन सब के साथ बात-चीत करते-करते मुझे भी नींद आ गई। फिर एकदम से बारिश की कुछ बूँदें पड़ी तो खूब हल्ला मचा और सब लोग नीचे भागे। दूसरे दिन मैं अपने चाचा और पापा के साथ बागीचे देखने गई। मैंने आम के बगीचे देखे, कई तरह की सब्जियों के खेत देखे, ताड़ के पेड़ देखे जो नारियल के पेड़ जैसे होते हैं। गाँव के सब लोग मुझसे मिलने को उत्सुक रहते थे और मेरी हिंदी में बातें सुन कर बहुत खुश होते थे। शाम को पूजा के बाद भोज का आयोजन था। बड़ा सा टैंट लगा था और लोगों को जमीन पर कई कतारों में बिठा कर खाना खिलाया जा रहा था। मेरे परिवार के सब लोग काम में लगे थे। मैं भी मदद करना चाहती थी, इसलिए मुझे जग से पानी डालने का काम दिया गया। मैंने दौड़-दौड़ कर सब के गिलास में पानी डाला। भोज ख़त्म होने के बाद हम सब लोग काफी थक गए थे पर मेरे लिए यह एक अनोखा अनुभव था।

दूसरे दिन हम वापस पटना के लिए निकल पड़े और हवाई जहाज से दिल्ली आ गए। मुझे अपने दादाजी का गाँव बहुत अच्छा लगा क्योंकि वहाँ बहुत शांति थी। कई आधुनिक चीजें थी जैसे सोलर पैनल से घर में बिजली आती थी, सभी के पास सेल फ़ोन था, टेलीविजन और गाड़ी भी थीं। मैंने कहानियों में जैसा पढ़ा था गाँव उससे बहुत अलग था।

भारत की विभिन्न भाषाएँ

मध्यमा-३, लॉरेंसविल हिंदी पाठशाला

लगभग १.३ अरब लोगों की आबादी के साथ, भारत में १,५०० से विभिन्न भाषाएँ हैं। राष्ट्रीय स्तर पर बोली जाने वाली सबसे आम भाषाओं में से कुछ हिंदी, तेलुगु, मराठी, कन्नड़ और कोंकणी हैं। ये भाषाएँ कई मायनों में समान हैं, लेकिन प्रत्येक भाषा की अपनी कई विशेषताएँ है। वे अपने-अपने तरीके से भारतीय संस्कृति को परिपूर्ण करती हैं। भाषाएँ वास्तव में एक उल्लेखनीय निर्माण हैं। - दिव्या सम्मेटा

तेलुगु

तेलुगु भारत की राष्ट्रीय भाषाओं में से एक है। यह संस्कृत और द्रविड़ से बनी प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। यह ज्यादातर तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में बोली जाती है। भारत में हिंदी के बाद सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। टॉलीवुड में बनी चलचित्र तेलुगु में बनते हैं। हॉलीवुड और बॉलीवुड के बाद टॉलीवुड में सबसे ज्यादा चल चित्र बनते हैं। कर्नाटक संगीत के अधिकतम कृतियाँ तेलुगु में लिखी गयी हैं।

- अदिति पोनकमपल्ली

कन्नड़

कन्नड़ भारत की कर्नाटक राज्य में बोली जाती है। कर्नाटक राज्य की राजधानी बेंगलुरु है। ३८०,०००,००० लोग कन्नड़ बोलते हैं। कन्नड़ भारत की तीसरी प्रचीन भाषा है। कन्नड़ भाषा में ४९ अक्षर हैं। अक्षर माला में ३ प्रकार अक्षर हैं - स्वरगल्लु (Vowels–१३), व्यंजनगल्लु (Consonant-३४) और योगवाहकगल्लु (neither vowel nor consonant - २ letters)। कन्नड़ चलचित्र को सैंडलवुड कहते हैं। - नेहा शिखालकर

मराठी

मेरी मात्र भाषा मराठी है। मैं और मेरा परिवार घर में मराठी बोलते हैं। भारत देश के पश्चिमी राज्य महाराष्ट्र में मराठी बोली जाती है। हिंदी लिपि और मराठी लिपि में बहुत अंतर नहीं है लेकिन शब्दों में थोड़ा सा फर्क है। अगर तुम हिंदी सीख लेते हो तो मराठी सीखना बहुत सरल है। - साई विट्ठल

कोंकणी

कोंकणी भारत के पश्चिमी राष्ट्र Goa में बोली जाती है। कोंकणी की विशेषता उसकी लिपि में है। सदियों से यह देवनागरी लिपि और रोमन लिपि में लिखी जा रही है । - आकाश

हिन्दी

हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा है। यह भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। इसकी लिपि देवनागरी कहलाती है। इसकी विशेषता यह है के लिंग बस २ ही प्रकार के होते हैं - स्त्रीलिंग और पुल्लिंग। हिन्दी में निर्जीव वस्तुओं के भी लिंग होते हैं। इनके लिंग का निर्णय अकसर वाक्य बनाकर करना पड़ता है। - आदित्य शर्मा

हमारे व्यवसाय

साउथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला – मध्यमा–३

अध्यापिका – पुनीता वोहरा

मेरा नाम पुनीता वोहरा है और मैं पिछले सात वर्षों से साउथ ब्रंस्विक पाठशाला में पढ़ा रही हूँ। ये सात वर्षों का हिंदी यू.एस.ए से जुड़े रहने का सफर बहुत ही रोमांचक रहा। विद्यार्थियों को हिंदी सिखाने के साथ-साथ इस यात्रा में मैंने भी बहुत कुछ सीखा है। मुझे नन्हे-मुन्ने बच्चों को हिंदी का ज्ञान देने में न केवल आनंद आता है बल्कि बहुत गर्व भी महसूस होता है। इस स्तर में विद्यार्थी व्याकरण सीखते हैं।

निम्न लेखों में मध्यमा-३ के विद्यार्थियों ने पाठ्यक्रम में दिए गए व्यवसायों के विषय से प्रेरित होकर अपने विचारों को कलम के द्वारा शब्दों में दर्शाया है। बच्चों ने बड़ी ही खूबसूरती से बताया है कि बड़े होकर वे क्या बनना चाहते हैं। मुझे मेरी कक्षा के छात्रों के इस प्रयास पर बहुत गर्व है।

WRITERS
WE ARE TAU

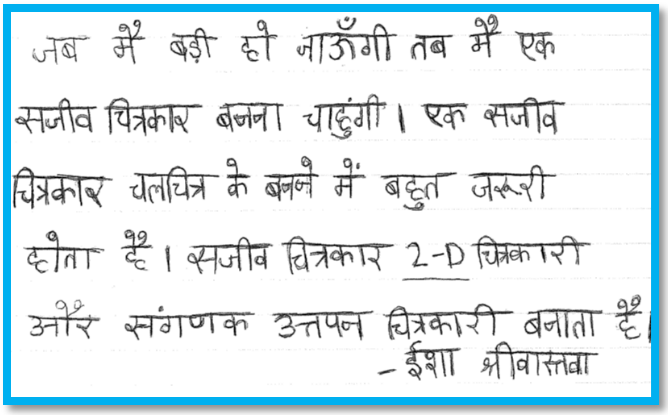

जब मैं बड़ी हो जाऊँगी तब मैं एक सजीव चित्रकार बनना चाहुंगी। एक सजीव चित्रकार चलचित्र के बनने में बहुत जरूरी होता है। सजीव चित्रकार 2-D चित्रकारी और संगणक उत्तपन चित्रकारी बनाता है।
– ईशा श्रीवास्तवा

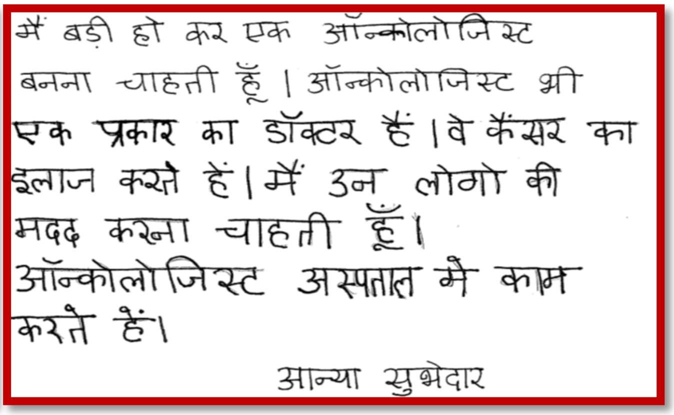

मैं बड़ी हो कर एक ऑन्कोलोजिस्ट बनना चाहती हूँ। ऑन्कोलोजिस्ट भी एक प्रकार का डॉक्टर हैं। वे कैंसर का इलाज करते हें। मैं उन लोगो की मदद करना चाहती हूँ।
ऑन्कोलोजिस्ट अस्पताल मे काम करते हें।
आन्या सुभेदार

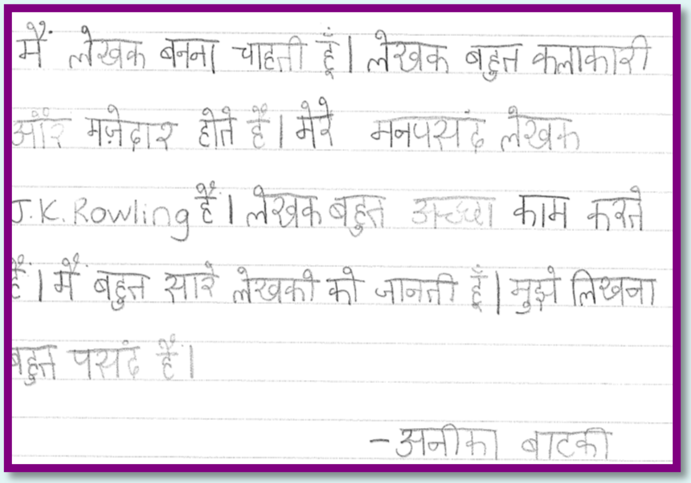
मैं लेखक बनना चाहती हूँ। लेखक बहुत कलाकारी और मज़ेदार होते हैं। मेरे मनपसंद लेखक J.K. Rowling हैं। लेखक बहुत अच्छा काम करते हैं। मैं बहुत सारे लेखकों को जानती हूँ। मुझे लिखना बहुत पसंद हैं।

-अनीका बाटकी

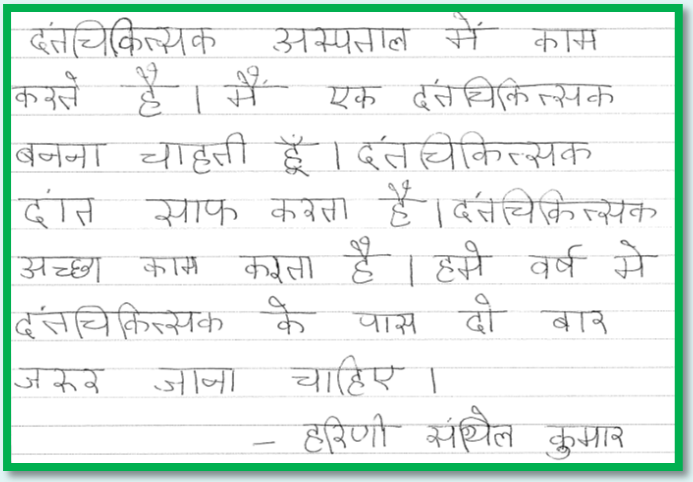
दंतचिकित्सक अस्पताल में काम करते हैं। मैं एक दंतचिकित्सक बनना चाहती हूँ। दंतचिकित्सक दांत साफ करता हैं। दंतचिकित्सक अच्छा काम करता हैं। हमे वर्ष मे दंतचिकित्सक के पास दो बार जरूर जाना चाहिए।

– हरिणी संथिल कुमार

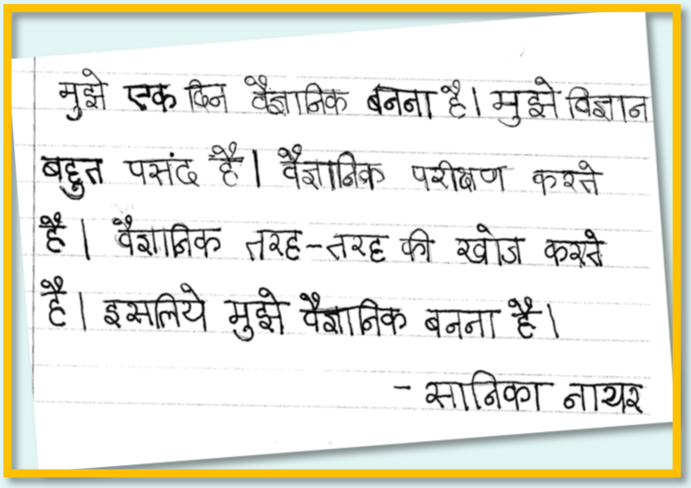
मुझे एक दिन वैज्ञानिक बनना है। मुझे विज्ञान बहुत पसंद है। वैज्ञानिक परीक्षण करते हैं। वैज्ञानिक तरह-तरह की खोज करते हैं। इसलिये मुझे वैज्ञानिक बनना है।

- सानिका नायर

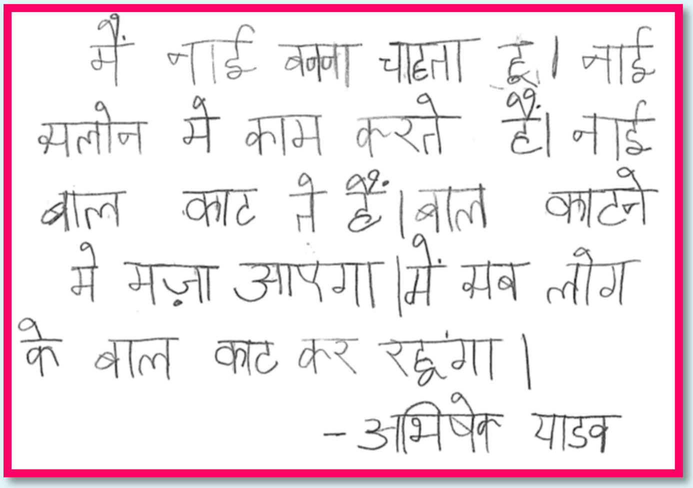
मैं नाई बनना चाहता हूँ। नाई सलोन मे काम करते हैं। नाई बाल काटते हैं। बाल काटने मे मज़ा आएगा। मैं सब लोग के बाल काट कर रहूंगा।

-अभिषेक यादव

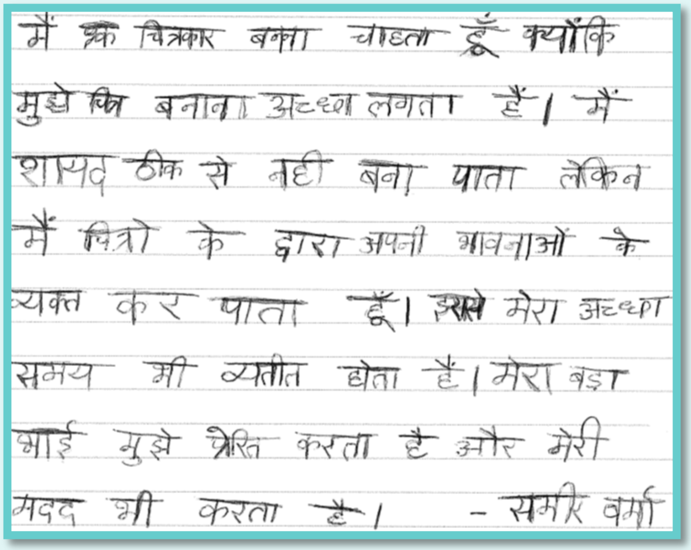
मैं एक चित्रकार बनना चाहता हूँ क्योंकि मुझे चित्र बनाना अच्छा लगता हैं। मैं शायद ठीक से नहीं बना पाता लेकिन मैं चित्रों के द्वारा अपनी भावनाओं के व्यक्त कर पाता हूँ। इससे मेरा अच्छा समय भी व्यतीत होता हैं। मेरा बड़ा भाई मुझे प्रेरित करता है और मेरी मदद भी करता है।

- समीर वर्मा

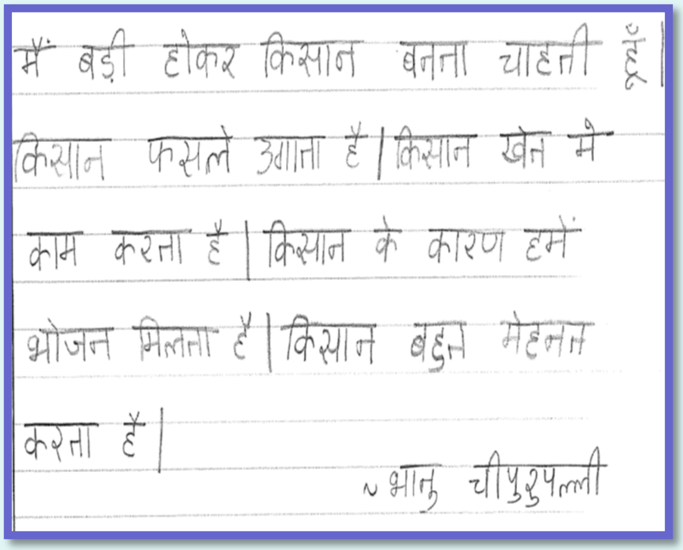
मैं बड़ी होकर किसान बनना चाहती हूँ। किसान फसले उगाता हैं। किसान खेत मे काम करता हैं। किसान के कारण हमें भोजन मिलता हैं। किसान बहुत मेहनत करता हैं।

~ भानु चीपुरुपल्ली

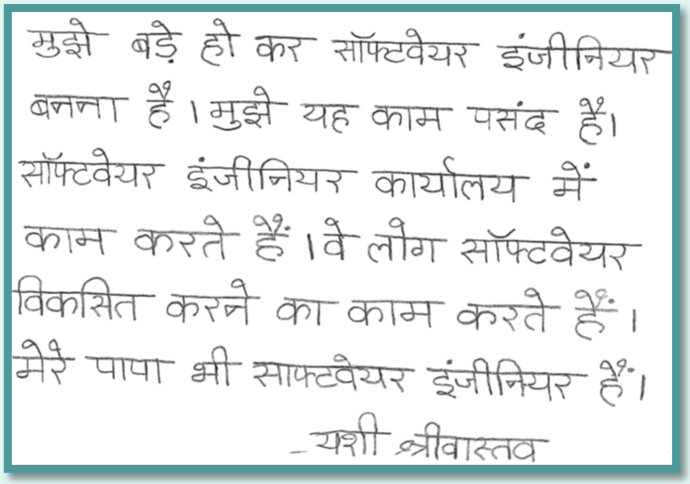

मुझे बड़े हो कर सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना हैं। मुझे यह काम पसंद हैं। सॉफ्टवेयर इंजीनियर कार्यालय में काम करते हैं। वे लोग सॉफ्टवेयर विकसित करने का काम करते हैं। मेरे पापा भी साफ्टवेयर इंजीनियर हैं।

—यशी श्रीवास्तव

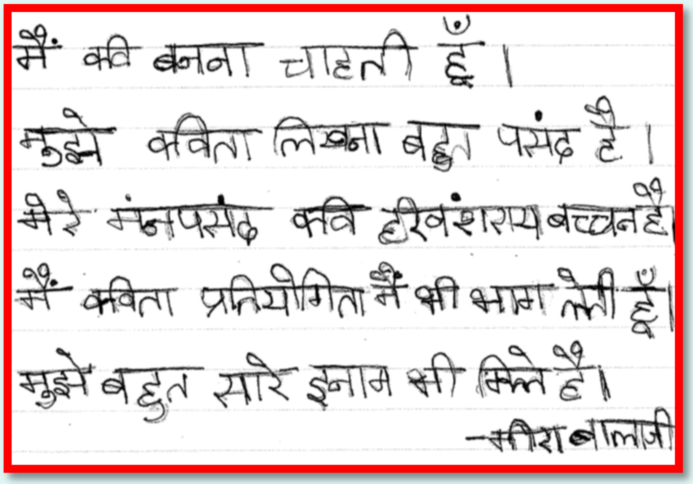

मैं कवि बनना चाहती हूँ।
मुझे कविता लिखना बहुत पसंद है।
मेरे मनपसंद कवि हरिवंशराय बच्चन हैं।
मैं कविता प्रतियोगिता में भी भाग लेती हूँ।
मुझे बहुत सारे इनाम भी मिले हैं।

—मीरा बालाजी

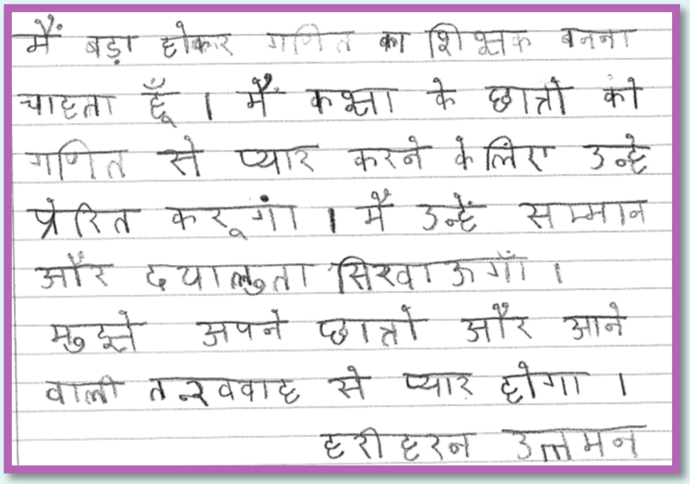

मैं बड़ा होकर गणित का शिक्षक बनना चाहता हूँ। मैं कक्षा के छात्रों को गणित से प्यार करने के लिए उन्हें प्रेरित करूँगा। मैं उन्हें सम्मान और दयालुता सिखाऊँगा। मुझे अपने छात्रों और आने वाली तनख्वाह से प्यार होगा।

हरीहरन उत्तमन

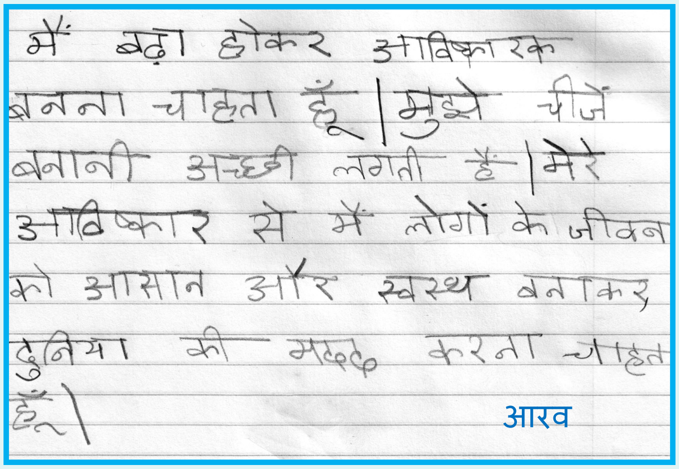

मैं बढ़ा होकर आविष्कारक बनना चाहता हूँ। मुझे चीजें बनानी अच्छी लगती हैं। मेरे आविष्कार से मैं लोगों के जीवन को आसान और स्वस्थ बनाकर, दुनिया की मदद करना चाहत हूँ।

आरव

मुझे बड़ी हो कर बच्चों कीं चिकित्सक होने की इच्छा हैं। ये चिकित्सक बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल करते है। छोटें बच्चों के चिकित्सक अस्पताल में काम करते है। स्वस्थ बच्चे देश का भविष्य है। इसी लिए यह एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है। मुझे छोटे बच्चे बहुत पसंद है। इसी लिए मुझे छोटे बच्चों का चिकित्सक होना है। मेरी चिकित्सक की तरह बनके मैं बच्चों की तबियत का ख़याल रखूँगी,और देश का भविष्य सुधरूँगी।

सिमरन बिडये

पंद्रहवें हिन्दी महोत्सव पर

हिन्दी यू.एस.ए. को हार्दिक शुभकामनाएँ

SAI CPA Services

SAI CPA SERVICES

We Specialize In

- Accounting & Bookkeeping
- Sales Tax & Payroll tax
- Business startup services
- Income Tax Preparation for Individual & Business
- IRS problems & Representations
- Payroll Services
- Developing & Implementing Business models
- Non-profit Taxes & 501C(3) approvals
- Financial Statement preparation & Attestation

Ajay Kumar, CPA

5 Villa Farms Cir, Monroe Township, NJ 08831

Phone: 908-380-6876

Fax: 908-368-8638

akumar@saicpaservices.com

www.saicpaservices.com

पढ़ने का लाभ

सृष्टि शर्मा

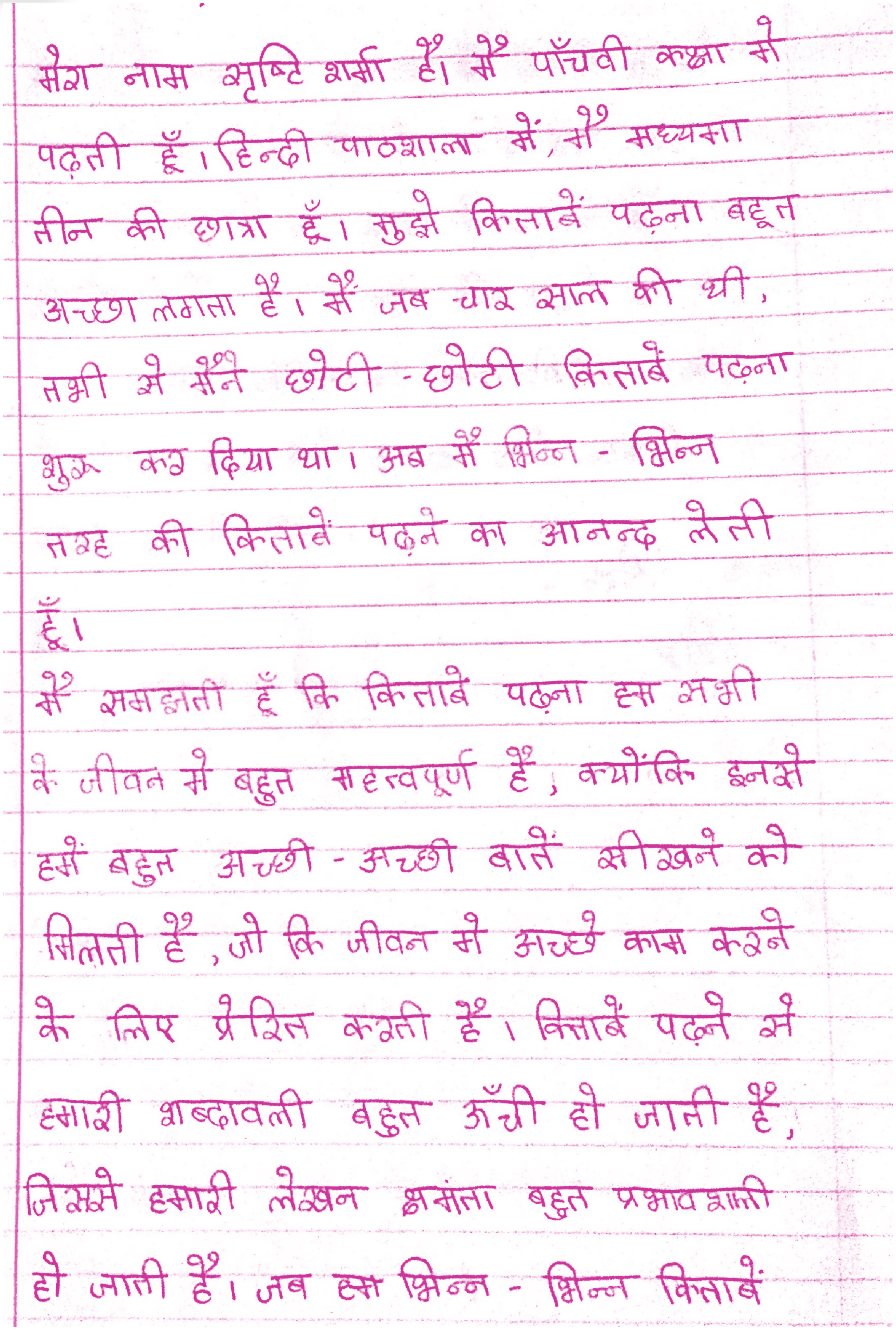

मेरा नाम सृष्टि शर्मा है। मैं पाँचवी कक्षा में पढ़ती हूँ। हिन्दी पाठशाला में, मैं मध्यमा तीन की छात्रा हूँ। मुझे किताबें पढ़ना बहूत अच्छा लगता है। मैं जब चार साल की थी, तभी से मैंने छोटी-छोटी किताबें पढ़ना शुरू कर दिया था। अब मैं भिन्न-भिन्न तरह की किताबें पढ़ने का आनन्द लेती हूँ।

मैं समझती हूँ कि किताबे पढ़ना हम सभी के जीवन मे बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इनसे हमें बहुत अच्छी-अच्छी बातें सीखने को मिलती हैं, जो कि जीवन मे अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करती हैं। किताबें पढ़ने से हमारी शब्दावली बहुत ऊँची हो जाती है, जिससे हमारी लेखन क्षमता बहुत प्रभावशाली हो जाती है। जब हम भिन्न-भिन्न किताबें

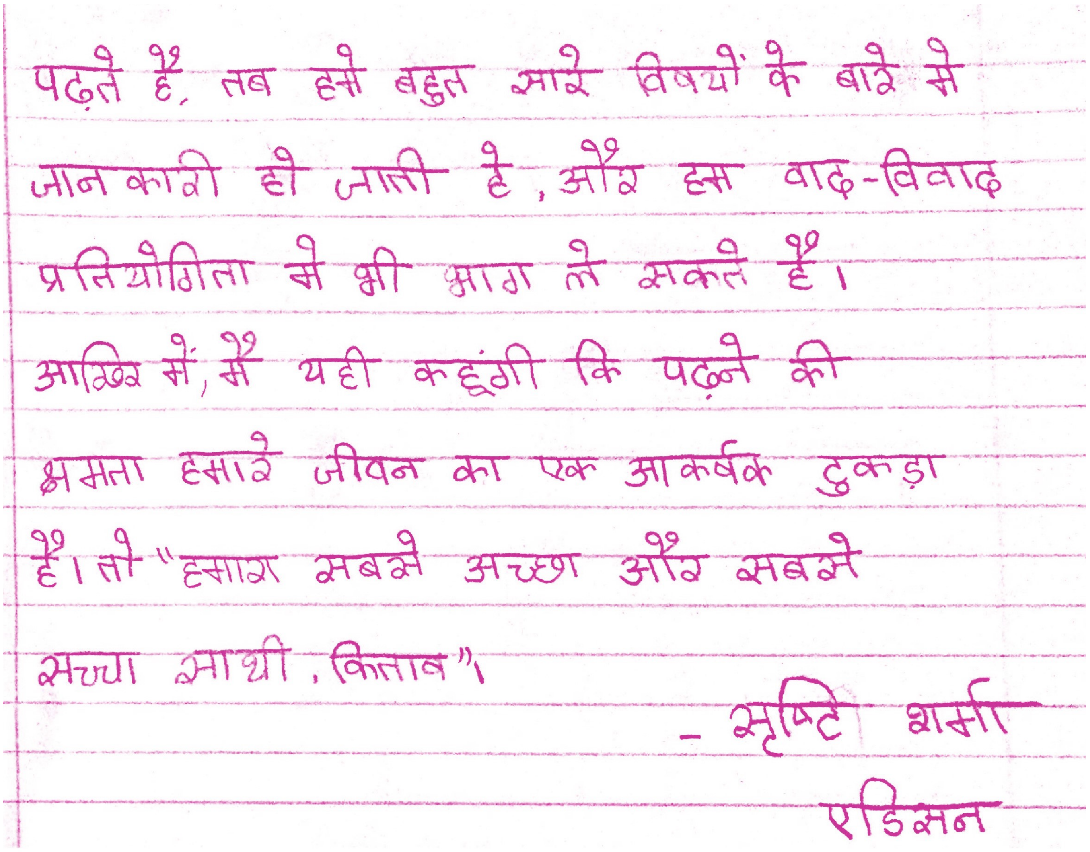

पढ़ते है, तब हमें बहुत सारे विषयों के बारे में जानकारी हो जाती है, और हम वाद-विवाद प्रतियोगिता में भी भाग ले सकते हैं। आखिर में, मैं यही कहूंगी कि पढ़ने की क्षमता हमारे जीवन का एक आकर्षक टुकड़ा है। तो "हमारा सबसे अच्छा और सबसे सच्चा साथी, किताब"।

- सृष्टि शर्मा

एडिसन

आज का भारत

मानवी गुप्ता (मध्यमा-३) चेस्टरफ़ील्ड हिंदी यू.एस.ए.

मेरी मम्मी, नानी और दादी से मैंने भारत के बारे में बहुत बातें सुनी थीं। मैं पहले भी कई बार भारत गयी हूँ लेकिन इस बार की भारत यात्रा मुझे बहुत अलग लगी। इस बार भारत में मैं कई जगह अपने पूरे परिवार के साथ घूमी। मैंने भारत में सभी यात्रा साधनों में यात्रा की जैसे रिक्शा, ताँगा, घोड़ा, हाथी, ऊँट, रेल और हवाई यात्रा। एक अलग बात यह थी कि इस बार रिक्शा कोई मेहनत से नहीं चला रहा था बल्कि रिक्शा मोटर से चल रहा था जो मुझे बहुत अच्छा लगा। भारत में मैने आगरा का सुन्दर ताजमहल देखा, दिल्ली का लाल किला, क़ुतुब मीनार और इंडिया गेट देखा। कृष्ण जी का वृंदावन देखा। जयपुर, उदयपुर के बड़े-बड़े राजमहल देखे। पूना और महाबलेश्वर के मंदिर देखे। लखनऊ का हजरत गंज देखा और तो और जिम कार्बेट पार्क भी देखा। इतना सब देखने के बाद जो मैंने सीखा और समझा वह यह की भारत की किसी भी देश से कोई तुलना नहीं की जा सकती और मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व है।

हमारी भारत यात्रा (संयुक्त शब्दों का प्रयोग)

(वेस्ट-विंडसर प्लेंसबोरो, मध्यमा-२ के छात्रों की संयुक्त परियोजना, अध्यापिका - सुनीता कक, ममता त्रिवेदी)

पिछले वर्ष हम गर्मी की छुट्टियों में भारत घूमने गये। भारत की राजधानी दिल्ली है तथा वहाँ की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। भारत में कुल २९ राज्य हैं।

सर्वप्रथम हम दक्षिण भारत गये। वहाँ हमने बहुत से मंदिर देखे। मंदिर बहुत विशाल और भव्य थे तथा मंदिर में बहुत से खम्भे भी थे। मंदिर के अंदर चप्पल पहन कर जाना मना था। मंदिर में पुजारी ईश्वर की मूर्ति की पूजा कर रहे थे। वहाँ अगरबत्ती और बहुत से दीप जल रहे थे तथा पुष्पों से सजावट की गई थी। शायद वहाँ जन्माष्टमी का त्योहार मनाया जा रहा था। हमने ईश्वर की प्रार्थना की। प्रसाद में हमें लड्डू मिला। हमें मंदिर बहुत ही अच्छा लगा।

हमने कई अन्य जगहों का भ्रमण किया। हमने मुम्बई के समुद्र तट का नजारा देखा। दिल्ली में राष्ट्रपति भवन देखा। मैसूर का किला भी देखा। वहाँ हमने बहुत सुन्दर फव्वारे देखे। हम आगरा का प्रसिद्ध ताजमहल भी देखने गये। हमने बहुत ध्यान से संगमरमर के पत्थरों पर बनी कारीगरी देखी। गर्मी के कारण हमें बहुत प्यास लग रही थी। रास्ते में हमने ठण्डी लस्सी पी, मिठाईयाँ खरीदी और हिन्दी भाषा की कुछ पुस्तकें भी खरीदी।

हम अपनी चचेरी बहन के विवाह उत्सव में भी शामिल हुए। परिवार के लोगों ने हमारा बहुत स्वागत किया और सभी लोग बहुत प्रसन्न थे। पूरा घर बिजली की लड़ियों से जगमगा रहा था। दूल्हा-दुल्हन

बहुत सुन्दर लग रहे थे। हमने बहुत से स्वादिष्ट व्यंजन भी खाये।

हमने भारत के कुछ मुख्य तथ्यों की जानकारी भी एकत्र की। भारत विश्व का सातवाँ बड़ा राष्ट्र है तथा जनसंख्या की दृष्टि से द्वितीय बड़ा राष्ट्र है। भारत में शून्य का अविष्कार हुआ था। ऋग्वेद न केवल भारत, अपितु विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थों में से एक है। भारत में अनेक धर्मों के लोग रहते हैं। उत्तर भारत में कत्थक, तो दक्षिण भारत में भरतनाट्यम नृत्य का प्रचलन है। भारत के ध्वज में अशोक चक्र है तथा यहाँ लोग नमस्ते कहकर सबका सम्मान करते हैं।

तीन सप्ताह बाद हमें वापस आना था। हमने अपने माता-पिता का बहुत धन्यवाद किया और अगले वर्ष पुनः जाने की इच्छा जताई। यह यात्रा हमें हमेशा याद रहेगी।

मेरा नाम आरूष है। मैं प्रथमा-१ में पढ़ता हूँ। मैं ७ साल का हूँ। मुझे ड्रॉयिंग और ओरिगामी बहुत पसंद है। सर्दी की छुट्टियों में स्वर और गिनती का चार्ट बनाने में मुझे बहुत मजा आया। मम्मी और मैंने गिनती चार्ट के लिए चीज़ें निकाली और स्वर चार्ट की ड्रॉयिंग मैंने हिन्दी की किताब से ली। मुझे हिन्दी क्लास बहुत अच्छी लगती है।

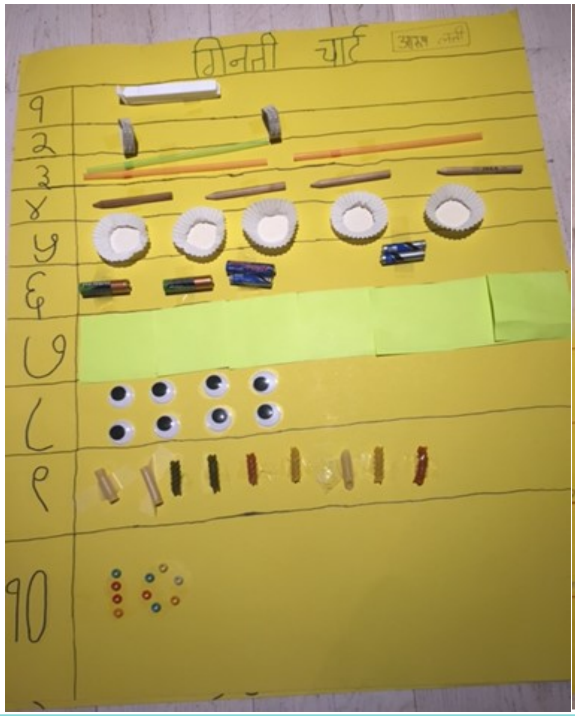
गिनती चार्ट
आरुष लनी
१
२
३
४
५
६
७
८
९
10

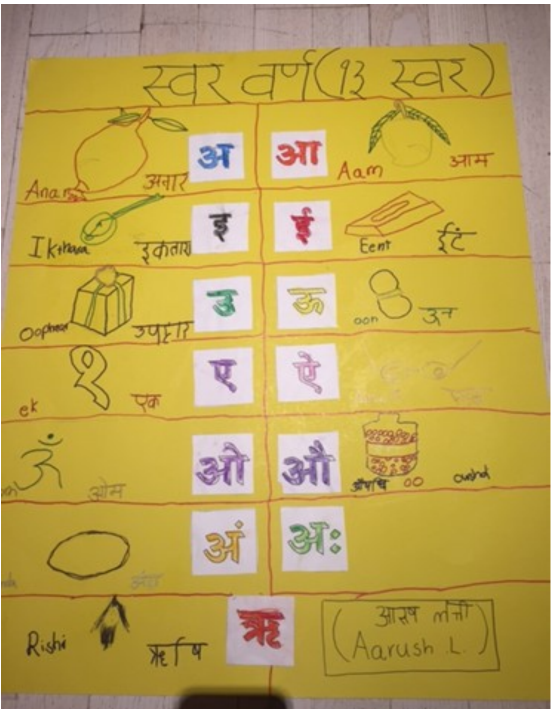
स्वर वर्ण (13 स्वर)
अ
आ
Anar
अनार
Aam
आम
इ
ई
Iktara
इकतारा
Eent
ईंट
उ
ऊ
Oophaar
उपहार
oon
ऊन
ए
ऐ
ek
एक
ओ
औ
ओम
औषधि
Aushad
अं
अः
अंडा
Rishi
ऋषि
ऋ
आरुष लनी
Aarush L.

भारत के कुछ राज्यों की कुछ विशेष बातें

रश्मि चौधरी

मेरा नाम रश्मि चौधरी है। मैं झारखंड से हूँ। मैं हिन्दी यू.एस.ए. मोनरो शाखा में पिछले पांच साल से मुख्य शिक्षिका के रूप में पढ़ा रही हूँ। मुझे पेंटिंग और संगीत से लगाव है। रश्मि गुर्रम मेरी सहशिक्षिका है। हम लोग मध्यमा-२ स्तर के बच्चों को पढ़ाते हैं। हमारे कुछ विद्यार्थियों ने अपने-अपने माता-पिता के जन्म स्थान के बारे में कुछ विशेष बातें बतायी हैं।

रश्मि गुर्रम

महाराष्ट्र

सोन्या हरजानी

नमस्ते, मेरा नाम सोन्या हरजानी है। भारत में मैं मुंबई शहर से हूँ। वहाँ के दो बहुत अच्छे व्यंजन वड़ा पाव और पाव भाजी हैं। भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर है। मुंबई में सबसे ज्यादा लोग सलवार कमीज और साड़ी पहनते हैं। मेरे पिताजी का परिवार ठाणे में रहता है और मेरी माँ का परिवार चम्बूर में रहता है। यहाँ का मौसम पर्यटन के लिए बहुत अच्छा है।

पंजाब

मेरे माता पिता पंजाब से हैं। मैं आज आपको पंजाबी सभ्यता के बारे में बताती हूँ। पंजाब पाँच नदियों का घर है - झेलम, चेनाब, रावी, सतलज और बेअस। यहाँ गुरू नानक जी का जन्म हुआ था। गुरू रामदास जी ने अमृतसर की खोज की। वहाँ हरमंदिर साहिब हैं जिसे स्वर्ण मंदिर भी कहा जाता है। यहाँ जलिया वाला बाग भी है। पंजाब की भाषा पंजाबी है। पंजाब का मशहूर नृत्य भंगड़ा और गिद्धा है। साग, मक्के की रोटी, लस्सी, चना भटूरा, पूरी आलू, यहाँ के कुछ खास खाने हैं। मकर संक्रांति, बसंत, होली, दीवाली, गुरू पूरब और लोड़ी यहाँ के त्योहार हैं।

श्रेया ढिल्लन

उत्तराखंड

कृष सक्सेना

मेरा नाम कृष सक्सेना है। मैं ९ साल का हूँ। हर गर्मी की छुट्टी में मैं देहरादून जाता हूँ। देहरादून भारत के उत्तरी राज्य उत्तराखंड की राजधानी है। इसे दून घाटी भी कहते है क्योंकि यह हिमालय की तराई में है। देहरादून बासमती चावल के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। घंटाघर देहरादून के बीचों बीच है। मुझे सहस्त्रधारा और मसूरी जाना बहुत पसंद है। देहरादून हिन्दुओं की पवित्र स्थल हरिद्वार के भी पास है।

महाराष्ट्र

रश्मि कापसे

मेरा परिवार नागपुर, महाराष्ट्र के शहर से है। यहाँ की स्थानीय भाषा मराठी है, लेकिन कई लोग अच्छी तरह से हिंदी बोलते हैं। वह इसलिए कि नागपुर पहले मध्यप्रदेश में हुआ करता था। नागपुर ऑरेंज सिटी के रूप में जाना जाता है। यहाँ बड़े ही स्वादिष्ट संतरे मिलते है। यहाँ की संतरा बर्फी बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ की मुख्य पोशाक मराठी पध्हती से औरतें नौवारी पहनती हैं जो कि एक तरह की साड़ी है, और मर्द धोती-कुरता पहनते हैं। नागपुर ऐतिहासिक रूप से भी महत्वपूर्ण शहर रहा है। यह भोसले राजघराने के अधिपत में मराठी राज्य का हिस्सा रहा है। नागपुर के आसपास कई "इंडियन टाइगर रिज़र्व" होने की वजह से नागपुर टाइगर कैपिटल के नाम से भी जाना जाता है। मैं और मेरा परिवार हर साल नागपुर जाते हैं और सारी आधुनिकताओं से युक्त नागपुर शहर में बड़े मजे से अपनी छुट्टियां बिताते हैं।

रेने रेड्डी

तेलंगाना

हैदराबाद भारत के दक्षिणी राज्य तेलंगाना की राजधानी है। हैदराबाद में बोली जाने वाली भाषा तेलगू तथा उर्दू है। हैदराबाद में कुछ ऐतिहासिक स्थान जैसे गोलकुंडा किला और चारमीनार हैं। हैदराबाद के व्यंजकों में चावल पकवान बिरयानी और गेहूं पकवान हलीम शामिल हैं। हैदराबाद मोती और हीरे के लिए प्रसिद्ध है। हैदराबाद प्रोद्दोगिकी उधोग के लिए एक प्रमुख केंद्र है।

मकर संक्रांति

अमर ढिल्लों - मध्यमा -१

मकर संक्रांति हिंदू धर्म का प्रमुख त्यौहार है। यह पर्व पूरे भारत में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। पौष मास में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तब इस संक्रांति को मनाया जाता है। कहा जाता है कि इस दिन भगवान सूर्य अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उसके घर जाया करते हैं। शनिदेव चूंकि मकर राशि के स्वामी हैं, अत: इस दिन को मकर संक्रांति के नाम से जाना जाता है। मकर संक्रांति के दिन ही गंगा जी भागीरथ के पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा उनसे मिली थीं। यह भी कहा जाता है कि गंगा को धरती पर लाने वाले महाराज भगीरथ ने अपने पूर्वजों के लिए इस दिन तर्पण किया था। उनका तर्पण स्वीकार करने के बाद इस दिन गंगा समुद्र में जाकर मिल गई थीं। इसलिए मकर संक्रांति पर गंगा सागर में मेला लगता है। इस त्यौहार को अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग नाम से मनाया जाता है। पंजाब में यह त्यौहार लोड़ी के अगले दिन मनाया जाता है। इस दिन खूब नाच गाना होता है और भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यंजन भी बनते हैं। इस दिन फसल कटती है। भंगड़ा से सब खुश होते हैं। इस दिन बहुत तरह के व्यंजन भी बनते हैं। रंग बिरंगी पतंगे भी उड़ाई जाती हैं। यह भारत का एक बड़ा त्यौहार है|

प्रयाग

मेरा नाम यशी श्रीवास्तव है। मैं १३ वर्ष की हूँ। मैं चार वर्ष से हिन्दी पाठशाला में पढ़ रही हूँ। मैं बचपन में प्रयाग में रही हूँ। इसलिए मैंने प्रयाग के बारे में लिखा है।

“रेवा तीरे तप: कुर्यात मरणं जाह्नवी तटे।” अर्थात तपस्या करना हो तो नर्मदा के तट पर और शरीर त्यागना हो तो गंगा तट पर। **प्र** का मतलब होता है बहुत बड़ा और **याग** का मतलब होता है यज्ञ।
“प्रकृष्टो यज्ञो अभूद्यत्र तदेव प्रयागः” इस प्रकार इसका नाम प्रयाग हुआ। मेरे दादी बाबा प्रयाग में रहते हैं। प्रयाग को “तीर्थराज प्रयाग” भी कहते हैं। प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का संगम है, जिसे त्रिवेणी संगम भी कहते हैं। सरस्वती नदी लुप्त है। गंगा का जल सफ़ेद रंग का है और यमुना का जल हरे रंग का है। यहाँ गंगा नदी के किनारे हर वर्ष माघ मेला, हर छः वर्ष पर अर्ध कुम्भ तथा हर बारह वर्ष पर कुम्भ मेला लगता है। बहुत सारे विदेशी भी यहाँ पर दर्शन के लिए आते हैं। हर शाम को प्रयाग में गंगा जी की आरती होती है। यह बहुत ही मनोरम दृश्य होता है। प्रयाग में बहुत सारे प्रसिद्ध स्थान हैं। गंगा जी के किनारे लेटे हुए हनुमान जी का बहुत ही प्राचीन मंदिर है। यमुना जी के किनारे पर मनकामेश्वर मंदिर है। यहाँ पर भरद्वाज मुनि का आश्रम भी है। यहाँ पर अकबर का किला है। किले के अंदर अक्षयवट वृक्ष है। प्रयाग में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का घर है। जिसका नाम आनंद भवन है। इस देवभूमि का नाम प्रयाग ही था। जब अकबर यहाँ आया तो उसने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों को जोड़कर एक नया धर्म चलाया था। जिसका नाम उसने दीन-ए-इलाही रखा। इसी धर्म के नाम पर उसने प्रयाग का नाम इलाहाबाद रखा। अब प्रयाग को इलाहाबाद के नाम से भी जाना जाता है।

एकता सिंह

सड़क के बीच रास्ते में

मेरा नाम एकता सिंह है। मैं पंद्रह वर्ष की हूँ और दसवीं कक्षा की विद्यार्थी हूँ। मुझे बॉस्किटबॉल खेलना और बॉलिवुड नृत्य करना अच्छा लगता है। लोग क्या कहेंगे, उसके अनुसार हम अपना काम करते हैं। मेरा लेख इसी बात पर आधारित है।

हम हमेशा एक दूसरे को देखते हैं, क्योंकि हमारे समाज में दूसरों को देखकर काम करना बहुत पसंद करते हैं। अगर हमारा समाज नहीं सुधरेगा तो हम सड़क के बीच में रहेंगे, किसी और के रास्ते में, जो हमारे समाज के आधार पर नहीं चलते हैं। हमें ध्यान देना चाहिए कि हम एक दूसरे को नहीं देख रहे हैं, और जो हमें करना है वही करें।
मैं किसी और को देख कर काम नहीं करती हूँ, इसलिए नहीं कि यह ग़लत है, पर इसलिए कि मैं सब लोगों की तरह नहीं बनना चाहती हूँ। मुझे सब लोगों से अलग दिखना और बनना है। मैं सड़क के बीच रास्ते में कभी नहीं रहूँगी!

मेरा नाम निधि उपसिनी है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. की मध्यमा-३ कक्षा मैं पढ़ती हूँ। मैं स्टैमफोर्ड में रहती हूँ। मुझे गाना सुनना पसंद है।

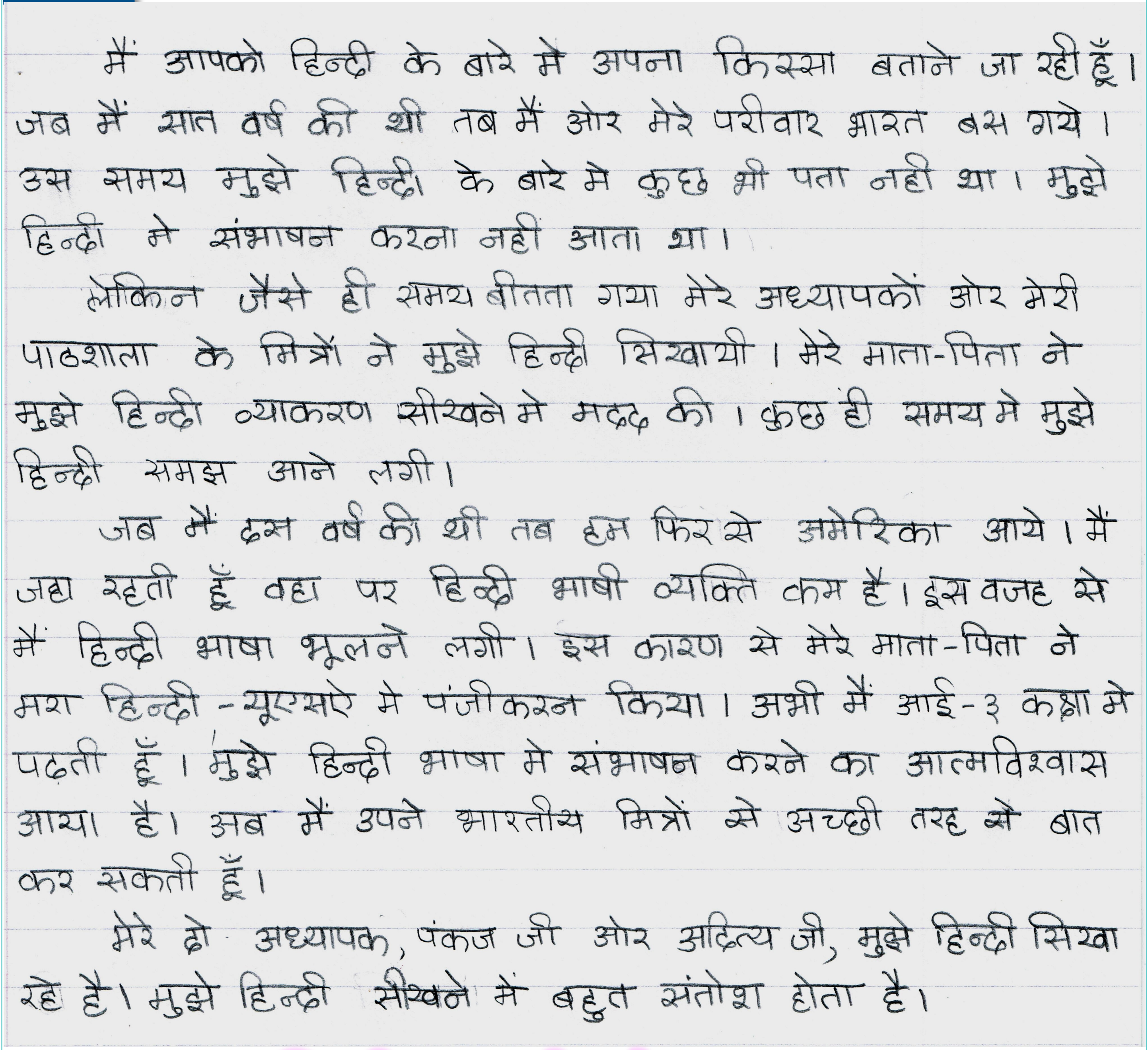

मैं आपको हिन्दी के बारे मे अपना किस्सा बताने जा रही हूँ। जब मैं सात वर्ष की थी तब मैं ओर मेरे परीवार भारत बस गये। उस समय मुझे हिन्दी के बारे मे कुछ भी पता नही था। मुझे हिन्दी मे संभाषन करना नहीं आता था।

लेकिन जैसे ही समय बीतता गया मेरे अध्यापकों ओर मेरी पाठशाला के मित्रों ने मुझे हिन्दी सिखायी। मेरे माता-पिता ने मुझे हिन्दी व्याकरण सीखने मे मदद की। कुछ ही समय मे मुझे हिन्दी समझ आने लगी।

जब मैं दस वर्ष की थी तब हम फिर से अमेरिका आये। मैं जहा रहती हूँ वहा पर हिन्दी भाषी व्यक्ति कम है। इस वजह से मैं हिन्दी भाषा भूलने लगी। इस कारण से मेरे माता-पिता ने मरा हिन्दी-यूएसए मे पंजीकरन किया। अभी मैं आई-३ कक्षा मे पढ़ती हूँ। मुझे हिन्दी भाषा मे संभाषन करने का आत्मविश्वास आया है। अब मैं उपने भारतीय मित्रों से अच्छी तरह से बात कर सकती हूँ।

मेरे दो अध्यापक, पंकज जी ओर अदित्य जी, मुझे हिन्दी सिखा रहे है। मुझे हिन्दी सीखने में बहुत संतोष होता है।

हिन्दी भाषा सीखने का कारण

एक चूहों का परिवार एक घर में रहता था। घर के मालिक ने बिल्ली पाली। एक दिन बिल्ली चूहों के पीछे भागी। चूहों के बच्चे जैसे बिल में घुसे उनके पापा ने देखा और “भों-भों” की आवाज़ निकाली। आवाज सुनकर बिल्ली भाग गई। चूहों के बच्चों ने पूछा “पापा आपने “भों-भों” क्यों बोला?” चूहों के पिता ने जवाब दिया “दूसरी भाषा सीखने से जिंदगी में काम आती है” और इसीलिए मैं हिन्दी सीखता हूँ।

- ग्रिषम वजीरानी, मध्यमा-३, लॉरेंसविल हिंदी पाठशाला

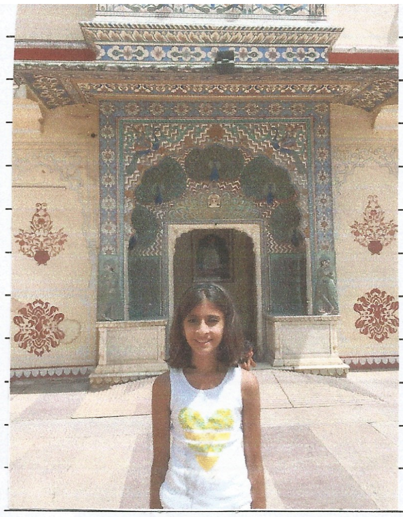

जयपुर

मेरा नाम चैहल कटोच हैं। मैं, हिन्दी यू.एस.ए की ईस्ट ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला में मध्यमा-3 में पढ़ती हूँ।

मुझे गर्मियों की छुट्टियों में भारत यात्रा के समय जयपुर जाने का मौका मिला।

पिंक सिटी

जयपुर को पिंक सिटी बोलते हैं। वहाँ पर सभी इमारतें बाहर से पिंक हैं

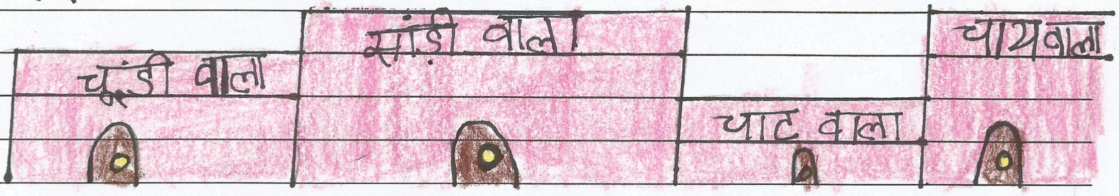

जल महल

जल महल पानी मे बनाया गया हैं। राजा और रानी यहाँ पर महत्वपूर्ण निर्णय लेते थे।

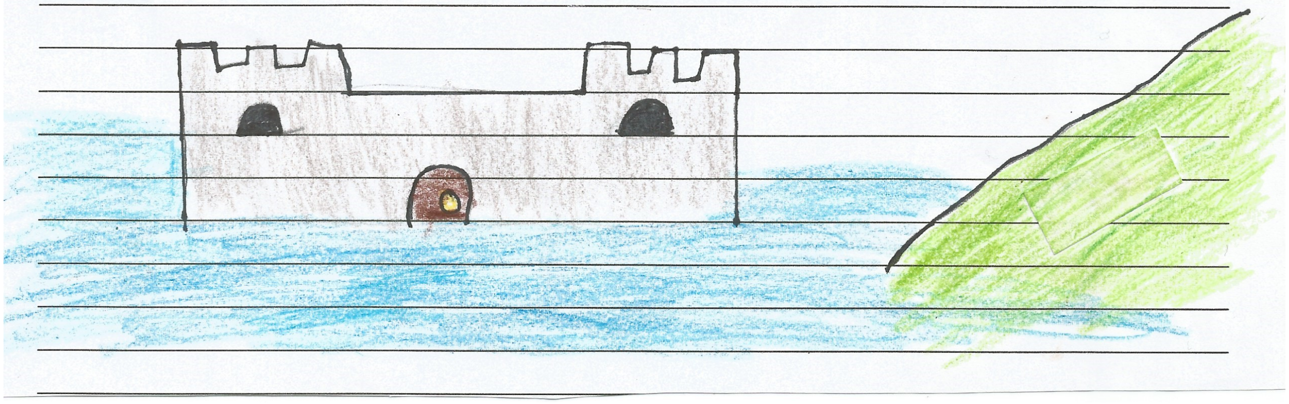

उमैद भवन

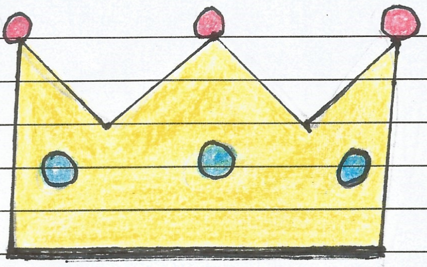

उमैद भवन मान सिंह राजा का महल है। वहां पर हम हाथी पर चढ़ कर गए। उस में राजा का कमरा देखने को मिला और मैंने देखा जहां पर रानियाँ रहती थी सोती थी, और खाती थी।

जयगढ़

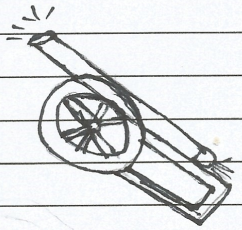

जयगढ़ मे भारत की सबसे बड़ी तोप है।

खाना

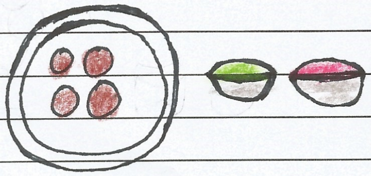

जयपुर की कचौड़ी और घेवर बहुत प्रसिद्ध है।

जयपुर की रजाईयां भी बहुत प्रसिद्ध हैं। मुझे जयपुर बहुत अच्छा लगा और उसका इतिहास जानकर और भी अच्छा लगा।

आई लव इंडिया

नमस्ते।

मेरा नाम कल्प पोलडिया है। मैं आठ साल का हूँ। मैं Beginner 2 स्तर की कक्षा में पढ़ता हूँ। जब मुझसे कहा गया कि मुझे एक निबंध लिखना है, तब मैंने भारत में बिताए छुट्टी के बारे में लिखना शुरू किया। इस दिसम्बर मैं भारत गया था। मेरे दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-चाची, मामा-मामी, मौसा-मौसी और ढेर सारे भाई-बहन वहाँ रहते हैं। इतने सारे लोगों में रहकर मुझे बहुत अच्छा लगा और मज़ा आया।

मैं मुंबई शहर के ग्राँट रोड इलाके में रहता हूँ। जैसे ही हम घर पहुँचे, सबने हमारा स्वागत किया। केक, फूल और गुब्बारों से घर को सजाया था। दुसरे ही दिन मेरे दादाजी ने एक पूजा रखी थी और मैंने कुर्ता-पायजामा पहना था। हमने मुँबई की कुछ बहतरीन जगह भी देखीं।

जैसे
-गेट्वे ऑफ इंडिया
-ताज होटल
-म्युज़ियम
-मणी भवन
-अरबी समुद्र

मैंने बहुत सारी तस्वीरें भी लीं हैं इन सारी जगहों की। मणी भवन महात्मा गांधीजी का निवास था। यहाँ मैंने 'चरखा' भी चलाया। चरखा एक यंत्र है जिस्से सूती धागा बनता है। मैंने मुँबई की लोकल रेलगाडी में भी सफर किया था। टिकट लेने में बड़ा मज़ा आता है। और वहाँ डॉलर नहीं; रूपए होते हैं। मैं उधर बस, टॅक्सी और रिक्शा से भी सफर करता था।

भारत में सब कुछ बहुत अलग है। वहाँ भीड़ है, बड़ी इमारतें हैं, और छोटे घर हैं। लेकिन मुझे भारत में बहुत अच्छा लगता है। अपने परिवार के साथ रहना और छुट्टियाँ मनाना मेरे लिए बहुत बड़ी खुशी है। मुझे अपने दादा-दादी और नाना-नानी की याद आती है। उनका लाड़, प्यार और मिठाईयाँ याद आती है।

इस लेख से मैं यही कहना चाहता हूँ कि "आइ लव इंडिया" और मैं अपनी हिंदी पाठशाला का आभारी हूँ जो मुझे हिंदी पढ़ने, लिखने और बोलने में मदद कर रही है।

धन्यवाद।

मणि भवन
गांधीजीका बम्बईका निवासस्थान: १९१७ से १९३४
यहाँसे उन्होंने १९१९ के सत्याग्रह व १९३२ के
सविनय कानून-भंगका आरम्भ किया
MANI BHAVAN
GANDHIJI'S RESIDENCE IN BOMBAY: 1917-1934
HE LAUNCHED FROM HERE SATYAGRAHA IN 1919
AND CIVIL DISOBEDIENCE IN 1932

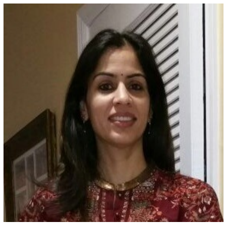

हमारे सपने

साऊथ ब्रंस्विक – मध्यमा-३

मेरा नाम साधना जैन है। मैं इस वर्ष मध्यमा-३ के विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ा रही हूँ। पिछले वर्ष हिंदी महोत्सव में इन विद्यार्थियों के साथ हमने भिन्न-भिन्न व्यवसायों पर एक प्रस्तुति दी थी। इस वर्ष जब मैंने इन विद्यार्थियों से कर्मभूमि के लिए लेख लिखने की बात जाहिर की तब उन्होंने व्यवसायों पर लिखने की इच्छा जताई। बड़े होकर वे कौन सा व्यवसाय अपनाना चाहते है इस पर बच्चों ने अपने विचार कागज पर उतरे हैं। बच्चों का यह प्रयास सादा, सरल और मनोरंजक है।

मुझे एक डॉक्टर बनना है। मुझे बिमार लोगो की सहायता करना है। मेरे पास एक स्थेटीस्कोप भी है। इसलिये मुझे को एक डॉक्टर बनना है।

तनीशा जैन

मै बड़े हो कर मंत्री बनना चाहता हूँ। मै मंत्री बनना हूँ क्योंकि मै दुनिया में बदलाव लाना चाहता हूँ। और मशहूर होना चाहता हूँ। इसलिये मुझे मंत्री बनना है।

धनन्जय गुरुमुर्ती

अभिनेता बहुत पैसा कमाते हैं। अभिनेता लोगों के लिये आदर्श होते हैं। वो बहुत अमीर होते हैं। अगर मै अभिनेता बनूगाँ तो एक अच्छा अभिनेता होऊगा।

अखिल रेड्डी

मैं बड़ा होकर एक कालाकार बनना चहता हूँ। मुझे कला बहुत अच्छी लगती हैं। मैं कालाकार बनना चाहता हूँ क्योंकि मुझे बहुत पैसा कमाना है। इसलिये मुझे कालाकार बनना हैं।

प्रणीय हिरपरा

नर्तक को बहुत सारे इनाम और पदक मिलते हैं। नर्तकों को बहुत अच्छे-अच्छे कपड़े मिलते हैं। अच्छे नर्तक लोकप्रिय हो जाते हैं। नर्तक बड़े-बड़े श्रोता के सामने प्रदर्शन करते हैं। मैं बड़ी हो कर नर्तक बनना चाहती हूँ।

मैहक दास

मै वैज्ञानिक बनना चाहती हूं। मुझे विज्ञान बहुत अच्छा लगता है। मुझे भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान बहुत पसंद है। मुझे ये व्यवसाय अच्छा लगता हैं, क्योंकि मै मेरे वैज्ञानिक खोजोंसे लोगोंकी मदद करना चाहती हूँ।

अनिका मंगी

भविष्य में, मुझे एक चिकित्सक बनना है। मुझे लोगों की जान बचाना है। मेरे मामाजी और मौसी चिकित्सक हैं। इसलिय मुझे भी चिकित्सक बनना है। मुझे यह व्यवसाय बहुत अच्छा लगता है।

देव गांधी

मुझे बडे होकर अभिनेत्री बनना हैं। मुझे अभिनेत्री बनना है क्योकी मुझे मजा आता है मनोरंजन करने मे। मे अच्छा अभिनय करती हू, इसकेलिए मे एक अच्छी अभिनेत्री बनुगी। एक दिन मुझे चलचित्र मे अभिनय करना है। जब मे अभिनेत्री बननु तो मे मेरा सपना पुरा कर पाऊँगी।

पौंली सिंघवी

बुडे होकर मुझे ऐक संगीतकार बनना है क्योंकि मैं पयानो अच्छा बजाती हूँ। मैं वियोला भी बजाती हूँ। मुझे गाने कि धुन बनाना भी आता है। मेरा उद्देश्य संगीतकार बनना है।

दिया शाह

मैं बुड़ी हो कर एक गायक बनना चाहती हूँ। मैं एक गायक बनना चाहती हूँ क्योंकि गायकी मेरा जुनून है। मैं बहुत समय से गाना गा रही हूँ। मुझें गाना लिखना भी पसंद है। मेरी मनपसंद गायिका सबरीना कारपेंटर है। वो मेरा आदर्श है। मुझे संगीत व्यापार भी अच्छा लगता है। इसी लिए मैं गायक बनना चाहती हूँ।

आरुषी सिंह

मैं चिकित्सक के बारे मे लिखना चाहता हूँ। चिकित्सक अस्पताल मे काम करते है। चिकित्सक बिमार लोगों का इलाज करते हैं। चिकित्सक बनने के लिए बहुत पढ़ाई करनी पड़ती है। मैरे चाचाजी एक चिकित्सक है

आरुष बंसल

मैं बड़ी हो कर एक चिकित्यक बनना चाहती हूँ। क्योंकि मैं बिमार लोगों की सेवा करना चाहती हूँ। मुझको विज्ञान बहुत पसंद है। मैं एक मशहूर चिकित्यक बनूगी।

त्रिशा रेड्डी

में रसायन वैज्ञानिक बनना चाहती हूँ। मुझें खोज करना आच्छी लगती हें। मुझें जाँच करना पसंद हैं। मैं एक अच्छी रसायन वैज्ञानिक बनुगी।

सवेता कार्तिकेयन

जब मैं बड़ा होजाऊँगा तब मुझे अविष्कारक बनना हैं। मेरे पास अभी से बहुत सारे खयाल हैं। मुझे अविष्कारक बनना हैं क्योंकि मुझे नयी-नयी चीज बनानेको मिलेगी॥

अंश राना

गणतंत्र दिवस

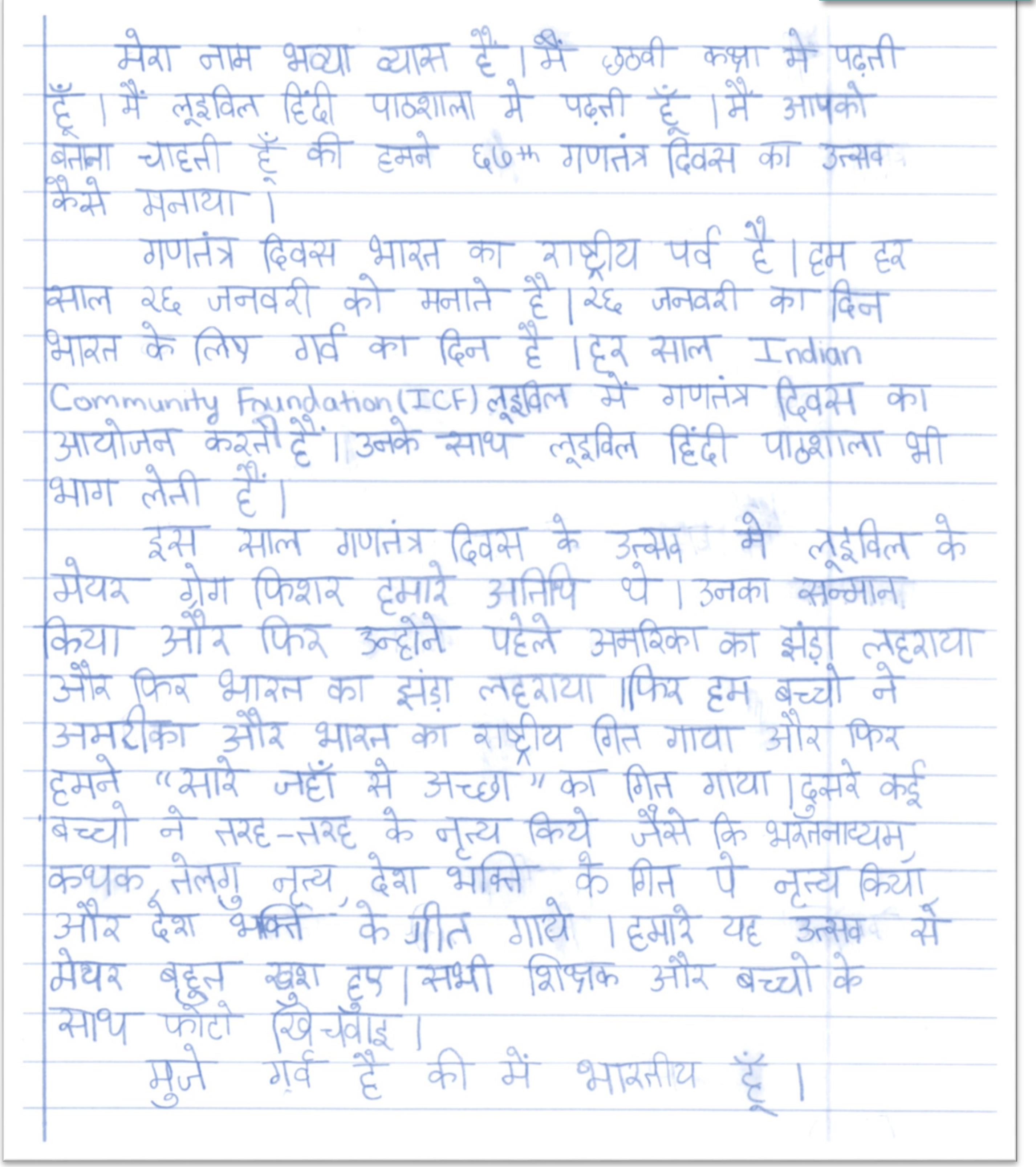

मेरा नाम भव्या व्यास है। मैं छठवी कक्षा मे पढ़ती हूँ। मैं लूइविल हिंदी पाठशाला मे पढ़ती हूँ। मैं आपको बताना चाहती हूँ की हमने ६७th गणतंत्र दिवस का उत्सव कैसे मनाया।

गणतंत्र दिवस भारत का राष्ट्रीय पर्व है। हम हर साल २६ जनवरी को मनाते है। २६ जनवरी का दिन भारत के लिए गर्व का दिन है। हर साल Indian Community Foundation (ICF) लूइविल में गणतंत्र दिवस का आयोजन करती हैं। उनके साथ लूइविल हिंदी पाठशाला भी भाग लेती हैं।

इस साल गणतंत्र दिवस के उत्सव मे लूईविल के मेयर ग्रेग फिशर हमारे अतिथि थे। उनका सम्मान किया और फिर उन्होंने पहेले अमरिका का झंड़ा लहराया और फिर भारत का झंड़ा लहराया। फिर हम बच्चो ने अमरीका और भारत का राष्ट्रीय गित गाया और फिर हमने "सारे जहाँ से अच्छा" का गित गाया। दूसरे कई बच्चो ने तरह-तरह के नृत्य किये जैसे कि भरतनाट्यम, कथक, तेलगु नृत्य, देश भक्ति के गित पे नृत्य किया और देश भक्ति के गीत गाये। हमारे यह उत्सव से मेयर बहुत खुश हुए। सभी शिक्षक और बच्चो के साथ फोटो खिंचवाई।

मुजे गर्व है की में भारतीय हूँ।

SUHAG Jewelers

22kt. Gold & Diamond Jewelry

35% Off

*35% off on Diamond Jewelry only

We buy Gold Also

1367 Oak Tree Road, Iselin, NJ 08830
Ph.: 732-283-1200 / 732-283-3600
www.suhagjewelers.com
sk@suhagjewelers.com

HOME EQUITY LINE OF CREDIT

One Low Rate For All

3.25% APR* (FLOOR)

PRIME - 0.25%

NO APPLICATION FEE | NO ORIGINATION FEE

NO ANNUAL FEE | NO AUTO DEBIT REQUIRED

BRANCHES IN NEW JERSEY & NEW YORK

EDISON
1630 Oak Tree Road
Edison, NJ 08820
Tel: 732-603-8200

PARSIPPANY
1452 Rt 46 West
Parsippany, NJ 07054
Tel: 973-402-2467

JERSEY CITY
781 Newark Ave.
Jersey City, NJ 07306
Tel: 201-427-1100

HICKSVILLE
70 Broadway
Hicksville, NY 11801
Tel: 516-822-8001

PLAINSBORO
10 Schalks Crossing Rd,
Plainsboro, NJ 08536
Tel: 609-806-3100

WWW.INDUSAMERICANBANK.COM

Indus American Bank
Let us grow together

*ANNUAL PERCENTAGE RATE (APR) IS VARIABLE BASED ON THE WALL STREET JOURNAL PRIME MINUS 0.25% WITH A FLOOR RATE OF 3.25% AND WILL NOT EXCEED 16.00%. PRIME AS OF 1/27/2016 WAS 3.50%. AVAILABLE ON OWNER OCCUPIED PROPERTIES IN NJ AND NY. OTHER TERMS AND CONDITIONS AND FEES MAY APPLY. ASK US FOR DETAILS.

EQUAL HOUSING LENDER
Member FDIC

MKT (012016-004)